त्रिवेणी
अध्यात्म-संस्कृति-साहित्य का संगम
त्रिवेणी स्मारिका २००६
मिरजापुर उ० प्र०

"परम पुनीत त्रिवेणी मूला।
हरत सकल भव बारिधि शूला।।"
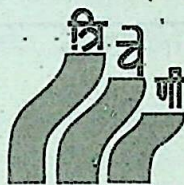
अध्यात्म-संस्कृति-साहित्य का संगम

त्रिवेणी : निर्मल धारा चतुर्थ : २००६ : सदस्यों हेतु

संस्थापित
11 जून 1995

संस्थापक सदस्य:

किशन बुधिया
शम्भू नाथ अग्रवाल
स्व० नटवर नाथ अग्रवाल
पं० उमाकान्त मिश्र
दया शंकर पाठक
कैलाश नाथ खण्डेलवाल
मोहन लाल आर्य
डा० चन्द्र भूषण पाण्डेय
ओम प्रकाश सिंहानिया
श्रीमती शकुन्तला बुधिया
श्रीमती आशा अग्रवाल

सोसाइटीज पंजीकरण
सं0 498/98

संस्थापक संयोजक
किशन बुधिया

सह संयोजक
गुलाब चन्द तिवारी

कोषाध्यक्ष
मोहन लाल आर्य

सम्पादक मण्डल :

किशन बुधिया
मोहन लाल आर्य
राजेश्वर लाल श्रीवास्तव
गुलाब चन्द तिवारी

कार्यालय :

किशन बुधिया, 878 बूढ़ेनाथ मार्ग, मिरजापुर - 231001

दूरभाष : 05442-221879, 221355 फैक्स : 221354 ई-मेल : budhiamzp@satyam.net.in

बैठक : मास के द्वितीय एवं चतुर्थ रविवार को सन्ध्या 5-6 बजे
स्थान : लायन्स स्कूल लाइब्रेरी कक्ष, मिरजापुर दूरभाष : 220603

मुख्य पृष्ठ का चित्र परिचय :- मिरजापुर के प्रागैतिहासिक जीवन को अपने अंक में संजोए, आकाश के असीम विस्तार तथा त्रिवेणी की निर्मल धारा से पवित्रता-निश्छलता का एहसास कराते, विन्ध्य पर्वत शृंखला, अपने पाँच मानवीय चेहरों से जीवन्तता का बोध कराती एवं सूर्य की लालिमा, ऊष्मा व ऊर्जा के प्रति श्रद्धानवत चित्रकार विनोद कुमार सिंह की परिकल्पना।

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण /रचनाकार	पेज सं0
1.	त्रिवेणी ईश वन्दना	1
2.	त्रिवेणी सदस्य सूची	2
3.	त्रिवेणी क्रिया–कलाप	5
4.	मानस/कजली सम्मान	8
5.	कजली अंग्रेजी में – प्रो0 डी0 एस0 पाठक	9
6.	कजली अंग्रेजी में – शिवरतन रामरंग	10
7.	शास्त्रीय रागों पर आधारित फिल्मी गीत	11
8.	त्रिवेणी जन्म कथा – शम्भू नाथ अग्रवाल	12
9.	शुभकामना श्री राजनाथ सिंह	13
10.	शुभकामना प्रो0 पंजाब सिंह	14
11.	शुभकामना न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त	15
12.	शुभकामना पद्मभूषण डा0 लक्ष्मीमल्ल सिंघवी	16
13.	शुभकामना श्री आर0 के कासलीवाल	17
14.	शुभकामना श्री वी0 आर0 शर्मा	18
15.	शुभकामना लायन मुकुन्द लाल टण्डन	19
16.	शुभकामना श्री कैलाश चौरसिया	20
17.	शुभकामना श्रीमती प्रभावती यादव	21
18.	शुभकामना श्री दीप चन्द्र जैन	22
19.	शुभकामना श्री उमेश कुमार मित्तल	23
20.	आत्म निवेदन! – किशन बुधिया	24
21.	सभ्यता का तकाजा – स्व0 प्रताप विद्यालंकार	26
22.	गजल – स्व0 सैय्यद हुरमतुल इकराम	27
23.	पसन्दीदा कलाम – स्व0 अनवर मिर्जापुरी	28
24.	गीत – डा0 परमानंद श्रीवास्तव	29
25.	गजल – डा0 शहरयार	30
26.	दो गीत – केसरी कुमार	31
27.	कुछ गुलाबी गीत – गुलाब सिंह	32
28.	गजल/गीत – मुनीर बख्श 'आलम'	33
29.	Wake Up My Boy – प्रो0 दया शंकर पाठक	34
30.	यहाँ भी घास है – रमेश चन्द्र द्विवेदी	35
31.	अपनी मिट्टी की गंध – श्रीमती रेनू शर्मा	38
32.	मीरजापुर साहित्य – डा0 भवदेव पाण्डेय	39
33.	प्रकृति का चितेरा – श्रीमती नन्दिता सिंह	42
34.	माता अमृतानन्दमयी – मोहन लाल आर्य	44
35.	ज्ञान गंगा का स्तम्भ – लायन राजेश अग्रवाल	47
36.	सृजनधर्मी डा0 के.पी. जायसवाल–बृजदेव पाण्डेय	49
37.	कजरी मिर्जापुर – डा0 अर्जुन दास केसरी	53
38.	मानस में स्वार्थ – डा0 वेदपति मिश्र	58
39.	विनय पत्रिका के राम – डा0 अनुज प्रताप सिंह	61
40.	प्रेम ही ईश्वर है – पं0 उमाकान्त मिश्र	63
41.	जीवन क्या है – पं0 उमाकान्त मिश्र	64
42.	रावण महान – रविन्द्र कुमार पाण्डेय	65
43.	प्लूटो–एक अपदस्थ ग्रह–डा0 के.एन. त्रिपाठी	72
44.	वन्दे मातरम् – अमानुल्ला अंसारी	73
45.	सूचना का अधिकार – डा0 राम शरण सेठ	74
46.	मानव के अदृष्य शत्रु – गुलाब चन्द्र तिवारी	75
47.	श्रद्धाजंलि (स्व0 बलिराज सिंह)	78
48.	कथनी करनी में अन्तर – रमा शंकर द्विवेदी	79
49.	स्व0 नटवर नाथ अग्रवाल–क.का. अग्रवाल	81
50.	धर्म ढकोसला नहीं – श्रीमती सुषमा अग्रवाल	82
51.	रोम–रोम में रची – श्रीमती शकुन्तला बुधिया	84
52.	वास्तु विषय – डा0 राम लाल त्रिपाठी	85
53.	गीत – स्व0 कृष्ण लाल गुप्त 'अन्वेषी'	86
54.	समय का सदुपयोग – शशि कान्त मिश्र	87
55.	तुम्हारी याद – राम कृष्ण गुप्त	87
56.	कविता – ओम धीरज	88
57.	कविता – भवेश चंद्र जायसवाल	89
58.	मुहब्बत–मुहब्बत लिखों – गणेश गम्भीर	90
59.	गजल – जफर मिर्जापुरी	91
60.	गजल – रमेश चन्द्र द्विवेदी	92
61.	कविता – प्रभु नारायण श्रीवास्तव	93
62.	गजल – डा0 शाद मश्रिकी	94
63.	गजल – श्रीमती विनय गुप्ता	95
64.	कजली – लल्लन मालवीय	95
65.	गीत – सुरेश चन्द्र वर्मा 'विनीत'	96
66.	देश की हालत – अरविन्द अवस्थी	96
67.	कविताएं – केदार नाथ 'सविता'	97
68.	प्रार्थना – श्रीमती सत्या शर्मा	98
69.	एक प्रतिक्रिया – ओम धीरज	98
70.	जिन्दगी – लालब्रत सिंह 'सुगम' मिर्जापुरी	99
71.	कविता – कैलाश नाथ खण्डेलवाल	100
72.	आँखें – डा0 आर0 सी0 दुआ	101
73.	सावन–भादों–झूले–कजली – किशन बुधिया	102

विज्ञापनदाता सूची

त्रिवेणी ईश वन्दना

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिम्, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं, तत्वम् अस्य अविलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधी साक्षि भूतम्, भावातीतं त्रिगुणरहितं, सद्गुरूं तं नमामि ।।

''गुरू गीता''

अनुवाद : ब्रह्मानन्द स्वरूप, परम सुखप्रद, एकमात्र ज्ञान-स्वरूप, सुख-दुख आदि द्वन्द्वों से परे, आकाश के सदृश विशाल एवं महावाक्य के लक्ष्यार्थ, एक नित्य, विमल, अचल, सबकी बुद्धि के साक्षी-स्वरूप, सभी भावों से परे और सत्व-रज-तम तीनों गुणों से परे, ऐसे ब्रह्म-स्वरूप भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव।।

''लक्ष्मी नारायण हृदयं''

अनुवाद : तुम्हीं मेरी माता हो, तुम्हीं पिता हो, तुम्हीं मेरे बन्धु हो, तुम्हीं मेरे सखा हो । तुम्हीं विद्या हो, तुम्हीं धन हो । तुम्हीं मेरे सब कुछ हो ।

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं ना पुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानां, प्राणिनाम् आर्ति नाशनम्।।

''भागवत्''

अनुवाद : मुझे राज्य पाने की कामना नहीं, स्वर्ग नहीं चाहिए और मोक्ष की भी कामना नहीं । इच्छा है तो बस यह कि बार-बार धरती पर आकर दुख में जल रहे प्राणिमात्र का कष्ट दूर करता रहूँ ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्।।

''ईशावास्योपनिषद्''

अनुवाद : सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों, सभी कल्याणद्रष्टा हों, कोई दुखी न हो ।

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्, भर्गो देवस्य धीमहि धियो, योनः प्रचोदयात्।।

''ऋग्वेद''

अनुवाद : हे प्राणस्वरूप, दुखहर्ता, सर्वव्यापक आनन्द को देने वाले प्रभु ! जो आप सर्वस्व और सकल जग के उत्पादक हैं, हम आपके पूज्यनीय, पापनाशक तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धि को प्रकाशित करता हैं । हे प्रभु ! आपसे हमारी बुद्धि कभी विमुख न हो, आप हमारी बुद्धि में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धि को सत्कर्मों में प्रेरित करें, यही हमारी प्रार्थना है ।

समापन शांति पाठ

ऊँ द्यौः शान्तिः, अन्तरिक्ष ग्वं शान्तिः, पृथ्वी शान्तिः, आपः शान्तिः, औषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिः, विश्वेदेवाः शान्तिः, ब्रह्म शान्तिः, सर्वे शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।।

''यजुर्वेद''

ऊँ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

अनुवाद : ऊँ आकाश शान्त हो, अन्तरिक्ष शान्त हो, पृथ्वी शान्त हो, जल शान्त हो, औषधियाँ शान्त हों । वनस्पतियाँ शान्त हों, समस्त देव शान्त, ब्रह्म शान्त हो, सब कुछ शान्त हो, शान्ति की भी शान्ति हो, यह सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक शान्ति मुझे प्राप्त हो ।

ऊँ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

त्रिवेणी सदस्यों की सूची एवं परिचय

31.12.2006

क्र0	नाम सदस्य सर्वश्री/श्रीमती	व्यवसाय/पदस्थिति	पता मीरजापुर	दूरभाष	
				का0	निवास
*1.	किशन बुधिया (संस्थापक संयोजक)	मि0 नेत्र बैंक/जिला विधिक से0प्रा0 सदस्य/निर्यातक वितरक (चन्दन कार्पेट, शकुन एजे0, गंगा दर्शन)	878 बूढ़ेनाथ	221355 9935574800	221879
*2.	शकुन्तला बुधिया	गृहणी	878 बूढ़ेनाथ		325511 221879
3.	प्यारे लाल अग्रवाल	वरिष्ठ अधिवक्ता (फौजदारी)	पुरानी अंजही	9415206350	221808
4.	श.कुन्तला अग्रवाल	गृहणी	पुरानी अंजही		221808
5.	डा0 गणेश प्र0 अवस्थी	होमियो. चिकित्साधिकारी	भैरोनाथ गली धुन्धीकटरा	9415689993	222808
6.	के0 डी0 सिंह	प्रवक्ता जी0डी0बी0 कालेज	बिनानी कालेज	9918037158	
7.	संगम लाल अग्रवाल	पूर्व लायन्स मण्डलाध्यक्ष/ स्वास्तीक यार्न डायर्स	बूढ़ेनाथ	220661 9415206258	223638
8.	हरिओम भार्गव	चश्मा व्यवसाय	त्रिमुहानी	9235913082	9235923710
9.	सत्या शर्मा	होमियोचिकित्सक/गृहणी (आकाश कालीन)	रुखड़घाट	221193	220393
10.	राजदत्त	कालीन निर्यातक/कैलास मानसरोवर यात्री	रुखड़घाट	221703	9335737560
11.	आदर्श दत्त	गृहणी (अधिराज एक्सपोर्ट)	रुखड़घाट	221703	9839729245
12.	चन्द्र कुमार कोठारी	कालीन निर्यातक/रचिन एक्सपोर्ट	शिवाला महन्थ	(955414) 243653	9415205902 221631
13.	चन्द्र प्रकाश गुप्ता	कालीन निर्यातक/समाज सेवी (ए0 बी0 सी0 कारपेट)	लोहिया तालाब	245700 9415206009	242532
14.	सालिक राम मौर्य	कालीन निर्माता/गायत्री परिवार आदर्श ग्राम सेवा : संकल्प	लोहिया तालाब	242742 9236458824	
15.	कृष्ण कुमार मिश्र	जि0 वि0 निरीक्षक (अ0 प्रा0) मुख्य आयुक्त स्काउट	विन्ध्याचल, पकरीतर	9919620680	242767
16.	विजय शंकर बनरवाल	कालीन निर्यातक/सीमेन्ट व्यापार विजय कार्पेट मैन्यूफैक्चरर्स	जंगी रोड	245952 9415323105	245953
*17.	शम्भू नाथ अग्रवाल	अध्यक्ष चेम्बर आफ कामर्स श्री मार्वल्स/संगमरमर व्यापार	मुसफ्फरगंज (का0)	265468	325278.
*18.	आशा अग्रवाल	गृहणी	तरुछाया तिवरानीटोला	–	325278
19.	केदार नाथ सविता	बैंक अधिकारी/कवि	सिंहगढ़ कालोनी लालडिग्गी	9935685068	222389 9415632736
*20.	दया शंकर पाठक	से0 नि0 प्रवक्ता/मानस के अंग्रेजी अनुवादक/कवि	टीचर्स कालोनी विद्यासागर मार्ग	9415622033	220035

21.	राजेश्वर लाल श्रीवास्तव	से. नि. प्राचार्य (राजस्थान इ0का0)	टीचर्स कालोनी	223576	223576
22.	रामकृष्ण गुप्त	अ0 प्रा0 जीवन बीमा अधिकारी	विद्यासागर मार्ग	223508	223508
23.	विश्वेश्वर नाथ अग्रवाल	अ0 प्रा0 प्रवक्ता (राजनीति) के0 बी0 पी0 जी0 का0	मुसफ्फरगंज	9415258463	220470
24.	कैलाश नाथ खेतान	कालीन निर्यातक अध्यक्ष रामकृष्ण सेवा आश्रम	मुसफ्फरगंज	221780 9415206727	223780
25.	कमला कान्त अग्रवाल	दरी व्यवसाय	मुसफ्फरगंज	221254 9235894000	221254
26.	प्रभु नारायन श्रीवास्तव	से0 नि0 अंग्रेजी विभागाध्यक्ष कवि (अनाज का दाना चुप है)	गैबीघाट	9451944744	329478
*27.	ओम प्रकाश सिंहानिया	कालीन निर्यातक, समाज सेवी गनेशी लाल राम किशन	नवीन चित्र मंदिर के पीछे	221312 222581	221409
28.	सीता सिंहानिया	गृहणी	,,		221409
*29.	कैलाश नाथ खण्डेलवाल	वरिष्ठ कर अधिवक्ता पूर्व रोटरी मण्डलाध्यक्ष	गोलघर, लालडिग्गी	220390 9336736830	220390
30.	भगवती प्रसाद चौधरी	पूर्व विधायक पूर्व अध्यक्ष जिलापरिषद/उ.प्र.सपा महासचिव	सवरी रोड	220373 9415205644	220682
*31.	पं0 उमाकान्त मिश्र	पूर्व सांसद (कांग्रेस) कवि विद्वान	इमरती रोड	220605	220605
32.	शकुन्तला रानी अग्रवाल	पेट्रोल पम्प/समाजसेवी * (स्व0 नटवर नाथ अग्रवाल की पत्नी)	इमरती रोड	220858	220818
33.	आनन्द कुमार जैन	कालीन निर्यातक/बैंकर्स	कटरा बाजीराव	220307	221207
34.	कृष्ण कुमार गुप्त (मुन्नू बाबू)	शारदा फाउण्ड्री एण्ड इंजी. वर्क्स	कटरा बाजीराव	220093	220093
35.	लालजी पुरवार	ऊनी धागा व्यापार	कटरा बाजीराव	221352 9415674974	221352
36.	चमन लाल जैन	वरिष्ठ अधिवक्ता (सिविल) शिक्षण संस्थाओं से सन्नद्ध	नई सड़क रतनगंज	220314 9415231277	220314
*37.	मोहन लाल आर्य (कोषाध्यक्ष)	से0 नि0 प्राचार्य (बी.एल.जे.कालेज) समाज सेवी	विशालपुरी कालोनी (तरकापुर)	9935391839	253338
38.	डा0 के0 एन0 त्रिपाठी	से0 नि0 गणित विभागाध्यक्ष (के.बी.पी.जी. कालेज)	विशालपुरी कालोनी (तरकापुर)	9336690211	253220
39.	मंगल प्रसाद पाठक	से0 नि0 उपसचिव शिक्षा मा0 प0, नाइजीरिया में 6 वर्ष कार्यरत शिक्षा अधिकारी	तहसील आफिसर्स कालोनी		265009
40.	बाँके बिहारी लाल श्रीवास्तव	से0 नि0 स0 आयुक्त व्यापारकर	विन्ध्यवासिनी कालोनी तहसील रोड		223715
41.	रमा शंकर द्विवेदी	शिक्षण/गायत्री परिवार कार्यकर्त्ता	गायत्री ज्ञान मन्दिर अकसौली	9415679182	
42.	अमर नाथ अग्रवाल	स्टार कार्पेट्स	कोटघाट कालोनी	222651 9335731827	222382

*43.	डा0 चन्द्रभूषण पाण्डेय	से0 नि0 प्राचार्य (जी.डी.बी.सी.) कवि–उपन्यासकार	कोटघाट कालोनी	–	265256
44.	कैलाश नाथ अग्रवाल	व्यापार	अग्रवाल निवास तिवरानी टोला	257424 9415876134	329457
45.	सुषमा अग्रवाल	गृहणी	,,	,,	,,
46.	डा0 रमेश चन्द्र दुआ	वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक	गा0श0म0प्र0 नेत्र चिकित्सालय, लोहंदी	245200 9415263079	245693
47.	डा0 भावना दुआ	,,	,, ,,	,,	,,
48.	विश्वनाथ टण्डन	प्रमुख वस्त्र व्यवसायी (विश्वम्भर नाथ विश्वनाथ)	खजान्ची चौराहा	252749 9415206342	252963
49.	बन्शी लाल गुप्ता	दवा व्यवसाय (गुप्ता मेडिकल स्टोर)	संकट मोचन मार्ग	252237	252105
50.	विनय गुप्ता	गृहणी/कवियित्री	रमई पट्टी		252105
51.	निर्भय कुमार अग्रवाल	टाइप–कम्प्यूटर प्रशिक्षण (कृष्णा टाइप विद्यालय)	डंकीनगंज	220046 9415205998	220046
52.	शिव रतन गुप्ता 'रामरंग'	मानस गायन (लिम्का बुक)धर्मिक पुस्तकों का अंग्रेजी अनुवाद–प्रकाशन, फोटो ग्राफी	चिनिहवा इनारा	220784 9935837750	220784
53.	गुलाब चन्द्र तिवारी (सह संयोजक)	अ0 प्रा0 प्रवक्ता, बसन्त विद्यालय इण्टर कालेज (रसायन)	560/8 बदली कटरा (डंकीनगंज)	9415233627	221555
54.	राजेन्द्र प्रसाद सिंह	अधिकारी, भा. खाद्य निगम एक्यूप्रेसर विशेषज्ञ	बदली कटरा	9335448514	
55.	उर्मिला श्रीवास्तव	सुप्रसिद्ध कजली गायिका/शत्रुघनसिन्हा द्वारा भिखारी ठाकुर सम्मान प्रवक्ता संगीत (आर्यकन्या)	गफूर खाँ गली वासलीगंज	9335085905	252541
56.	रामजी सिंह गौतम	वरिष्ठ अधिवक्ता/विभिन्न संस्थाओं से सन्नद्ध	ब्रह्मचारी कुआं (पुलिस लाइन्स)	252618	252618
57.	वैद्य नाथन	से0नि0 प्रबन्धक (ओवीटी)	स्वामी दयानन्द मार्ग	9839058114	256008
58.	कैलाश नाथ माली	से.नि.सहायक शिक्षा निदेशक उ.प्र.	लोहंदी कलां	–	245626
59.	डा0 राम शरण सेठ	होमियो चिकित्सक, पूर्व समासद	गनेशगंज	9415376261	9935985458 221603
60.	एस0 पी0 शर्मा	पाइप–फिटिंग–पम्प विक्रेता भारत ट्रेडिंग कम्पनी	बथुआ रोड लोहंदी कलां	245810 9415235112	256156
61.	लालव्रत सिंह 'सुगम'	से0नि0 उपाचार्य बसन्त विद्यालय इण्टर कालेज, हास्य–व्यंग कवि	शिवपुरी कालोनी स्टेशन रोड	–	265686
62.	शशिकान्त मिश्रा	कैलाश हैण्डलूम व्यवसायी प्रबन्धक जयदीप पब्लिक स्कूल	शिवपुरी कालोनी स्टेशन रोड	329693 –	265389 9450319609
63.	कैलाश नाथ तिवारी	व्यापार	रिफ्युजी कालोनी पथरहिया	9415251268	
64.	गणेश लाल विश्वकर्मा	प्रवक्ता अर्थशास्त्र ब0वि0 इ0 का0	आवास विकास का0	–	265648
65.	अमानुल्ला अंसारी	अधिवक्ता (सिविल), समाज सेवी	रघुनाथगली गनेशगंज	9415679936	220799
66.	डा0 सच्चिदानन्द तिवारी	हिन्दी विभागाध्यक्ष जी.डी.पी.जी.कालेज	पुरानी दशमी	9935105165	221135

"रहिमन यों सुख होत हैं, बढ़ति देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अंखियां निरखि, अंखिन को सुख होत।।"

* संस्थापक सदस्य से./नि. = सेवा निवृत अ0 प्रा0 = अवकाश प्राप्त का0/सी0 = कालेज

त्रिवेणी के प्रमुख क्रिया कलाप : संक्षिप्त विवरण

क्र0	दिनांक	मुख्य वक्ता/अतिथि	वार्ता प्रसंग/विषय	सभा अध्यक्ष/मुख्य अतिथि
1.	12.7.1999	श्री ठाकुर राम सिंह	भारतीय काल–गणना	श्री श्याम मोहन मिश्र
2.	28.8.1999	श्री मनोज कुमार मण्डलायुक्त	कजली मेला	श्री किशन बुधिया
3.	27.2.2000	श्री गोपी नाथ (एडवोकेट)	सुख एवं दुःख	श्री मंगला प्रसाद पाठक
4.	16.7.2000	डा0 आर.पी.पाण्डेय कवि/सी0डी0ओ0	श्री राम प्रसाद गुप्त के काव्य संग्रह 'चल–चित्र का विमोचन एवं काव्य गोष्ठी	श्री एस.वी. वैश्य, जनपद न्यायाधीश
5.	16.8.2000	श्री जे.पी. विश्वकर्मा मण्डलायुक्त	कजली महोत्सव	श्री किशन बुधिया
6.	3.9.2000	डा0 राम लाल त्रिपाठी	रुद्राभिषेक एवं वेदपाठ	डा0 कमला शंकर पाण्डेय
7.	10.9.2000	पं0 जीवन दर	जीवन– ज्योतिष–रत्न	श्री प्यारे लाल अग्रवाल
8.	5.10.2000	श्री राधेश्याम खेमका (सम्पादक कल्याण)	मानव जीवन की सार्थकता	प्रो0 दया शंकर पाठक
9.	28.10.2000	श्री एस.के. शर्मा (डी.आई.जी.)	'मन के मंजीरे' विमोचन	सुश्री मल्लिका दत्त (यू0 एस0 ए0)
10.	27.5.2001	डा0 परमानन्द श्रीवास्तव	कविता एवं समाज	डा0 भवदेव पाण्डेय
11.	22.7.2001	प्रतिष्ठित कविगण	पावस काव्य गोष्ठी	डा0 के0 एन0 त्रिपाठी
12.	5.8.2001	श्री गुर दर्शन सिंह (डी. आई. जी.)	कजली महोत्सव	श्री किशन बुधिया
13.	6.1.2002	उपवन गोष्ठी एवं घरेलू नूसखे का विमोचन	शास्त्रीय संगीत गायन	डा0 भवदेव पाण्डेय
14.	6.4.2002	श्री अनिल विशाल सिंह एवं थ्रेस कपूर (लखनऊ)	हिमालय छायाचित्र प्रदर्शनी	श्री अमित मोहन प्रसाद (जिलाधिकारी)
15.	9.6.2002	डा0 रवि शंकर पाण्डेय (ए0 डी0 एम0) कवि	काव्यगोष्ठी	पं0 उमाकान्त मिश्र
16.	30.6.2002	चि. शोभित दत्त (6 वर्षीय)	शिव ताण्डव श्लोक पाठ	डा0 सरजीत सिंह डंग
17.	24.8.2002	पं0 किशन महराज (पद्म विभूषण)	कजली महोत्सव	श्री किशन बुधिया
18.	5.1.2003	श्री महाबीर प्रसाद चटर्जी	गीत संगीत उपवन गोष्ठी	श्री किशन बुधिया
19.	30.6.2003	डा0 परमानन्द श्रीवास्तव	सूरदास का रसवर्णन	डा0 भवदेव पाण्डेय

20.	14.8.2003	श्री रामचन्द्र यादव (उप पुलिस अधीक्षक)	कजली मेला	श्री किशन बुधिया
21.	24.8.2003	श्री आर. के. मित्तल (आई. ए. एस.)	जीवन का आध्यात्मिक पक्ष	डा0 सरजीत सिंह डंग
22.	2.10.2003	गान्धी जयंती	काव्यगोष्ठी	पं0 उमाकान्त मिश्र
23.	25.1.2004	स्वामी एकनाम देव	अमृतवाणी धर्म सन्देश	श्रीमती आदर्श दत्ता
24.	27.3.2004	पं0 शान्ता राम विष्णु कशालकर (गायन)	प्रथम गुलाब उत्सव चैती/होली/ठुमरी/दादरा	श्री किशन बुधिया
25.	30.6.2004	श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव श्री राघवेन्द्र सिंह (जादू) (वार्षिक सभा)	सांस्कृतिक संध्या कजली गायन एवं जादू प्रदर्शन	श्री किशन बुधिया
26.	11.7.2004	डा0 वेणु गोपाल झंवर (वाराणसी)	मनोरोग कारण एवं चिकित्सा	डा0 एन0 सी0 ऐरन
27.	25.7.2004	श्री प्रभु नारायण श्रीवास्तव	'अनाज का दाना चुप है' विमोचन	पं0 उमाकान्त मिश्र
28.	31.8.2004	श्री प्रमोद कुमार (पुलिस अधीक्षक)	कजली महोत्सव	श्री किशन बुधिया
29.	12.9.2004	श्री हिमांशु द्विवेदी	मन चंचल नहीं है	डा0 चन्द्र भूषण पाण्डेय
30.	28.11.2004	श्री बृजदेव पाण्डेय	डा0 काशी प्रसाद जाय0 व्यक्तित्व एवं कृतित्व	प्रो0 दया शंकर पाठक
31.	9.1.2005	पं0 चन्द्रमौलि वैद्य	आयुर्वेद पतन–उत्थान	श्री लालब्रत सिंह
32.	13.2.2005	कविगण	काव्य – गोष्ठी	श्री गोपाल दास चुनाहे
33.	27.2.2005	श्री राजेश्वर लाल श्री0	बच्चन का हालावाद	डा0 के0 एन0 त्रिपाठी
34.	13.3.2005	डा0 मन मोहन सिंह	हमारे संस्कार एवं कर्मकाण्ड	श्री शम्भू नाथ अग्रवाल
35.	27.3.2005	माहेश्वरी समाज/ पं0 देव शंकर द्विवेदी (कोलकाता)	राजस्थानी गीत संगीत (होली महोत्सव)	श्री ओम प्रकाश सिहांनिया
36.	24.4.2005	गुलाब उत्सव (द्वितीय)	चैती/होली/ठुमरी/दादरा	श्री महेश्वर पति त्रिपाठी
37.	15.5.2005	श्री पी0 सी0 तिवारी (सिटी मजिस्ट्रेट)	सामाजिक विसंगतियाँ एवं हमारे कर्त्तव्य	श्री कैलाश नाथ खण्डेलवाल
38.	29.5.2005	श्री राजेन्द्र सिंह एडवोकेट	गुरुग्रन्थ साहेब	श्री ओम प्रकाश सिहांनिया
39.	12.6.2005	ताम्र जयन्ती उत्सव	भजन गीत गजल सन्ध्या	श्री राजेश श्रीवास्तव
40.	26.6.2005	श्री उमाकान्त मिश्र	मानुष पंथ, विमोचन	श्री किशन बुधिया
41.	24.7.2005	डा0 अनिल तिवारी (वाराणसी)	चिकित्सा विज्ञान एवं वासुरी वादन	डा0 चन्द्र भूषण पाण्डेय

42.	21.8.2005	डा0 आर0 पी0 शास्त्री (वाराणसी)	कजली मेला	श्री किशन बुधिया
43.	11.9.2005	श्री सुशील कुमार यादव (अग्नि शमन सेवा)	अग्नि से सुरक्षा	श्री मोहन लाल आर्या
44.	9.10.2005	श्री वकील अहमद	धर्म एवं साहित्य	डा0 आर0 पी0 सिंह
45.	13.11.2005	त्रिवेणी सदस्य	निराला का साहित्यिक संसार (गोष्ठी)	श्री प्रभु नारायण श्रीवास्तव
46.	27.11.2005	स्थानीय कविगण	काव्य गोष्ठी	डा0 क्षमा शंकर पाण्डेय
47.	11.12.2005	श्री रमेन्द्र कुमार शुक्ला (शासकीय अधिवक्ता)	समाज न्याय व अविस्मरणीय मुकदमें	श्री शशिकान्त मिश्र
48.	8.12.2006	पं0 माहेश्वर पति त्रिपाठी	संगीत, नृत्य, प्रकृति एवं विज्ञान	पं0 दुर्गा शंकर द्विवेदी
49.	29.1.2006	वेद पं0 सुधाकर त्रिपाठी	वेदपाठ एवं प्रवचन	पं0 उमाकान्त मिश्र
50.	12.2.2006	श्री राजेश्वरी प्रसाद मिश्र (अध्यक्ष भा0 मजदूर संघ)	सामाजिक सुरक्षा	डा0 के0 एन0 त्रिपाठी
51.	19.3.2006	स्वामी ललित मोहन सिंह डी0आई0जी0 (से0नि0)	जीवन में धर्म का महत्व	श्री यस0 पी0 शर्मा
52.	11.8.2006	कलाकारों द्वारा कजली गायन	कजली मेला	श्री ओम धीरज (उप जिलाधिकारी)
53.	19.8.2006	श्री अर्जुन सिंह (मानव संसाधन मंत्री) प्रो0 पंजाब सिंह कुलपति बी.एच.यू.	राजीव गान्धी साउथ कैम्पस बी.एच.यू. बरकछा उद्घाटन समारोह	श्री किशन बुधिया त्रिवेणी संयोजक द्वारा मान पत्र उत्तरीय एवं नगर विकास मांग पत्र
54.	20.8.2006	श्री कैलाश पति त्रिपाठी (वरिष्ठ पत्रकार)	सूचना का अधिकार	श्री भगवती प्रसाद चौधरी
55.	10.9.2006	श्री सुरेश चन्द्र त्रिपाठी	ग्रह, नक्षत्र, कुण्डली	श्री राम जी सिंह गौतम
56.	8.10.2006	डा0 सुनील कुमार शाह	नेत्र शिविर एवं नेत्रदान	लायन्स क्लब मीरजापुर
57.	5.11.2006	डा0 सच्चिदानन्द तिवारी	भगवान श्रीराम	श्री के0 यन0 माली
58.	26.11.2006	श्री गुलाब चन्द तिवारी	वार्ता चिकनगुनिया	डा0 श्रीमती सत्या शर्मा
59.	10.12.2006	डा0 वेदपति मिश्रा अपर जिलाधिकरी	श्री गुलाब लाल श्रीवास्तव की 3 पुस्तकों का विमोचन	श्री दीपचन्द्र जैन, अध्यक्ष नगर पालिका
60.	24.12.2006	डा0 राम लाल त्रिपाठी	इण्डोनेसिया/मलेसिया यात्रा वृतान्त–उन देशों पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव	श्री प्यारे लाल अग्रवाल

"हर मोड़ पर मिल जाते हैं हम दर्द हजारों।
शायद तेरी बस्ती में अदाकार बहुत हैं।।"

तुलसी मानस सम्मान से अलंकृत

श्री पं० हरनाथ शर्मा वैद्य : कवि, संस्थापक–अध्यक्ष मानस प्रचार समिति, मिरजापुर
श्री पं० पारस नाथ द्विवेदी : रामकथा शिरोमणि, से०नि० प्रवक्ता रसायन विज्ञान
श्री पं० शिवनाथ वाजपेयी : मानस मर्मज्ञ, से०नि० प्रशासनिक अधिकारी, कानपुर
श्री जमीर अहमद : कवि–विद्वान, मानस का उर्दू भाषा में अनुवाद, इलाहाबाद

त्रिवेणी कजली महोत्सव में सम्मानित

श्रेष्ठ विद्वान-प्रतिष्ठित कजली कलाकार-विशिष्ठ संगतकार

वर्ष	सम्मानित श्रेष्ठ कलाकार/प्रतिष्ठित विद्वान	सम्मानित विशिष्ठ संगतकार
1995	श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव डा0 भवदेव पाण्डेय (प्रतिष्ठित लोकगीत विशेषज्ञ एवं साहित्यकार)	
1996	श्रीमती अजीता श्रीवास्तव	
1997	श्रीमती मैना देवी	(विराट महिला कजली प्रतियोगिता)
1998	श्री सनाउल्लाह वारिसी	
1999	श्री लल्लन मालवीय (कवि/गायक)	
2000	श्रीमती कान्ती पाण्डेय कु0 महुआ बनर्जी (वाराणसी)	श्री महावीर चटर्जी (संगीतज्ञ) श्री मल्लू राम (शहनाई) श्री विश्वनाथ (क्लोरोनेट) श्री गिरजाशंकर सविता (तबला/हारमोनियम)
2001	श्री खोखा मिर्जापुरी	श्री मोहम्मद हकीम (तबला)
2002	सुश्री रानी सिंह श्री अरविन्द पाण्डेय, आई.पी.एस. (विन्ध्याचल–पटना)	उस्ताद कल्लू खाँ (हारमोनियम)
2003	डा0 अर्जुन दास केसरी (सोनभद्र) कु0 उषा गुप्ता प्रतिष्ठित विद्वान एवं लेखक	
2004	श्री निसार अहमद खाँ (सुद्दल) कु0 रागिनी चन्द्रा (पौत्री स्व0 मैना देवी)	
2005	श्री मोहन लाल कांस्यकार श्रीमती गायत्री देवी	
2006	श्री अमर नाथ शुक्ला कु0 सूफिया बेगम	

"धूप हवा बादल नदी, सबके भीतर आग
सबको जीवन दे रहा, एक तुम्हारा राग" यश मालवीय

त्रिवेणी के मंच से भारत के इतिहास में पहली बार
अंग्रेजी भाषा में कजली गायन – 2005 व 2006

परिकल्पना : किशन बुधिया, त्रिवेणी संयोजक

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव
भारत प्रसिद्ध कजली गायिका
त्रिवेणी सदस्य

1. शीर्षक गीत : कवन रंग मुंगवा, कवन रंग मोतिया ? अंग्रेजी रुपान्तर

रचना : पारंपरिक (ढुलमुनिया)
अंग्रेजी अनुवाद – रुपांतर : प्रो0 दयाशंकर पाठक (त्रिवेणी सदस्य)
निर्देशक : श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव (त्रिवेणी सदस्य) / श्री शिवरतन गुप्त ''रामरंग''
गायन : कु0 स्वाती गुप्ता

कवन रंग मुंगवा, कवन रंग मोतिया, कवन रंग ननदी रे तोर बिरना
What colour coral?
And what colour pearl?
And what colour your brother, tell me dear Nanadi?
लाल रंग मुंगवा, पियर रंग मोतिया, साँवर रंग ननदी रे तोर बिरना
Red colour coral.
And yellow colour pearl.
And sky colour your brother, tell me dear Nanadi.
कहाँ सोहै मुंगवा, कहाँ सोहै मोतिया, कहाँ सोहै ननदी रे तोर बिरना
What adorns coral?
And what adorns pearl?
And what does your brother adorn Nanadi?
नाकै सोहै मुंगवा, गले सोहै मोतिया, सेजरिया सोहै ननदी रे तोर बिरना
Nose adorns coral.
And neck adorns pearl.
And your brother adorns my bed Nanadi.
टूटी जैहे मुंगवा, छिटकि जैहे मोतिया, बिछुड़ि जैहे ननदी रे तोर बिरना
The coral will break.
And the pearl will crack
And your brother will be fully isolated Nanadi.
बीनि लै बै मुंगवा, बटोरि ले बै मोतिया, मनाइ ले बै ननदी रे तोर बिरना
I will pick up all corals.
And collect all pearls.
And I will appease your brother Nanadi.
कवन रंग मुंगवा, कवन रंग मोतिया, कवन रंग ननदी रे तोर बिरना

2. शीर्षक गीत : कइसे खेलै जइबू सावन में कजरिया

अंग्रेजी रुपान्तर

रचना : श्रीमती सहोदरा, बहुआर, मिरजापुर
अंग्रेजी अनुवाद – रुपांतर : श्री शिवरतन गुप्त ''रामरंग'' (त्रिवेणी सदस्य)

कइसे खेलै जइबू सावन में कजरिया, बदरिया घेरि आई ननदी।
How you will go to play in Savana Kajari.
O! Nanani clouds covered foggy.
तू त जात हउ अकेली कउनो संग न सहेली,
छैला रोकि लैइहैं तोहरी डगरिया, बदरिया घेरि आई ननदी
You are going dear lonely, no one pal no assembly
Dandies will restrain you in way being crazy, O! Nanadi.
केतने डामिल फाँसी चढ़लै, केतने गोली खाइके मरलै,
केतने पीसत होइहैं जेहल में चकरिया, बदरिया घेरि ....
Died several by hanging, several gone in bullet shooting.
Several in jails milling & suffering O! Nanadi ....
काहे बोला ननदी बोली, सुनि कै जी के लागे गोली,
अबहीं चढ़ल बाटै तोहरी उमरिया, बदरिया घेरि ....
Nanadi why you do taunting, hearing heart my shot sinking,
Flowing on you tide of puberty, O! Nanadi ....
भइया तोहरे बिदेसवा, नाहीं भेजई सनेसवा
उठै जियरा से हमरों लहरिया, बदरिया घेरि आई ननदी
Gone your brother for touring, any massage not sending,
My heart wanting to him eagerly, O! Nanadi ....
बदरा जियरा डरपावै, काहे बिरहा जगावै, भेजूँ मिरजापुर से सइँया के सवरिया, बदरिया घेरि.
Clouds grow in heart fear, why raise separation of dear
From Mirjapur send motor for Saiyan, O! Nanadi
कइसे खेलै जइबू सावन में कजरिया, बदरिया घेरि आई ननदी।

गायन : लायंस स्कूल की छात्रायें – कु0 पूजा जैन, स्वाती द्विवेदी पूर्वी बरनवाल, आरशी रिज़्वी, वैष्णवी जायसवाल एवं विधि सिंह।

निर्देशन : श्री पृथ्वी कुमार नारंग, सुश्री रंजना वर्मा, कु0 अनीता श्रीवास्तव एवं श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव (त्रिवेणी सदस्य)

---

3. संस्कृत कजली :

गायन : कु0 नीलम एवं छात्राएं
निर्देशन : श्री नागेश्वर पाण्डेय

शास्त्रीय रागों पर आधारित सदाबहार फिल्मी गीत

त्रिवेणी वार्षिकोत्सव : 25 जून 2006

शास्त्रियता (परम्परा) एवं आधुनिकता (आर्क्रेस्ट्रा) का अद्‌भुत संगम

प्रस्तुतकर्ता – स्वर साधना सांस्कृतिक संस्था, मिरजापुर

क्र0	शास्त्रीय राग	गीत के बोल	फिल्म	गायन	संगीतकार	रचनाकार
1.	मिश्र खमाज	कुछ तो लोग कहेंगे	अमर प्रेम	किशोर कुमार		
2.	मिश्र काफी	वक्त ने किया क्या हसीं	कागज के फूल	गीता दत्त	एस0 डी0 बर्मन	कैफी आजमी
3.	अहीर भैरव	पूछो न कैसे मैंने रैन	तेरी सूरत मेरी आँखे	मन्ना डे	एस0 डी0 बर्मन	
4.	शिव रंजनी	मेरे नैना सावन भादों	महबूबा	लता–किशोर		
5.	दरबारी कान्हड़ा	पग घुंघरु बाँध	नमक हलाल	किशोर कुमार	बप्पी लाहरी	
6.	अल्हैया बिलावल	हरघड़ी बदल रही है	कल हो न हो	सोनू निगम		
7.	बिलावल	आएगा आने वाला	महल	लतामंगेशकर	खेमराज प्रकाश	
8.	सारंग	तुम अगर साथ देने का	हमराज	महेन्द्र कपूर	रवीं	साहिर
9.	यमन	चन्दन सा बदन	सरस्वती चन्द्र	मुकेश		
10.	यमन कल्याण	मन रे तू काहे न	चित्र लेखा	मो0 रफी		साहिर
11.	विहाग	बीते न बिताई रैना	परिचय	भूपेन्द्र–लता	आर0डी0 बर्मन	
12.	मारु विहाग	पंछी होती तो उड़ जाती रे	सेहरा	लता मंगेशकर		
13.	राग नन्द	तू जहाँ जहाँ चलेगा	मेरा साया	लता	मदन मोहन	राजा मेहंदी अली खां
14.	दरबारी	तेरा मन दर्पण कहलाए	काजल	लता		
15.	प्रताप बराली	पिया तोसे नैना लागे रे	गाइड	लता	एस0डी0 बर्मन	
16.	बागेश्वरी	आ जा रे परदेसी	मधुमती	लता	सालिल चौ0	शैलेन्द्र
17.	बिलावल	तेरी आँखों के सिवा	चिराग	लता		
18.	पहाड़ी	ये दिल तुम बिन कहीं	इज्जत	रफी–लता		
19.	मांड	दिल चीज क्या है	उमराव जान	आशा भोंसले	खैय्याम	शहरयार
20.	शहाना कान्हड़ा	आपकी नजरों ने समझा	अनपढ़	लतामंगेशकर	मदन मोहन	
21.	भुपाली	दिल हुम हुम करे	रुदाली	लतामंगेशकर	भूपेन ह0	
22.	भुपाली	कुछ दिल ने कहा	अनुराग	लतामंगेशकर		
23.	भील पलासी	नैनों में बदरा छाए	मेरा साया	लतामंगेशकर	मदन मोहन	राजा मेहंदी अली खां
24.	मेघ	तेरे ख्यालों में हम	गीत गाया पत्थरो ने	लतामंगेशकर		
25.	चारुकेशी	मेघा छाए आधीरात	शर्मीली	लतामंगेशकर	एस0डी0 बर्मन	नीरज
26.	मिश्र भैरवी	ओ मेरे दिल के चैन	मेरे जीवन साथी	किशोर कुमार		
27.	भैरवीं	मैं हूँ खुश रंग हीना	हीना	लतामंगेशकर		
28.	भैरवीं	इक राधा इक मीरा	राम तेरी गंगा	लतामंगेशकर		
29.	भैरवीं	बाबुल मोरा नैहर	–	के.एल. सहगल		
30.	भूप	सायोनारा–सायोनारा	लव इन टोकियो	लतामंगेशकर	शंकर जय किशन	
31.	मालकोश	मन तड़पत हरि दर्शन	बैजू बावरा	मो0 रफी	नौशाद	शकील बदा0
32.	मल्हार	तनहा न अपने आपको	–	चन्दन दास		

चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों एवं संगीतज्ञों के मतानुसार भारतीय शास्त्रीय संगीत का मन–मस्तिष्क–रक्त प्रवाह–नर्वस सिस्टम पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है राग अहीर भैरव, भीम पलासी, पूरिया, दरबारी कान्हड़ा द्वारा डिप्रेशन, उच्च रक्त चाप अनिद्रा, भैरवीं–आत्म संतोष, हिंडोल–स्पान्डेलाइटिस–हाइपरटेन्शन, रामकली–कोलाइटिस–पाइल्स, जय जयवन्ती सिर दर्द–डायरिया, मल्हार–अस्थमा, यमन/अहीर भैरव–रयूमेटिक अर्थराइटिस के उपचार में सहायक है। ☐

त्रिवेणी के जन्म की कथा

शम्भू नाथ अग्रवाल
(लायन्स स्कूल, रामकृष्ण सेवाश्रम, चेम्बर आफ कामर्स के संस्थापकों में प्रतिष्ठित, त्रिवेणी संस्थापक सदस्य)

हिमालय की हरी–भरी, सुरम्य, शान्त वादी की गोद में, माँ गंगा के निर्मल–पावन तट पर बसा स्वर्गाश्रम–ऋषीकेश से जुड़ी है **'त्रिवेणी'** के जन्म की गाथा। अप्रैल 1995 में मित्र किशन बुधिया के साथ सपत्नीक हम उस तपो भूमि पर प्रवास पर थे। वहाँ का आध्यात्मिक वातावरण मन को इतनी शान्ति दे रहा था कि हमारे मन में विचार आया कि काश कुछ ऐसा ही वातावरण मिरजापुर में भी मिल जाय तो हम कितने सुखी हो जांय।

सौभाग्य से उन्हीं दिनों हमारे पूज्य, मानस शिरोमणि पं0 शिवनाथ जी बाजपेयी परमार्थ निकेतन में रामकथा पर प्रवचन कर रहे थे। उनके दर्शन व सत्संग का लाभ हमें प्राप्त था। पूज्य बाजपेयी जी की हम लोगों के प्रति विशेष अनुकम्पा रही है।

एक दिन आ0 बाजपेयी जी ने हम सभी की भेंट परमार्थ निकेतन के महा मण्डलेश्वर अप्रतिम विद्वान स्वामी असगांनन्द जी महाराज से उनके आश्रम पर करवाई। परमपूज्य महा मण्डलेश्वर जी ने मन की शान्ति, दुखों के निवारण, जीवन–मृत्यु, आनन्द की प्राप्ति जैसे गूढ़ विषयों पर प्रवचन एवं आशीर्वाद दिया। स्वामी चिदानन्द जी सरस्वती 'मुनिजी' का दुर्लभ सत्संग भी हमें प्राप्त हुआ। हम सभी को मन की शान्ति एवं आनन्द की अनुभूति प्राप्त हुई।

भगवत् कृपा से बुधिया जी के मन में आया कि जीवन की इस सान्ध्य बेला में हम लोगों को अध्यात्मिक उत्थान का प्रयास करना चाहिए जिसके लिए समय–समय पर सत्संग, प्रवचन, वार्ता, गोष्ठी आदि का आयोजन समीचीन होगा। आ0 बाजपेयी जी की सहमति से संस्कृति–साहित्य–संगीत के समावेश सहित **'त्रिवेणी'** के बीजारोपण की पृष्टिभूमि बन गई।

मिरजापुर लौटने पर, 11 जून 1995 को, ग्यारह संस्थापक बुद्धिजीवियों के साथ अध्यात्म–संस्कृति–साहित्य की त्रिवेणी का गठन सम्पन्न हुआ।

आज हम निःसंकोच कह सकते हैं कि जिन उद्देश्यो–मनोभावों को लेकर **'त्रिवेणी'** का जन्म हुआ था उसमें पूर्णतया सफलता प्राप्त हुई है। हम अपने नगरवासियों सहित अध्यात्म, आनन्द, शान्ति एवं ज्ञान की ओर उन्मुख हो सके हैं। त्रिवेणी के रूप में मिरजापुर को एक नया मंच प्राप्त हुआ है।

हरि ओम!

''मैं अकेला ही चला था जानिबे मंज़िल मगर
लोग सब आते गये और कारवां बनता गया''

राजनाथ सिंह, सांसद
अध्यक्ष
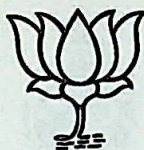
भारतीय जनता पार्टी

संदेश

प्रिय श्री किशन बुधिया जी,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'त्रिवेणी' अपनी स्मारिका प्रकाशित करने जा रहा है। आपकी संस्था ने पूर्वी उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति को जीवन्त रखने के लिए जो निरन्तर प्रयत्न किये है वे सराहनींय है।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप अपना यह प्रयत्न लोकमानस की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परिधि का विस्तार करने के लिए निरन्तर जारी रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

(राजनाथ सिंह)

श्री किशन बुधिया
संस्थापक संयोजक, त्रिवेणी
878, बूढ़ेनाथ मार्ग,
मिर्जापुर–231001
उत्तर–प्रदेश

कार्यालय : 11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001 दूरभाष : 23782604, 23382234, 23382235 फैक्स : 23782163
निवास : 38, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001 दूरभाष : 23353881, 23354184

प्रोफेसर पंजाब सिंह
Prof. Panjab Singh
FNAAS, FIAS, FNIE, FBRSI, FSEE
(EX-SECRETARY. DARE. GOI & DG. ICAR)
कुलपति
VICE-CHANCELLOR

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
VARANASI - 221 005 (INDIA)
Phones : (0542) 2368938/230-7220 (O)
: (0542) 2368339/230-7209 (R)
Fax : (0542) 2369951
e-mail : vc_bhu@sify.com

वी0 सी0/
अक्टूबर 11, 2006

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आपकी सक्रिय संस्था 'त्रिवेणी' स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है। आप सांस्कृतिक अनुष्ठानों के साथ समाज को सुसंस्कृत करने के प्रयास में संलग्न हैं। मेरी कामना है कि आप सफल हों।

(पंजाब सिंह)

न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त
निवृत्तमान न्यायाधीश
इलाहाबाद उच्च न्यायालय

दूरभाष : 2465033
'शान्ति निलय'
25/1–ए, टैगोर टाउन,
इलाहाबाद – 211002

दिनांक : 6 दिसम्बर, 2006
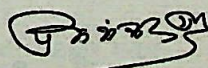
मंगल-कामना

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि साहित्य–संगीत–अध्यात्म में निष्णात मिर्जापुर की 'त्रिवेणी' बन्धुवर श्री किशन बुधिया जी की अगुआई में विगत एकादश वर्षों से अनवरत सेवालीन है।

कुछ वर्ष पूर्व मुझे भी इस संस्था द्वारा आयोजित रामायण मेला में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। विद्वदवर पं0 शिवनाथ वाजपेयी का मानस पर सारगर्भित प्रवचन के साथ–साथ अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का जो उच्चस्तर के थे प्रवलोकन करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। राजनीतिक आपाधापी के युग में परम्परागत भारतीय संस्कृति को पोषित करते रहने का श्री बुधिया एवं उनके सहयोगियों का यह रचनात्मक प्रयास निश्चय ही श्लाघनीय है।

इस अवसर पर **'त्रिवेणी स्मारिका'** का प्रकाशन कुछ अन्तराल के पश्चात होना भी सुखद समाचार है। सरस्वती की धारा लुप्त नहीं होती है। यदि प्रकट नहीं हो पाती है तो भी अर्न्तधारा अविरल गत से प्रवाहित होती ही रहती है। उपयुक्त समय एवं स्थान पर पुनः उसके दर्शन हो हीं जाते हैं।

संस्था एवं स्मारिका की सफलता की मंगल–कामना परम प्रभु से करता हूँ।

डा0 लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

Dr. L. M. Singhvi

Member, Permanent Court of Arbitration at the Hague
Formerly Member of Lok Sabha (1962-67) and Rajya Sabha (1998-2004)
Formerly India's High Commissioner in U. K., (1991-98)
Senior Advocate, Supreme Court of India
Formerly Chairman, High Level Committee on Indian Diespora (2000-2004)

दिनांक 17 अक्टूबर 06

संदेश

प्रिय किशन बुधिया,

सांस्कृतिक साहित्य एवं अध्यात्म का त्रिवेणी संगम भारतीय परम्परा की अद्भूत उपलब्धि है। आप मिर्जापुर में उस पावन उपलब्धि को सयत्न संभाल रहे हैं एवं सवंर्धित कर रहे हैं, यह प्रशंसनीय है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

(लक्ष्मीमल्ल सिंघवी)

श्री किशन बुधिया
878, बूढ़ेनाथ मार्ग,
मिर्जापुर–231001
ई–मेल : budhiamzp@satyam.net.in
Ph. : 221879, 221355, Mobile : 9935574800
Fax : (05442) 221354

बी – 8, साउथ एक्सटेंशन, भाग – 2, नई दिल्ली – 110049
B-8, South Extension Part-II, New Delhi - 110049 INDIA
Tel. : (00-91-11) 26261313, 26263030, Fax : 26262266, E-mail : lsinghvi@sansad.nic.in

R. K. KASLIWAL
ADVISOR

November 22, 2006

Shri Kishan Budhia
878, Burhenath Road
MIRZAPUR - 231001
UTTAR PRADESH
Tel : 05442-221879/355

Dear Shri Budhiaji,

I thank you for your letter and for the sentiments expressed. I always cherish fond memories fo our close association while I was at Renukoot. It is very difficult to have affection and love of people of that area, here in a Megapolis.

With your active involvement, **"TRIVENI"** - the socio-cultural organization founded under your initiative - have been doing commendable service to the people. I am glad to know that frequently Kajali and other cultural events are organised under the auspices of **"TRIVENI"**.

I am told that Hindalco, Renukoot has already released advertisement to be published in the Souvenir. It will always be my pleasure to extend support to the services activities of **"TRIVENI"**.

Best regards

Yours sincerely,

R. K. KASLIWAL

HINDALCO INDUSTIES LIMITED

Aditya Birla Center, Wing-B, 3rd Floor, S. K. Ahire Marg, Worli, Mumbai - 400 030, INDIA.
Tel. : 91-22-5652 5000 Fax : 91-22-5652 5801 / 2499 5801

Regd. Office : Century Bhavan, 3rd flr., Dr. Annie Besant Road, Worli, Mumbai-400 025, INDIA. Tel. : 91-22-5662 6666 Fax : -91-22-2422 7586 / 2436 2516

Works : P. O. Renukoot, Pin : 231217, Dist. : Sonbhadra (U.P.) INDIA Tel. : Pipri (91-5446) 252079 Fax : (91-5446) 252107 / 427

Vishnu Raj Sharma

"Amol", P. O. Amoi, P. O. Box No. 8, Mirzapur, U. P., 231001, India.
Office : Phones : 91 5442-252304, 252610 Fax : 91 5442-252413
Residence : Phones : 91 5442-245022, 245452 Fax : 91 5442-245250 Email : vinoo.sharma@obeetee.com

Message

It gives me great pleasure to know that Triveni is publishing "Triveni Smarika" for general distribution. Mirzapur, which was known for its cultural heritage and its patronage of music, art and sculpture, etc., has seen a gradual withdrawal of cultural activities which are now reduced to almost nothing. In this regard Triveni is playing a unique role for the residents of Mirzapur City in organizing many cultural and educational programmes, covering a wide range of subjects. It is therefore fulfilling a necessary need for any society. Thus the role played by Triveni is highly commendable and is greatly appreciated.

I hope that "Triveni Smarika" will be very successful and I convey my best wishes to organisation for every success in the future.

V R Sharma

V. R. Sharma

18 November 2006

Managing Director M/s Obeetee Pvt. Ltd., Chairman, CEPC New Delhi.

THE INTERNATIONAL ASSOCIATION OF LIONS CLUBS

(Lions Clubs International)

District 321-E

We Serve

Lion Makund Lal Tandon M.J.F.

District Governor (2002-03)

15.12.2006

संदेश

जिस तरह हमारे विद्या एवं सामाजिक संस्थान भारतीय परम्परा और संस्कृति के सनातन ऐक्य को उत्तरोत्तर अग्रसर करते है, वहीं ऐक्य–साधना भारत का मूल स्वर रही है और उसी ऐक्य साधना के मूल स्वर को ''त्रिवेणी'' जैसे संस्थान, पल्लिवित एवं पोषित करने के लिये अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ समर्पित है, यह वास्तव में प्रशंसनीय है। यह और भी प्रसन्नता का विषय है कि माँ गंगा के तट पर लोक–कल्याणकारी कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने वाली आपकी प्रतिष्ठित संस्था ''त्रिवेणी'' शरद ऋतु के मनोहारी अवसर पर एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है, इसके लिये आपको कोटिशः साधुवाद देता हूँ।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के वे ही पुरोधा रहे हैं, जिन्होंने जीवनधारा के बीच रहकर नयी–नयी अनुभूतियों द्वारा जीवन, विद्या, कला संगीत एवं अध्यात्म की सीमाओं को विस्तृत किया है, यही है हमारी परम्परा, यही भारतीयता का विशेष समन्वयकारी गुण है जो ''त्रिवेणी'' के प्रतिबिम्ब में अवलोकित किया जा सकता है।

मुझे आशा है आपकी स्मारिका अपनी उघुता में विभुता को अग्रसर करेगी, जिससे निश्चित ही हमारी परम्परा भविष्योन्मुख होती हुई उस मूल का सृजन करेगी, जो त्रिवेणी जैसे संस्थान की जीवन्तता को रेखांकित करेगी।

एक बार पुनः आपको हार्दिक बधाई एवं त्रिवेणी के उत्तरोत्तर भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ।

भवदीय

Makund Lal Tandon

(मुकुन्द लाल टण्डन)

श्री किशन बुधिया,
संस्थापक संयोजक,
''त्रिवेणी'' मिर्जापुर।

Ck. 57/72, Resham Katra, Chowk, Varanasi
Ph. (0542) 2413395, 24132150 (off.) 3291551, 6543359 (R)
Mobile : 9839259395 e-mail : t_makund@hotmail.com

कैलाश चौरसिया
उपाध्यक्ष
(राज्य मंत्री)

उत्तर प्रदेश राज्य युवा कल्याण
68, नवीन बिल्डिंग, वि- - ल
कार्या0 : 2238170
दूरभाष : CH-352
आवास : 24 2

दिनांक : 18 .12.06

शुभ कामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि आध्यात्म संस्कृति, साहित्य की संस्था **''त्रिवेणी''** जो सांस्कृतिक विकास में विगत कई वर्षों से क्रियाशील है। यह संस्था रामायण मेला, कजली महोत्सव, चैती मेला (गुलाब उत्सव) तथा विद्वानों की वार्ता गोष्ठी का आयोजन करती है। जनवरी 2007 में त्रिवेणी स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है। मुझे आशा एवं विश्वास है कि स्मारिका में विभिन्न गतिविधियों का समावेश किया जायेगा।

अतएव **''त्रिवेणी''** स्मारिका के प्रकाशन के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते है।

(हस्ताक्षर) कैलाश चौरसिया

आदरणीय श्री किशन बुधिया जी
संस्थापक-संयोजक ''त्रिवेणी''
संस्थापक-मिर्जापुर नेत्र बैंक संस्थान
सदस्य-जनपद विधिक सेवा प्राधिकरण

प्रभावती यादव
अध्यक्ष

☎: 05442-253081 (O)
: 05442-221833 (R)
जिला पंचायत मीरजापुर
निवास – अनगढ़ रोड, तेलियागंज
मीरजापुर – 231001

पत्रांक – 1736

दिनांक : 07.12.2006

श्री किशन बुधिया जी,
संस्थापक/संयोजक
''त्रिवेणी'' पत्रिका–बूढ़ेनाथ मार्ग,
मीरजापुर।

संदेश

आपका पत्र दिनांक 5–12–2006 प्राप्त हुआ और पत्रावलोकन उपरान्त विदित हुआ कि आपके संयोजकत्व में ''त्रिवेणी'' नामक पत्रिका (स्मारिका) का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसकी अधोहस्ताक्षरी को विशेष रुप से प्रसन्नता है। इसके क्रम में मेरी यह शुभ कामना है कि आपके माध्यम से प्रकाशित हो रही पत्रिका (स्मारिका) का बृहद रुप से प्रचार एवं प्रसार हो।

आपके पत्र हेतु धन्यवाद!

अध्यक्ष,
जिला पंचायत, मीरजापुर

दीपचन्द्र जैन

अध्यक्ष : नगर पालिका परिषद, मीरजापुर
अध्यक्ष : मीरजापुर व्यापार एवम् उद्योग मण्डल
सदस्य : उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी, लखनऊ
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल

कार्यालय :-
कटरा बाजीराव, मीरजापुर
दूरभाष : 05442-267999
मो0 : 9415206647
Email-pradeepjain@sancharnet.in

पत्रांक संख्या -

दिनांक : 8.12.2006

सेवा में,

किशन बुधिया,
संस्थापक, संयोजक
''त्रिवेणी'' मीरजापुर।

महोदय,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि नगर के बुद्धजीवियों की संस्था ''त्रिवेणी'' अपनी स्मारिका का प्रकाशन कर रहीं है।

नगर की साहित्यक, सांस्कृतिक और सामाजिक उत्थान में त्रिवेणी का योगदान अत्यन्त सराहनीय है।

संस्था तथा स्मारिका की सफलता के लिए मैं अपनी ओर से तथा नगर पालिका परिषद, मीरजापुर की ओर से शुभकामना प्रेषित कर रहा हूँ।

(दीपचन्द्र जैन)

उमेश कुमार मित्तल
आई. ए. एस.
जिलाधिकारी

जिलाधिकारी निवास
दूरभाष का0 : 05442 – 252480
नि0 : 257400
फैक्स : 252552
अ0 शा0 पत्रांक ....
दिनांक : 21.12.2006
मीरजापुर

संदेश

प्रिय महोदय,

नगर के सांस्कृतिक विकास में ''त्रिवेणी'' संस्था अपने विभिन्न लोकोपयोगी कार्यक्रमों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है, जिसके लिए संस्था बधाई की पात्र है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि ''त्रिवेणी'' स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है इसमें अच्छी–सुरूचिपूर्ण सामग्री उपलब्ध होगी। पत्रिका की सफलता के लिये मैं अपनी शुभ कामनायें प्रेषित करता हूँ।

सादर

भवन्निष्ठ,

(उमेश कुमार मित्तल)

श्री किशन बुधिया,
संस्थापक संयोजक,
त्रिवेणी, मीरजापुर।

किशन बुधिया

सम्पादक, संरक्षक– मि0 नेत्र बैंक संस्थान,
ाधिकरण, पूर्व चीफ इक्जी0 लायन्स स्कूल)

से उपलब्ध हो सकता है? पाया भी जा सकता है
' व सांसारिक सुविधाओं से सम्बन्ध नहीं है। सुख
सुविधाओं से, अर्थ से, पद से, नाम–यश–कीर्ति
तु आवश्यक नहीं कि ढेर सारी सुविधाओं को प्राप्त
सके। ऐसे कितने व्यक्ति हैं जो सुखी होते हुए भी

म, अहिंसा, सत्य, करुणा, संवेदन शीलता, दया,
मन शान्त हो, एकाग्र चित्त हो, विराट सत्ता के प्रति
ानि व मृत्यु भय से ऊपर उठने वाला व्यक्ति, स्वयं
है।

।–माशूक नहीं
पैदा कर''

छोटी हो–बड़ी हो, हमें बहुत कुछ दे सकती है। पं0 भीमसेन जोशी ... पं0 ...राज का गुरु गम्भीर गायन सुनकर, पं0 हरि प्रसाद चौरसिया की बन्शी की तान पर झूम कर, योगी की आत्मकथा या विष्णु प्रभाकर का आवारा मसीहा, अमृता प्रीतम की रसीदी टिकट या जय शंकर प्रसाद का आंसू पढ़कर, साहिर लुधियानवी की परछाइयां सुनकर, जगजीत सिंह की गजल में डूब कर या सन्त मोरारी बापू की हृदयग्राही कथा सुन कर, हो सकता है कि हमें आनन्द की अनुभूति प्राप्त हो।

यह भी सम्भव है कि किसी अनाथ–निर्धन रोगी की चिकित्सा कराने, किसी सीधे–सरल बच्चे के रुपया गिर जाने पर स्कूल में उसकी फीस जमा कराने, विधवा–गरीब माँ की बेटी के विवाह में खड़े होकर या किसी घायल व्यक्ति के अस्पताल पहुँचा कर हम आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सकें।

श्रीराम कथा के दौरान एक जिज्ञासु ने सन्त मोरारी बापू से पूछा ''धर्म का पालन करने से क्या फल मिलता है?'' बापू ने छोटा सा उत्तर दिया कि दुख मिलता है। यह 'दुख' भी आनन्द दायक होता है।

महत्वपूर्ण है बातों को–चीजों को देखने, समझने व अपनाने का नजरिया। इस प्रकार प्राप्त आनन्द क्षणिक भी हो सकता है, अल्पकालीन व स्थायी भी हो सकता है। आनन्द, आनन्द ही है, चाहे जिस रूप में हो–चाहे जितनी मात्रा में हो। आत्मिक सुख व आत्मिक आनन्द जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। हमारे मनीषी ने सत्य ही कहा है–

सभ्यता का तकाजा

प्रताप विद्यालंकार
(मिरज़ापुर के साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे, उनकी सर्वकालिक रचनाओं को पूरे देश में सम्मान मिला, अभियान पत्रिका का सम्पादन–प्रकाशन)
जन्म : विजय दशमी 1927 अवसान : 29 मई 1988 लखनऊ

दोस्तों !
मैं देखने नहीं आऊंगा,
कि तुमने कन्धा दिया या नहीं,
घाट तक ले गये या नहीं,
नहीं ....
एक दिन की प्रैक्टिस खराब करने से,
एक दिन की बिक्री रोक देने से,
एक दिन.... .... नौकरी से ....
गैर हाज़िरी से
कोई फ़ायदा नहीं।
वादा तो नहीं करता
मगर कोशिश करूंगा कि इतवार को ही मरूं।

(मुझे याद है
मेरे एक दोस्त की बरसी उस दिन पड़ी
जिस दिन इतवार नहीं था
इसलिये
साहित्य के पण्डों ने
बरसी की तारीख़
आगे बढ़ा कर उस दिन कर दी
जिस दिन इतवार था !)
कलक्टर साहब उसी दिन खाली थे
और सदारत उन्हीं को करनी थी !

तो भाई !
मैं वादा तो नहीं करता
मगर कोशिश ज़रूर करूंगा ......
पर अगर ऐसा न हो सका
तो क्या तुम ऐसा नहीं कर सकते
कि दो–चार दिन के लिये
मेरी लाश
किसी एयरकण्डीशण्ड मुर्दाघर में रखवा दो?
(कमबख़्त को
मरने पर तो कम से कम,
चौबीसों घंटे एयरकण्डीशण्ड में रहने का मजा
मिल जाय !)
अकड़ ज़रूर गया होऊंगा
पर तुम्हारे लिये यह कोई नई बात नहीं होगी,
जिन्दगी भर मैं अकड़ा ही तो रहा।
तुम्हारी उपेक्षा के लिये भी
कोई तुम्हें ताने नहीं देगा;
दोस्तों,
तुम सब एक से हो,
एक ही थैली के।
और एक बात कहूं?
आंसू तो तुम्हें क्या आयेंगे,
शोकसभा करके
मेरी मिट्टी पलीत मत करना।

अरे दोस्तों,
तो तुम नाराज़ हो गये?
(तो मैं ठीक समझता था !)
इन पंक्तियों को पढ़
जो नाराज़ न हुआ हो
उसे बताना:
उसे मैं भी प्यार करता था !
रहे तुम,

तो तुमसे भी मैं नाराज नहीं था।
हां, तुम्हें पहचानता मैं ज़रूर था।
मगर सच सच कहना,
क्या तुम्हारी पहचान ने
हमारे आपसी सम्बन्धों में बाधा डाली?
नहीं दोस्तों,
यह सभ्यता का तक़ाजा नहीं है।

22.6.69
सौजन्य : श्री तारा चन्द जैन

हम तुम्हें भुला न पायेंगे

सैय्यद हुरमतुल इकराम

(उर्दू अदब के स्तम्भ कहे जाने वाले मशहूर कलमकार, कलकत्ता इक रबाब–शहपर–उजालों के गीत–जलवये नभूं–शाखे आगही–हमारे शायर–बच्चों के लिए खेल खिलौने सात अदद किताबें प्रकाशित सभी उ.प्र. उर्दू एकाडमी से पुरस्कृत, पहली दो किताबे कलकत्ता व बर्दवान विश्वविद्यालय के एम.ए. पाठ्यक्रम में शामिल)

जन्म : 2.9.1927 मृत्यु : 6.1.1983

सैय्यद हुरमतुल इकराम
मरहूम शायर को 'त्रिवेणी' का सलाम

गजल

एक चिता रक्खी देखी थी आख़िरी शब अंगारों में,
रात खड़ी थी ज़ुल्फ़ें खोले चांद था मातम दारों में।

वजह न पूछो इतना समझो ये भी इक उफ़तादे ख़्याल,
तन झेले पाताल की बिपता मन झूले सैय्यारों में।

उम्र गुज़ारो इस अन्दाज़ से जैसे मौसम ज़ाड़ों का,
दिन में धूप से जी बहलाओं रात कटे अंगारों में।

कान ही रखती है तो अजब क्या बोल पड़े तो आफ़त है,
तुम को ख़बर क्या कितने पैकर जज़्ब हैं इन दीवारों में।

ख़्वाबों की ये राह भी दिल पर बन्द हुई क्या कीजे गा,
कल तक शायर कह लेते थे चलकर रहिये तारों में।

मसकन जो अच्छा ढूंढा है लेकिन दोनों है नादान,
पलकों में रातें आ बैठीं नींदें पहुचीं ग़ारों में।

हुरमत साहब़ ! अपनी शराफ़त पर इतराना छोड़ो भी,
ये खोटा सिक्का है इसकी क़द्र कहां बाज़ारों में।

कलकत्ता इक रबाब का एक बन्द

हबड़ा ब्रीज के कामते–बाला का बांकपन
जैसे कोई बुजुर्ग ऋषी जाप में मगन
दोशे–हवा पे जैसे बगूलूं की अन्जुमन
या नागदेव खुद को समेटे उठाये फन

फौलाद का ये मोजज़ा हिकमत की सान पर
अरजुन हो जैसे तीर चढ़ाये कमान पर

...जर में उनकी पसन्द

गजल ...
हिन्दु... ...शायरे की
जन्म ... ...म्बर 1930 इन्तकाल : 27 जुलाई 19..
(जश्ने अनवर के दौ... ... किशन बुधिया से हुई बातचीत पर आधारित)

...रो

...ब से ... उठा दे ए ... ...या,
...स अभी र... ...फिल बदल ...गा।
... जो बेहोश ... हो ...गा,
... वाला जो ... ...।।

...दा शेर

... तरह तोड़ ऐ बागबां
... ने न पाए न आवाज हो
वर्ना ... पे रौनक न फिर आएगी
दिल ... हर कली का दहल जाएगा

...बसे प्यारी गजल

... भी नींद आती नहीं, मैं कैसे सो जाऊँ
... को बहलाता नहीं, मैं कैसे सो जाऊँ
... मुझको याद उनकी, आ तो जाती है
... कर जाती नहीं, मैं कैसे सो जाऊँ
... शबे–गम में जो, मेरा साथ देते हो
...मको नींद आती नहीं, मैं कैसे सो जाऊँ
... मेरी जुल्फों की खुशबू, आ तो जाती है
मगर ... लाती नहीं, मैं कैसे सो जाऊँ
सितारे ... लाए कि अब, वो भी परीशां है
सुना है उनको नींद आती नहीं, मैं कैसे सो जाऊँ
किसी सूरत भी नींद आती नहीं....

मिरजापुरी कजली

कागा बोले रे सवनवा में हाए ननदी।
मेरी निंदिया उड़ाए लिए जाए ननदी।।

उनकी मजबूरी

... खोलू तो मुझसे गिला तुम करो
...शी बाअसर हो तो मैं क्या करूँ
... वादे पे मुझको भरोसा तो है
जिन्दगी मुख्तसर हो तो मैं क्या करूँ
डूब कर मैंने तूफां को देदी खबर
नाखुदा बेखबर हो तो मैं क्या करूँ

जिन्दगी का सफर

एक मुद्दत हुई उसको रोए हुए
एक अर्सा हुआ मुस्कराए हुए
जब्ते–गम का अब और उससे वादा न लो
वरना बीमार का दम निकल जाएगा

काश ऐसा होता

बर्क ने काश न देखा होता, आज नशेमन अपना होता।
मेरा दामन तंग नही था, तूने बख्श के देखा होता।
कैसे कहूँ वो गुजरे इधर से, दिल तो यकीनन धड़का होता।
शुक्र है अनवर हम नही तड़पे, वर्ना वह जालिम रुसवा होता।
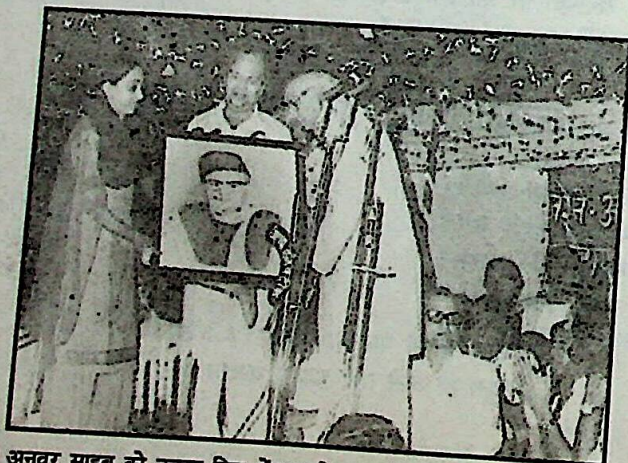
सुश्री नन्दिता शर्मा द्वारा अनवर साहब को उनका चित्र भेंट करते हुए, बीच में सचिव किशन बुधिया (जश्ने अनवर १९७८)

एक

हवाएँ
न जने कहाँ ले जाएँ

यह हँसी का छोर उजला
यह चमक नीली
कहाँ ले जाय तुम्हारी
आँख सपनीली

चमकता आकाश-जल हो
चाँद प्यारा हो
फूल जैसा तन, सुरभि-सा
मन तुम्हारा हो

महकते वन हों नदी-जैसी
चमकती चाँदनी हो
स्वप्न-डूबे जंगलों में
गंध-डूबी यामिनी हो

एक अनजानी नियति से
बँधी जो सारी दिशाएँ

न जाने कहाँ
ले जाएँ

दो

हिलत
नीम क

भूल ग
ब जो कहन

ा वृक्ष से

ी हवाएँ कितनी तीखी

र रही हैं कैसी तानें

कहती हैं
कैसी अनकहनी!

हिलती कहीं नीम

सम्पर्क : बी. 70, आवास विकास कालोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर-273015

21 मई 06 त्रिवेणी सभा में शायर
द्वारा प्रस्तुत गजलें

डा० शहरयार

(उर्दू अदब का प्रतिष्ठित नाम, हिन्दुस्तान के मशहूर शायर (उमरावजान फिल्म के लोकप्रिय गीतकार) साहित्य अकादमी उ०प्र०/दिल्ली उर्दू अकादमी,फिराक सम्मान से पुरस्कृत अली० मु० विश्व वि० के से.नि. उर्दू विभागाध्यक्ष, मिर्जापुर में त्रिवेणी द्वारा सम्मान 21.05.2006)

गजल

(1)

तेरे वा'दे को कभी झूठ नहीं समझूंगा
आज की रात भी दरवज़ा खुला रक्खूंगा

देखने के लिए एक चेहरा बहुत होता है
आँख जब तक है, तुझे सिर्फ़ तुझे देखूंगा

मेरी तन्हाई की रुसवाई मंजिल आयी
वस्ल के लम्हे से मैं हिज्र की शब बदलूंगा

शाम होते ही खुली सड़कों की याद आती है
सोचता रोज़ हूँ मैं घर से नहीं निकलूंगा

ताकि महफ़ूज़ रहे मेरे क़लम की हुरमत
सच मुझे लिखना है, मैं हुस्न को सच लिक्खूंगा

(2)

सीने में जलन, आँखों में तूफ़ान सा क्यूँ है
इस शहर में हर शख़्स परेशान सा क्यूँ है

दिल है तो धड़कने का बहाना कोई ढूंढे
पत्थर की तरह बे हिसो-बेजान सा क्यूँ है

तन्हाई की यह कौन सी मंज़िल है रफ़ीको
तो हद्दे-नजर एक बयाबान सा क्यूँ है

हमने तो कोई बात निकाली नहीं ग़म की
वह ज़र्द-पशेमान, पशेमान सा क्यूँ है

क्या कोई नई बात नज़र आती है हममें
आईना हमें देख के हैरान सा क्यूँ है

(3)

शाम की दहलीज़ तक आई हवा
और फिर आगे न चल पाई हवा

आँख इस मंज़र को कैसे भूल जाए
फूल मुर्झाए तो मुर्झाई हवा

खुश्क पत्तों के सिवा कुछ भी न था
शाख़ से उतरी तो पछताई हवा

रेत फैली और फैली दूर-दूर
आसमाँ से क्या ख़बर लाई हवा

आइने बेअक्स हैं, मुद्दत हुई
देख के यह, आँख भर लाई हवा

(4)

नींद की ओस से पलकों को भिगोए कैसे
जागना जिसका मुक़द्   हो, वह सोए कैसे

रेत दामन में हो या दश्त में, बस रेत ही है
रेत में फ़स्ले-तमन्ना कोई बोए कैसे

यह तो अच्छा है कोई पूछने वाला न रहा
कैसे कुछ लोग मिले थे हमें, खोए कैसे

रुह का बोझ तो उठता नहीं दीवाने से
जिस्म का बोझ मगर देखिए ढ़ोए कैसे

वरना सैलाब बहा ले गया होता सब कुछ
आँख को ज़ब्त की ताकीद है, रोए कैसे

दो गीत !

केसरी कुमार

(लब्ध प्रतिष्ठ गीतकार, दो काव्य संग्रह प्रकाशित ('एक घूंट हवा' तत्कालीन राष्ट्रपति डा0 शंकर दयाल शर्मा द्वारा लोकार्पित प्रतिष्ठित चित्रकार, साहित्य परिषद, मिरजापुर के संस्थापक)

सपनों के देवदारु

सपनों के देवदार
जाने कहाँ खो गये
जब से तुम बिछड़े
हम विन्ध्याचल हो गये

सेवों के उदय
अस्त सांवले चिनारों के
नीमों बबूलों की मुट्ठी में
खो गये

गंधहीन उंगलियां
कौन हवा में टाँगें
बाँहों के कस्तुरीमृग
पत्थर हो गये

जीवन के भोजपत्र
किरणों के हस्ताक्षर
कांसों में कटे
और बांसों में रो गये

सूर्यमुखी फूल धूल गिलहरियां
कुतर गईं
तन मन को
आंसू के बौने भिगो गये

(अप्रकाशित–प्रियगीत)

पाइन का वन

जाने क्या गाता है
पाइन का वन !

घाटी से
चोटी तक
गूंज रहा मन

कहीं नहीं झरना है
कहीं नहीं जल
झर–झर–झर झरता है
एक–एक पल

टहनी के ऊपर
आकाश मोरपंख
कुछ बादल सीपी हैं
कुछ बादल शंख

वन–गंधों में
घुलता जाता है तन
जाने क्या गाता है
पाइन का वन !

(शिमला में पाइन के नीचे लिखा वन संगीत)

पतझड़ की प्रतीक्षा

पति व पत्नी शहर में लगी एक चित्रकला प्रदर्शनी देखने गए। प्रदर्शनी देखते हुए पति महोदय एक जगह रुक गएं। पत्नी ने देखा कि वह एक ऐसी पेन्टिग देख रहे थे जिसमें एक युवती कपड़े के स्थान पर पत्ते पहने थी। जब काफी देर तक पति महोदय अपने स्थान से नहीं हटे तो पत्नी ने उन्हें झकझोर कर कहा ''अब घर भी चलो, क्या यहाँ खड़े–खड़े पतझर का इन्तजार करोगे?''

सम्पर्क : 6B/7 NEA ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली 110060 मो0 : 9810622428

गुलाब सिंह

(मिरजापुर की माटी से जुड़े, परम्परा की अक्षय सुगन्ध लिये हिन्दी नव गीत के लब्धप्रतिष्ठ हस्ताक्षर, दो गीत संग्रह धूल भरे पांव/बांस और बाँसुरी, उपन्यास 'पानी के घेरे' प्रकाशित उ.प्र. हिन्दी सं० द्वारा साहित्य भूषण पुरस्कार (रु० 50000–2006) से० नि० प्राचार्य)

कुछ गुलाबी गीत

मत पूछो

बीते दिन
किस तरह गुजारे हैं मत पूछो !
प्रिये–प्राण कहने की
ओंठों की तपिश
गर्म ओंठों पर
सहने की
कली–फूल झरने की
सब कुछ को छूने के पहले
कुछ डरने की–
बातें क्यों
बातों में हारे हैं
मत पूछो !

कहाँ गए सारे के सारे परिचित चेहरे
आत्मीय भीगे तन
मुक्त हँसी
मन गहरे ?
पल अपलक या सदी
काँपती पुकारों की
मौन सूखती नदी
और हम
ठगे हुए कगारे हैं मत पूछो !

लम्बे साये हुए
डूब रहा सूरज
यहाँ इस ठौर
हम कब के आए हुए!
एक गोद, एक नींद थपकी
वापसी बसेरों को
होतीं हम सब की,
अपनी शामें
अपने–अपने ध्रुवतारे हैं
किस तरह गुजारे हैं
मत पूछो!

वापसी

भरी आँखें थरथराये ओंठ
हिलता रह गया रूमाल !
नहीं फेरी पीठ, चलता रहा– चलता रहा
लम्बी रेत के उस पार–
पानी, हर किसी ने कहा
पड़ गए छाले न बीता
यह अनोखा ढाल।
गले लगकर लिपट कर तुमने कहा था–फूल लाना,
ढल रही अब साँझ संभव हो चला है मुँह छिपाना,
नदी में नावें
बिछाने लगी होंगी जाल।
शाल कंधों से हटाना खोलना बाँहें,
वापसी की यात्रायें थपकियाँ चाहें,
प्यार की वह– देही थी
यह प्यार का कंकाल।

ऋतु-संहार

मनमानी करते मौसम का
कैसा गुस्सा, कैसा प्यार?
आई नदी ले गई खुशियाँ रेत दे गई द्वारे,
धरे हाथ पर हाथ खड़े हैं तट के पेड़ बेचारे,
गिरगिट–से मेघों का
क्या स्वीकार, क्या इन्कार?
साँपों की केंचुले नीड़ में पर खुजलाते पक्षी,
अंधी बस्ती में गूँजे स्वर– मीनाक्षी–मीनाक्षी,
बालू की दीवारों पर
बूँदों के बन्दनवार।
सपने व्यथा–वियोग सौंपते मिट्टी भरती साँसे,
कंधे शव, ओंठों सच्चाई हाथों फूल–बताशे,
एक आँख में मेघदूत
दूजी में ऋतुसंहार। ❑

मुनीर बख्श 'आलम'

(उर्दू गजल में महारत के साथ हिन्दी गीत लिखने में सिद्धहस्त आध्यात्मिक चिन्तन में अग्रणी, 'दिव्य प्रभा' के प्रधान सम्पादक)

ग़ज़ल

हम उसका दर ठिकाना पता पूछते चलें
कुछ तो सुराग़ देगी हवा पूछते चलें

आयी है बज़्मे–नाज़ से वह जश्न मनाकर
लायी है क्या यह बादे–सबा पूछते चलें

मुंसिफ़ की मुद्दई से बहुत रब्त–ज़ब्त है
फिर हमको क्या मिलेगी सज़ा पूछते चलें

जब आ ही गये हम हैं तबीबो के शह्र में
इस दर्दे–दिल की हम भी दवा पूछते चलें

इस शहे–मोहब्बत की नफ़ासत की ज़मीं से
यह चीखने की कैसी सदा पूछते चलें

ज़ुल्मों–सितम का रंजो–अलम का था बहुत ज़ोर
मर्कज़ की इन दिनों क्या फ़ज़ा पूछते चलें

पहले तो रहा करते थे दो जिस्म एक जान
क्यों लोग हो रहे हैं जुदा पूछते चलें

दुश्वारियों में अपनी गुज़रती है सुब्हो–शाम
कब तक रुकेगा ज़ोरो–जफ़ा पूछते चलें

कब ख़त्म होगा फ़ाक़ाकशी का यह नया दौर
कब हेगी हर बदन पे रिदा पूछते चलें

वह अपनी नज़र फेर के बेरुख़ है ख़फा है
क्या हो गयी आलम् से ख़ता पूछते चलें

गीत

भोर में हमको जगाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

आँख में सपने सजाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

याद आने लग गये वे खेत औ खलिहान,
गीत विरहा के थिरकती बाँसुरी की तान,
फिर वही मंज़र दिखाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

फिर लगे जुड़ने हमारे टूटते अनुबंध,
याद आने लग गये भूले हुए सम्बन्ध,
नेह के दीपक जलाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

जल गये मानस–पटल पर अनगिनत कंदील,
सोच इस परिवेश की होने लगी तब्दील,
दर्द फिर दिल में जगाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

बढ़ गयी हलचल, हुआ वातावरण गंभीर,
जम गयी अंतस–पटल पर वह पुरानी पीर,
लोरियाँ गा कर सुनाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

भावनाओं के लगे जुड़ने मृदुल संवाद,
फिर उमड़ने लग गयी दिल में पुरानी याद,
साज ले कर गुनगुनाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

भोर में हमको जगाने आ गयीं,
गाँव से ठंडी हवाएँ,

सम्पर्क : जे–149, नयी कालोनी चुर्क, सोनभद्र (उ0 प्र0) पिन–231206 मो0 : 9839368464

प्रो० दया शंकर पाठक

(अंग्रेजी भाषा के कवि, विद्वान, रामचरित मानस का अंग्रेजी में पद्यानुवाद, से0 नि0 प्रवक्ता, त्रिवेणी सदस्य)

WAKE UP MY BOY

Wake! wake! and wake up my boy!
The sleep of the soul is over.
The calm of the night is fled.
The ball of fire ascends
And wheel of primordial energy is up,
Wafting smoothly,
On the fringe of the heavens.

Hear! its clarion call.
And listen to its silent bid.
Quit at once the slothful bed
Of fantasy and whimsical speculation.
Relinquish the torpid dreams
of deadly delusions,
That exults you to the Himalayan hopes
And then they dash you down
To the immeasurable depth of despair.

Rise and be up for action.
Look with expanded eyes of reason.
Stand on the firm rock of reality,
And behold the dawn of divinity.
Now wake up my boy!
The Morning of Life has come.

डाक्टर भ्रष्टाचार, मिस सांप्रदायिकता और मिस्टर आतंकवाद, अपने-अपने भविष्य को लेकर काफी चिंतित थे- सन् 2006 के दौरान इन्हे अपने कारोबार में कोई परेशानी नही हुई-

डा0 भ्रष्टाचार बोले 'भविष्य को लेकर छोटी चिंता है मुझे, बट आई एम कानफिडेंट! एज यूजुवल आई विल मैनेज-एनी हाऊ।' यह सुनकर मिस्टर आतंकवाद ने मुँह खोला 'देखो डा0 साहब! सच यह है कि मै भी चिंता में हूँ। लेकिन अपुन को एक एडवांटेज है। वह है कि मेरे साथी दुनिया के कोने-कोने में फैले हैं अतः यूनो-युनिटी इज स्ट्रैंथ। सीधी उंगली से घी निकल आया तो ठीक है नहीं तो उसे टेढ़ी करना मुझे खूब आता है।' इसके बाद मिस साम्प्रदायिकता कुछ बोलती हैं "आप दोनों की मदद के लिए मैं तो हमेशा तैयार हूं।" श्रीमान् 2006 आगे बढ़कर श्रीमान् 2007 का अभिवादन कर इन तीनों को गले लगाकर झूमने लगा।

यहाँ भी घास है, वहाँ भी घास है

(एक जीवन्त संस्मरण)

रमेश चन्द्र द्विवेदी
शौक मिर्जापुरी
(स्व0 फिराक गोरखपुरी के साहित्यिक सचिव रहे, श्रेष्ठ कवि/लेखक)

वैसे तो हर शाम की सुबह हो ही जाती है। कितनी शामें आईं और गईं। पलक उठी तो पलक झपकी भी। बड़ी से बड़ी महत्वपूर्ण और रंगीन शामें खाक में मिल गयीं। चाहे 'सुबहें बनारस हो या शामें अवध'– वक्त के हाँथों सब लुट चुकीं। एक शायर परवानों की खाक देखता रहा, बड़ी देर तक। सोचता रहा क्या महफिल होगी। कैसी रंगीन शामें और रातें होंगी। सरंगी की लहरों से वातावरण में कुछ धुवाँ उठा होगा। संगीत और नृत्य ने रात के माथे को रौशन कर दिया होगा। मदिरा की प्यालियों में पिघली हुई अशरफियाँ रातों को जगमगा जाती होंगी। परवाने की खाक ने शायर के दिल में क्या–क्या जज्बात उभारे, बुझी हुई महफिल में फिर से जान डाली, शमायें फिर से रौशन हो गई, परवाने फिर जान निसार करने लगे। तभी हवा का एक तेज झोंका आया और परवाने की खाक को उठा ले गया। जहाँ तक शायर की नजर गयी, उसे आँसू भरी आँखों से देखता रहा। खाक हवा हो गई। शायर खड़ा रहा वहीं युगों युगों तक। एक आह निकली जो शेर में ढल गई–

सुब्ह तक वह भी न छोड़ी तूने ऐ वादे सबा।
याद गारे रौनके महफिल थी परवाने की खाक।।

लेकिन कुछ ऐसी भी शाम होती है जो जम जाती है जिसे वक्त मिटा नहीं पाता। ऐसी ही एक यादगार शाम का बयान करने जा रहा हूँ जिसे खुद फिराक गोरखपुरी ने जिक्र किया था। वक्त भी शाम का ही था। वातावरण गम्भीर था। फिराक संजीदा थे। फिराक सहेज–सहेज कर बोल रहे थे।फिराक, प्रेमचन्द, मजनू और मैं– हम सब लोग सुबह से ही लक्ष्मी भवन (फिराक की रहायसी मकान) गोरखपुर में बैठकर हल्की–फुलकी बातें कर रहे थे। वहीं सब का नाश्ता था और दोपहर का खाना भी। प्रेमचन्द अपनी जिन्दगी से बाबस्ता कुछ वाकये बयान कर रहे थे। कुछ बीती हुई दुःख भरी हुई कहाँनियाँ, कुछ अच्छे दिनों के चहकने वाली। बात कभी सियासत पर आती कभी मजदूरों और किसानों पर। प्रेमचन्द को शायरी में दिलचस्पी बहुत कम ही थी। कभी मजनू फिरदौसी की बातें करते तो कभी हाफिज की। सरमोहम्मद इकबाल की शायरी में उन्हें बहुत कुछ नापसन्द भी था। बात का केन्द्र घूम फिर कर समाजवाद बनता और दुःखी भारत की दास्तान दोहराई जाती। गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई कलाइयों से रिसते हुये खून और खून के धब्बों का जिक्र होता। कभी–कभी महल्ले टोले वालों की कहाँनियाँ भी उभर कर सामने आतीं । उजड़ा हुआ गाँव, मिटे हुये विश्वास की तरह लगता। बीच–बीच में अंग्रेजी लेखकों और कवियों पर भी चर्चा होती। गाँव की बात आती तो ''डिजरटेड विलेज'' भी सामने उभर आता। मजनू ने कहा– प्रेमचन्द जी उजड़ा हुआ गाँव भी शायरी में बस जाता है। पतझर भी बसन्त लगने लगता है। प्रेमचन्द ने कहा शायरी की यही सब खबरें हैं। मजनू बोल उठे अच्छी कहानी या जैसी कहानी आप लिखते हैं उससे भी तो यही सूरत पेश आती है। मैंने कहा भाई मजनू प्रेमचन्द जी की सबसे बड़ी खूबी तो यही है कि गाँव को उठाकर दिल में बसा देते हैं। बड़े–बड़े शहरों में रहने वालों के दिलों में प्रेमचन्द ने गाँवें को आबाद कर दिया। मेरा विचार है कि कहानी कला में प्रेमचन्द विश्व के चन्द अजीम कहानीकारों में से हैं। शरदचन्द से तो निश्चय ही वे बड़े कहानीकार हैं। प्रेमचन्द का कहना था कि शरद चन्द की कहानियाँ पारिवारिक जीवन में उलझी सी लगती हैं। मजनू बोल उठे रघुपति यार कुछ चूँगने का जी कर रहा है। हाँ भाई भूख तो मुझे भी लग आई हैं। अन्दर से कुछ मिठाईयाँ, कुछ नमकीन, कुछ खस्ते वग़ैरह आ गये और कुछ और भी।

हालसी गंज का बाजार चिड़ियों के लिये मशहूर है। कुछ बटेर, कुछ सुर्खाव वगैरह भी दोपहर के खाने का जायका बढ़ा रहे थे। मछली भी पकी थी और भिण्डी की कुरकुरी बारीक कटी हुई सब्जी, मूँग की बघारी हुई दाल, फुलके और पोलाव, ड्राइजिन और बिचर्स। शाही टुकड़े भी थे। फिराक का बयान गतिशील था। हम लोग गाव तकिये के सहारे पलंग पर बैठकर बातें कर रहे थे। प्रेमचन्द जी ने कहा रघुपति जी को पैराडाक्स में बात करने में बड़ा मजा आता है। मजनू ने कहा

प्रेमचन्द के भीतर कई-कई संसार करवट लेते रहते थे। बात का रुख फिर अंग्रेजी उपन्यासकारों तक पहुँच गया। प्रेमचन्द डिकेन्स के बड़े प्रशंसक थे। बोले भाई डिकेन्स की सबसे बड़ी खूबी यह है कि उनके पात्रों में या उनके वर्णन में भूल भुलैया वाला पेंचीदा पन नहीं है। बड़ा सीधा और साफ बयान होता है। पात्रों में कोई काम्पलेक्सिटी होती ही नहीं। मगर दिल को हिला देने वाला प्रभाव पैदा कर देते हैं डिकेन्स साहब। जीनियस के लिये कोई कायदा कानून नहीं। सूखे हुये पेंड़ को छू लिया तो वृक्ष हरा हो गया। वृक्ष जंगल हो गया और संसार भर के पंछियों का बसेरा हो गया। भाँति-भाँति के मधुर बोलों से वृक्ष आबाद हो उठा। अब बात आ पहुँची अंकिल टामस केविन पर। मजनू ने कहा- रघुपत यार अंकिल टामस केबिन भी गजब का नावेल है। इस वक्त हाफिजा काम नहीं कर कर रहा है – मुसलिफ का नाम भूल रहा हूँ। मैंने कहा हैरिपट बीचर स्टो। पहले तो प्रकाशक इस नावेल को छापने पर राजी नहीं हो रहे थे। एक प्रकाशक नाक भौं सिकोड़ कर तैयार हुआ। लेकिन बाद में आठ-आठ छापे खाने चौबीस घंटे साल भर तक छापते रहे। इतनी ज्यादा डिमाण्ड बढ़ गयी थीं। एक अमेरिकन यात्री इसे लेकर इंगलैण्ड पहुँचा और उसने बहुत से प्रकाशकों को छापने के लिये दिया। आखीर में एक राजी हो गया। दस वर्ष के भीतर पन्द्रह लाख प्रतियाँ छप गयी। अंकिल टामस केविन पहला बेस्ट सेलर उपन्यास था। बाइबिल के बाद यह उपन्यास दूसरे नम्बर पर था सेल में। अंकिल टाम्स केविन का तर्जुमा संसार की तेइस भाषाओं में हो चुका था। अब्राहम लिंकन की मुलाकात कहीं एक बार हैरियट से हुई तो लिंकन ने कहा "So you are the little lady who started the great war." गुलामी को खत्म करने में इस नावेल का बड़ा असर रहा। यह सिर्फ पहला बेस्ट सेलर नावेल ही नहीं था। यह पहला प्रोटेस्ट नावेल था, जिसका प्रभाव राजनीति पर भी गहरा पड़ा। मजनू ने अपनी उँगलियों को सर पर फिराते हुये कहा रघुपत काक एण्ड बुल स्टोरी (Cock and Bull Story) का मतलब तो साफ है। बेबुनियाद, अतिशयोक्ति पूर्ण निराधार। मगर इसका ओरजिन क्या है, मुझे नहीं मालूम। इस सिलेसिले में मैंने दो चार डिक्शनरियाँ भी देख डालीं मगर कुछ हाथ नहीं लगा। प्रेमचन्द ने कहा यह Cock and Bull फ्रेज तो बहुत पहले से सुनते आये हैं मगर इसकी संरचना कहाँ है, यह अब तक नहीं मालूम। मैंने कहा भाई मैं बहुत दावे के साथ तो नहीं कह सकता लेकिन जहाँ तक मुझे मालूम है इसका आगाज बकिंघम शायर से माना जाता है। स्टोनी स्ट्रैट फोर्ड्स हाई स्ट्रीट में दो पुरानी INNS या सरायें थीं जिनका नाम था काक और बुल (Cock and Bull) मुसाफिर पहले एक सरायँ में फिर दूसरे सरायँ में अफसाने सुनाते थे। एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर जिसमें मुबालगा (अतिशयोक्ति) बहुत होता था। ये अफसाने मनगढ़न्त और बेसिर पैर के होते थे। धीरे-धीरे उन्हें काक एण्ड बुल स्टोरी (Cock and Bull Story) कहने लगे। प्रेमचन्द और मजनू ने साथ-साथ कहा चलिये जनाब रघुपत से एक नयी जानकारी हासिल हुई।

मजनू ने कहा रघुपत यह बताओ थिंकिंग या सोचने या गौर करने का मकसद क्या है? सोचने में क्या होता है? प्रेमचन्द बोल पड़े मजनू साहब आज आपको क्या हो गया है, कैसे-कैसे सवाल उठ रहे हैं आपके मन में? मैंने इस सोचने पर जए का मकसद है चीजों का एक दूसरे से जोड़ने की कला या सलीका। वस्तुओं के आपसी सम्बन्धों को स्थापित करना और उनकी कद्र करना ही थिंकिंग का उद्देश्य है। इसके लिये सबसे खूबसूरत शब्द संस्कृत में है ''विचार''। विचार बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है। यह एक कुंजी है जिससे तिलिस्मों के दरवाजे खुलते हैं। वैसे थिंक, थिंग से ही निकला है। प्रत्येक वस्तु दिल में एक ख्याल को जन्म देती है। मैं कुछ और कहने जा रहा था कि बिना Paradox (विरोधाभास) के बात बनतीं नहीं। बात का दायरा विस्तृत हो जाता है। भाई, पैराडाक्स तो जीवन का अंग है। दरअसल बात ये है कि रघुपत का मिजाज बहुत दार्शनिक है और उनके ख्याल में हमेशा एक मौलिकता होती है। फिर लतीफे शुरू हुये। प्रेमचन्द के हँसने का अंदाज बड़ा विस्फोटक होता था। रह-रह कर बड़े जोर से हँस पड़ते, जैसे कोई धमाका फूट पड़े।

हम लोग सात बजे सुबह से बैठे और बातें शुरू हुई। नाश्ता खाया। बातों का सिलसिला दो बजे तक चलता रहा। हम लोग कभी-कभी उलझ भी पड़ते थे। नोक-झोंक भी खूब होती। लगभग ढाई बजे खाना खाया गया। खाना सबको बहुत पसन्द आया। मजनू तो कबाब की तारीफ करते थकते नहीं थे। प्रेमचन्द भी बहुत सराह-सराह कर खा रहे थे। खाना खत्म हुआ। मजनू ने कहा भाई अब जरा टाँगे पसार ली जाँय।

फिराक का बयान जारी था। लगभग पैंतालिस मिनट बाद हम लोग उठ बैठे। मुलाजिम को हुक्का ताजा करने का हुक्म दिया गया। गोरखपुर का कवामी और जाफरानी तम्बाकू अपनी दिलकश खुशबू के लिये दुनिया भर में नाम कमा चुका था। हुक्के की गुड़गुड़ाहट शुरू हुई। सवाल उठा शाम कहाँ और कैसे गुजारी जाय। तै पाया गया कि एक अच्छा खासा तांगा मँगवाया जाये और उस पर सवार होकर हम लोग स्टेशन चलें। वहाँ जैसा जी में आयेगा वैसा किया जायेगा। आदमी

भेजकर इलाही तांगे वाले को बुलाया गया। इलाही ने बड़े अदब से सलाम किया और पूछा कि उसके लिये क्या हुक्म है। मैंने कहा इलाहीमियाँ चार और सवा चार बजे शाम के बीच ताँगा सज सजाकर दरवाजे पर इन्तजार करे। ''जो हुक्म'' कहकर इलाही जाने के लिये मुड़े ही थे कि मैंने कहा इलाही मियाँ ताँगे पर सफेद चादर पड़ी हो। घोड़ा खा–पी कर खुश नजर आये और एक शर्त और चाबुक तो हाथ में जरूर हो मगर घोड़े को छूने न पाये। इलाही ने हाथ जोड़कर कहा ''जैसा हुक्म हो''। मगर तीसरी शर्त जरा मुश्किल है। कोशिश यही होगी कि घोड़ा इशारों पर चले और कोड़ा उसे छू न जाय। बहुत खूब इलाही मियाँ। याद रखियेगा। घोड़े की पीठ पर हर चाबुक मेरी पीठ पर पड़ने के बराबर होगा। इलाही चले गये। मजनू ने कहा – भाई ऐसी शर्तें मत रख दिया करो जो दूसरों पर गरां गुजरे। प्रेमचन्द जी बहुत ही संजीदा होते–होते नजर आ रहे थे। कह उठे एक दिल है कि जानवरों के लिये इस कदर प्यार से भरा है और सौदिल ऐसे हैं जो इन्सानों पर चाबुक बरसाने में आसूदगी, संतोष और ऐश्वर्य का अनुभव करते हैं। याद आ गई। थोड़ी देर में मुलाजिम ने आकर कहा कि इलाही ताँगे समेत हाजिर है। चाय खत्म हुई जेब में कुछ पैसे रखे और ताँगे पर हम सवार हो गये। इलाही मियाँ और घोड़ा मियाँ दोनों खुश थे और बड़े हाई स्पिरिट में थे।

ताँगा चल पड़ा। इलाही बड़े खुश मजाक और खुश मिजाज शख्श थे। रास्ते में कहानी किस्से सुनाते, खुशनुमा लोगों को देखकर फब्ती कसते, घोड़े मियाँ को घोड़ी साहिबा के साथ गुजारे दिनों की याद दिलाते और कहते जाते अगर आपने मेरी इज्जत रख ली यानी कोड़े को अपने से दूर रखा तो कल नयी नवेली घोड़ी से आपकी मुलाकात करा दूँगा और हरीभरी कुटी हुई दूब और उम्दा चने का नाश्ता होगा। घर पहुँचने पर अच्छी खासी पुश्तरवार (जिससे घोड़े की मालिश की जाती है) कुछ इसे खरहरा भी कहते हैं से मालिश होगी। बातों का लुफ्त उठाते, हचकोले खाते आगे बढ़ रहे थे। दिन धीरे–धीरे डूब रहा था। ताँगा एक गाँव से गुजर रहा था। एकाएक हम सबकी नजर सड़क के किनारे एक घर के सामने झुकी हुई आम की एक डाल पकड़े एक जवान गाँव वाली पर पड़ी। सर झुकाये किसी ख्याल में डूबी हुई दुःख की तसवी बन रही थी। इलाही समेत मजनू, प्रेमचन्द और मैं – सब के सब संजीदा हो गये। एक लम्हे में क्या से क्या हो गया। हंसता बोलता माहौल गमगीन हो उठा। एक तो शाम, ढलती हुई रौशनी, आम का दरख्त जो शाम की उदासी को कई गुना बढ़ा रहा था, सामने लेटी हुई, बीरान होती जा रही सड़क, चिड़ियों की अपने–अपने बसेरों की वापसी और हमें उस खूबसूरत जवान औरत के दुःख का बोझ जो जवानी में उसकी कमर खमीदा कर रहा था। हमारे दिलों में कई नश्तर एक साथ उतर गये। पूरा सफर स्टेशन तक खामोशी में बीता। न कोई किसी से कुछ बोल रहा था न किसी को किसी की कुछ खबर थी। पता नहीं क्या–क्या ख्याल उठ रहे थे। शायद घर में कोई गमी हो गई हो, शायद उसका शौहर बीमार हो और इलाज के लिये पैसे न हों, शायद उसके मायके से कोई आया हो और दुःखी समाचार लाया हो, शायद उसका किसी ने अपमान कर दिया हो, शायद उसके शौहर में पुरुषत्व की कमी हो, शायद गाँव में कोई अप्रिय घटना हो गई हो, शायद वह एक शायर का दिल रखती हो और उसके दिल पर सितारों के चमक की चोट उभर आई हो, शायद वाल्मीकि की तरह किसी कौंच का बध देख लिया हो या शायद गमें दुनिया का बोझ नाकाबिले बरदाश्त हो उठा हो। स्टेशन तक गये और चुपचाप इलाही को वापस लौट चलने का इशारा किया। सबके सब संजीदगी, मौन और दुःख की तसवीर बने वापस आ गये। बिना सलाम, दुआ एक दूसरे से जुदा हो गये।

बरसों यह वाकया हमारे दिलों में पलता रहा। कई शामें आयीं कई शामें गयीं। मगर उस शाम ने हमारे दिलों पर ऐसा कब्जा किया कि बस। फिर एक शाम यह शेर हुआ–

शाम भी धुवाँ–धुवाँ, हुस्न भी था उदास–उदास,
याद सी आ के रह गयी, दिल को कई कहानियाँ।

मजनू ने एक नावेल लिखा– सोगवारे शबाब या कुँवर कोट–प्रेम चन्द ने भी एक उपन्यास लिख डाला। वह शाम सबको कुछ न कुछ दे गई।

इलाही चार पाँच दिन बाद पैसा लेने आया तो उसने बताया कि सरकार उस शाम घोड़े ने घास नहीं खाई और ताँगे वाला भी (यानी मैं) बेखाये सो रहा।

यह बात तो यहीं खत्म होती है। तब मैं 1953–54 में बी0 ए0 में दाखिल ले चुका थ। इलाहाबाद युनिवर्सिटी में उन दिनों अमृत राय जी लगभग रोज ही फिराक के यहाँ आ जाया करते थे। वे उन दिनों राजापुर के पास एक किराये के मकान में रहते थे। पता चला कि शिवरानी जी (प्रेमचन्द की पत्नी) अमृत राय के यहाँ आई हैं और फिराक साहब से मिलना चाहती

हैं। मैं बहुत उत्सुक था उनका दर्शन करने के लिये। फिराक और मैं एक रिक्शे पर बैठकर अमृत राय जी के यहाँ पहुँचे। आँगन में शिवरानी जी बैठीं थीं। फिराक को देखते ही उनकी आँखों में आँसू उबल आये और फिराक का हाथ पकड़े बहुत देर तक बैठी रहीं। अमृत राय जी भी वहीं खड़े थे। भाषा मौन थीं। बड़ी देर बाद आँसू पोछते हुये, शिवरानी जी ने फिराक का हाल पूछा। फिर बीते दिनों की याद करने लगीं। फिराक लगभग आधे घंटे वहाँ बैठकर बाहर चले गये और ड्राइंग रूम में बैठ गये। बरामदे में अमृत राय जी ने कैक्टस का बाग सजा रखा था। बड़ी खूबसूरत क्राकरी में बड़ी दिलकश चाय पी जा रही थी और साथ में सुमधुर नमकीन भी। अंदर माहौल बड़ा संजीदा हो गया था। बातें घूम फिर कर प्रेमचन्द जी पर ही आ जाती थीं। फिराक ने कहा कि मैंने एक बार प्रेमचन्द से पूछा कि आपने कभी कोई इश्क किया है? प्रेमचन्द ने बताया कि कोई वाकया तो इश्क का नहीं है। हाँ हमारे लान में एक घसियारिन घास काटने आती थी। वह हमें बहुत अच्छी लगती थी। इजहारे इश्क की हिम्मत नहीं पड़ती थी। बस मैं उससे यही कह पाया—यहाँ भी घास है, वहाँ भी घास है, यहाँ भी घास है।

अपनी मिट्टी की गंध

श्रीमती रेनू शर्मा
(प्रख्यात कवियित्री, स्वतंत्र लेखन, काव्य संग्रह ''हृदयावली'' प्रकाशित)

मैं जब भी कहीं से लौटा हूँ –
'मेरा शहर'
बाँहे फैलाये करता है स्वागत।
यहाँ –
कितनी किलकारियाँ हैं, 'जन्मोत्सव' की।
कितनी शहनाईयाँ है, 'विवाह' की।
कितने आशीर्वाद है, 'बुजुर्गों के।
कितने अहसास हैं, तुनकमिजाजियों के।
कितनी मीठी नींदें हैं, 'सुख' की।
कितनी जागती राते हैं, 'पीड़ा' की।
कितने 'मातम' हैं, जो गीली कर देते हैं –
'आँखें'।
कितने अहसास हैं जो बढ़ा देते हैं –
'साँसे'।
कितनी गलियाँ है, जो गुदगुदा देतीं हैं –
'हृदय के तार को'।
कितनी बारिशे हैं, जो भिगोती है –
'मन की झंकार को'।
'कितने देव स्थान हैं', जो –
सुकून देते हैं अपनी दिव्यता से
'गंगा के घाट' – मोह लेते हैं
अपनी भव्यता से।
सचमुच ये सहृदय शहर –
मेरी हर अच्छाई और बुराई के साथ,
ओढ़ा देता है – 'अपनी गर्माहट भरी शाल'
'सर्दियों में' –
मैं जब भी कहीं से
लौटा हूँ।

मीरजापुर के साहित्य की श्रेष्ठ परम्परा

भवदेव पाण्डेय

(हिन्दी के ऋतुगीत पर शोध-प्रबन्ध,पूर्व हिन्दी प्रवक्ता, मूर्धन्य समीक्षक, 9 ग्रन्थ प्रकाशित, 2 प्रकाश्य, विद्या वाचस्पति, हि. सा. सम्मे., साहित्य भूषण उ.प्र. हि.सा. संस्थान (51 हजार रु0) तथा प्रथम् त्रिवेणी कजली सम्मान से अलंकृत, 82 वर्ष की आयु में भी साहित्य-सेवारत)

मीरजापुर में हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ परम्परा रामकथा वाचन से शुरु होती है। हालां कि भक्तिकाल और रीतिकाल में एक-दो प्रसिद्ध कवि यहाँ हुए हैं परन्तु वे साहित्य की परम्परा नहीं वना सके श्रेष्ठ साहित्य का तो बिलकुल नहीं।

श्रेष्ठ साहित्य की श्रेष्ठ परम्परा की स्थापना के लिए ऐसी रचनाधारा प्रवाहित की जानी चाहिए जो नियमित रूप से आगे ही आगे बढ़ती जाय।

आ0 रामचन्द्र शुक्ल ने कृष्णदास का नामोल्लेख रीतिकालीन कवियों में अवश्य किया है जिन्होंने सन् 1798 में ''माधुर्य लहरी'' की रचना की थीं और जिसमें विभिन्न छन्दों का प्रयोग करते हुए उन्होंने कृष्ण भक्ति का चित्रण किया था लेकिन मीरजापुर में कृष्ण भक्ति धारा का साहित्यिक स्वरूप परम्परा के रूप में नहीं विकसित हो सका।

यह एक आश्चर्यजनक बात है कि मीरजापुर में साहित्य रचना की श्रेष्ठ धारा रामकथा के माध्यम से शुरु हुई न कृष्ण भक्ति परम्परा द्वारा न देवी भक्ति परम्परा द्वारा जबकि कवि कृष्णदास ने ''माधुर्य लहरी'' के बाद ''भागवत माया'' और ''भागवत'' नाम से दो और रचनाएं की जिसमें कृष्ण कथा का वर्णन था।

रामकथा रचनाधारा की शुरुआत हरि सहाय गिरि ने ''रामाश्वमेघ'' और ''राम रत्नावली'' शीर्षक रचनाओं द्वारा प्ररम्भ की। ये लगभग 1802 में पैदा हुए थे। इनके बाद रामकथा प्रवचन और रामकथा के चरित्र को लेकर साहित्यिक ग्रन्थ लिखने की एक परम्परा ही बन गई। इन्हीं की परम्परा में विन्ध्याचल निवासी रूद्र प्रताप सिंह का भी नाम लिया जा सकता है जिन्होंने 1820 में ''कौशलपथ'' नामक काव्य पुस्तक द्वारा रामकथा का विकास किया।

रामकथा प्रवचन और रामकथा लेखन दोनों की अत्यन्त विशिष्ट रचना धारा बाबा रामगुलाम द्विवेदी द्वारा प्रारम्भ हुई। बाबा रामगुलाम द्विवेदी पूर्वांचल के सबसे बड़े राम कथा वाचक थे। इन्होंने राम कथा वाचन के साथ-साथ विपुल कृतियों की रचना की। इनके रचनाकाल की शुरुआत मूलतः 1843 से ही शुरु हो गई लेकिन इनका विकास भारतेन्दु युग तक होता रहा। इन्होंने 'संकटमोचन', 'बन्धरामायण', 'किष्किन्धा काण्ड' और 'विनयपंचक' शीर्षक किताबें लिख कर राम भक्ति सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसी के साथ-साथ ही वे कविता और सवैया के फुटकर छन्द भी लिखते रहे। इन्होंने अपनी 'रामरागोद्भव' पुस्तक में साहित्य और संगीत के एक रुपत्व पर अच्छा प्रकाश डाला है।

आ0 रामगुलाम द्विवेदी की भक्ति परम्परा का सबसे अधिक आदर काशी में किया गया। इन्होंने अपने शिष्यों की एक रचनात्मक मण्डली तैयार की जो इनके रचना सिद्धान्त पर चलते हुए अयोध्या, वाराणसी, मीरजापुर तथा आस-पास के अन्य जिलों में छा गए। इस प्रकार तुलसी की रचना पद्धति का वास्तविक विकास आ0 रामगुलाम द्विवेदी काल में ही हुआ था। आ0 रामगुलाम द्विवेदी की विशेषता यह थी कि वे लोक मंचों से रामकथा का प्रवचन तो करते ही थे साथ ही तुलसीकृत रचनाओं के आधार पर पुस्तकें भी लिखते रहे जिनमें परम्परा और मौलिकता दोनों का संनिवेश हुआ। बाबा रामगुलाम द्विवेदी के रचनात्मक परिवेश का निरूपण गोपाल सिंह ब्रजवासी द्वारा शुरु हुआ। इन्होंने 'तुलसी शब्दार्थ प्रकाश' लिखकर तुलसी के रामचरितमानस को विराट सामाजिकता तो दी ही साथ ही एक ऐसा लोक तैयार किया जो रामकथा साहित्य के प्रति समर्पित रहा। इन्हीं के साथ राम प्रसाद अग्रवाल और राम प्रकाश शर्मा भी राम भक्ति धारा के अच्छे कवि थे। अग्रवाल ने 'धर्मतत्व सार' चौंतीस अक्षरी और 'भक्त रस चौंतीसी' लिख कर राम भक्ति धारा को आगे बढ़ाया। इसी धारा के कवि थे चोपई बाबा जिन्होंने कवित्त सवैया के माध्यम से राम भक्ति की साहित्यिक परम्परा मे एक नई कड़ी जोड़ी। मीरजापुर में वन्दन पाठक से लेकर राम किंकर उपाध्याय तक तुलसी भक्ति धारा के अच्छे कवि रहे हैं। प्रेमघन युग की शुरुआत होने के बाद भी राम कथा धारा की रचना प्रक्रिया चलती रहीं। मुंशी छक्कन लाल और सीखड़ के राम प्रकाश श्रीवास्तव भी राम भक्ति काव्य धारा के विशिष्ट कवि थे।

राम भक्ति काव्यधारा लोक मंगल की आस्थापरक धारा थी। अतीत को वर्तमान का आधार बनाकर इसी धारा ने उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी जैसे साहित्यकार का निर्माण किया जिन्होंने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साथ मिलकर एक नई काव्यधारा प्रवाहित की जिसे राष्ट्रीय नवजागरण का नाम दिया गया। प्रेमघन ने कविता, निबन्ध, नाटक, आलोचना तथा लोकगीत जैसी विभिन्न विधाओं में लिखकर राष्ट्रीय नवजागरण का उद्घोष किया जो मीरजापुर के श्रेष्ठ साहित्य की दूसरी परम्परा बनी। अगर सच पूछा जाय तो डॉ0 काशी प्रसाद जायसवाल, आ0 रामचन्द्र शुक्ल और पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' भी इसी परम्परा के रचनाकार थे।

यद्यपि प्रेमघन युग में साहित्य रचना की एक बलवती तरंग सम्पूर्ण मीरजापुर के आप्लावित कर रही थीं, फलतः अनेक लोगों ने साहित्य सेवा का त्यागपूर्ण व्रत लिया था, परन्तु समय–देवता कितने लोगों को ढोते चलेंगे। इसलिए बहुत से नाम समय के गर्त में समा गए। इतने पर भी रामकथा धारा अवरुद्ध नहीं हुई। कोठ निवासी श्री सूर्य नारायण लाल कायस्थ, चुनार निवासी भानु प्रताप तिवारी, सरोई निवासी बोघई राम, मवैया के रहने वाले दाता प्रसाद कायस्थ, गोपीपुर (ज्ञानपुर) निवासी महाबीर प्रसाद मालवीय, माधव–रामपुर निवासी कृष्णानन्द पाठक, मीरजापुर निवासी गोस्वामी गोवर्धन लाल, पं0 वन्दन पाठक और मुन्शी छक्कन लाल के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों की कविताओं में जीवन की विविघता ओर काव्यात्मक चमत्कार भरा हुआ है। भानु प्रताप तिवारी ने लालित्यपूर्ण शैली में राजा भानु प्रताप, गुरु नानक शाह और कबीर साहब की जीवनियाँ लिखी, बिहारी सतसई की टीका लिखी तथा 'भक्तमालदीपिका' और 'भक्तमालदृष्टान्त दर्पण' में अपने साहित्यकार व्यक्तित्व को समय के वक्ष पर पटक दिया। कवि बोघई राम का जन्म सन् 1867 में हुआ था और इनकी काव्यकृति 'प्रताप विनोद' साहित्यिक महत्व का ग्रन्थ है। महाबीर प्रसाद मालवीय ने 'अभिनव विश्राम सागर', 'होली बहार' और 'बसन्त बहार' में अपने लोक बोध को अभिनवता प्रदान की। लोक चेतना और लोक शैली में एकरूपता स्थापित की। गोस्वामी गोवर्धन लाल वृन्दावन के बाद सत्ती बाजार मीरजापुर में रहने लगे और 'प्रेम प्रकाश' तथा 'हितपाठ' जैसी महत्वपूर्ण काव्य रचनाएं कीं। पं0 वन्दन पाठक तिवरानी टोला के निवासी थे। ये अपने परवर्ती काल में महाराजा ईश्वरी नारायण प्रसाद सिंह रामनगर के दरबार में चले गए। वहाँ जाकर रामचरित मानस पर अच्छी टीका की। इनकी रचना 'मानस–शंकावली' आज भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इनकी रचनाएं सन् 1893 से प्रकाश में आने लगीं।

कृष्णानन्द पाठक ने संस्कृत काव्य परम्परा की श्रृंखला में लगभग 700 मुक्तक छन्दों की रचना की है। इनकी कविताओं में सांस्कृतिक नवजागरण के साथ ही प्रकृति के मनोरम रुपों की अभिव्यक्ति हुई। मीरजापुर के आंचलिक क्षेत्रों में भी साहित्य की श्रेष्ठ परम्परा का निर्वाह हुआ। अहरौरा बाजार के हनुमान प्रसाद वैश्य ने छः कविता ग्रन्थों की रचना की। इसके अतिरिक्त इनके स्फुट छन्द भी पाए जाते हैं। इनका जन्म सन् 1881 में हुआ था। 'जानकी स्वयंवर', 'दुर्गा प्रभाकर', 'चन्द्रावती', 'हनुमान हाँक', 'चन्द्रकला चन्द्रिका' और 'कविता सुधा' इनकी प्रमुख रचनाएं हैं। इन्होंने रीतिकालीन शैली में 'कविता सुधार' शीर्षक काव्य–कृति में सैद्धान्तिक विवेचना भी किया है।

मीरजापुर में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–युग साहित्यिक अभियान का काल रहा है। आम आदमी से लेकर अभिजात वर्ग तक के लोगों में साहित्य संगोष्ठियों की शुरुआत हुई जो साहित्य–रचना–धारा को नई जमीन देने वाली सिद्ध हुई। कविता, आलोचना, निबन्ध और कहानी पर बहस करके पं0 रामचन्द्र शुक्ल ने जिन साहित्य–व्यक्तित्वों का निर्माण किया उनमें तीन नामों को बहुत महत्व मिला। 'प्रेमघन की छाया स्मृति' शीर्षक लेख में उन्होंने पं0 केदार नाथ पाठक, बद्रीनाथ गौड़ और पं0 उमाशंकर द्विवेदी की सर्जनात्मकता की बड़ी प्रशंसा की।

बुन्देलखण्डी के भगवानदास हालना, ब्रजराज कटरा के गोस्वामी बावनाचार्य और पं0 केशव प्रसाद उपाध्याय, वासलीगंज के प्रमथ नाथ भट्टाचार्य और वंग महिला इस काल की साहित्यिक विभूतियाँ थीं। 'सरस्वती', 'मर्यादा', 'माधुरी' और 'अभ्युदय' के तत्कालीन अंक इनकी साहित्यिक प्रतिभाओं के साक्षी हैं।

पुरातत्वविद डॉ0 काशी प्रसाद जायसवाल ने भाषा, पुरातत्व और तत्कालीन सांस्कृतिक परिवेश का विवेचन जिस तार्किक ढंग से किया वह हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। इसके लिए पं0 महाबीर प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' बहुत कुछ बोलती है। इसमें सब लोग एकमत है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बिना आधुनिक हिन्दी साहित्य निपुत्र कहलाएगा।

देखा जा सकता है कि साहित्यिक यात्रा में मीरजापुर का स्थान अपने आप देदीप्यमान हो उठता है। कहानी के विकास क्रम में वंग महिला की 'दुलाईवाली' कहानी यात्रा का आरम्भ कराने वाली कहलाती है। पं0 केदार नाथ पाठक ने

यहाँ से वाराणसी जाकर नागरी प्रचारणी सभा के माध्यम से साहित्य–उद्धार में विशेष योगदान किया। गोस्वामी बावनाचार्य गिरि के नाटक और छूबलाल भट्ट की नाट्य–कृतियां आज भी साहित्यिक मूल्य की बनी हुई हैं। अयोध्या प्रसाद मालवीय, घनश्याम आचारी और रामनाथ भी उस काल के प्रमुख साहित्यकार थे। यदि इन लोगों की कृतियों की खोज करके सापेक्ष मूल्यांकन किया जाय तो हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ साहित्यिक परम्परा का अच्छा ज्ञान हो सकता है।

गऊघाट के महादेव प्रसाद सेठ ने 'मतवाला' साप्ताहिक के माध्यम से मीरजापुरी साहित्य–धारा को गति दी। महाकवि निराला ने स्वयं स्वीकार किया था कि 'मतवाला' न होता तो निराला भी न होता। सच तो यह है कि बाबू महादेव प्रसाद सेठ ने पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, शिव पूजन सहाय, मुन्शी नवजादिक लाल श्रीवास्तव और पं0 नन्दकिशोर जैसे उच्चकोटि के साहित्यकारों के लिए उत्कृष्ट सर्जनात्मक वातावरण तैयार किया।

पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र इस जनपद के चुनार तहसील जलालपुर गाँव के निवासी थे। इन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं को अपनी रचना का आधार बनाया। पं0 शिवदास मालवीय इस जनपद के बहुमुखी लोक चेतना के साहित्यकार थे। कवित्त, सवैया तथा लोकगीतों के माध्यम से इन्होंने बड़ी भावुक रचनाएं की हैं। 'कवि साहस', 'अंगदपैज', 'सुधा सिन्धु', 'श्रावण श्रृंगार' और 'फागुन महात्म्य' में इन्होंने ऋतुओं की सरस अभिव्यक्तियां की हैं।

मीरजापुर के साहित्यकारों में शिवपुर के अनन्तराम महापात्र, वासलीगंज के भजगोविन्दम्, सरजू प्रसाद उमर वैश्य, मिशन कम्पाउण्ड के शिव नारायण सिंह, डंकीनगंज के वृन्दावन गुप्त, छविराम कसेरा, शीतला प्रसाद बरनवाल, बदली कटरा के वैद्यनाथ ऊमर वैश्य, नेवढ़िया ग्राम के राम हित उपाध्याय, इमलहा के शिव पूजन लाल, कछवाँ के बिन्देश्वरी प्रसाद गुप्त, अनगढ़ के कृष्णदेव केसरवानी, इमली महादेव के सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी', सीखड़ के शम्भू नाथ चतुर्वेदी, कसरहट्टी के जयदेव वर्मा 'इन्दु', वासलीगंज के कृपा शंकर द्विवेदी, बेलतर के सीताराम बरनवाल, सीताराम ऊमर वैश्य, गणेशगंज के चन्द्रशेखर शुक्ल, दुर्गा बाजार के किसुन लाल केसरवानी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन लोगों से कुछ ही पहले गऊघाट के हनुमान दत्त द्विवेदी और नबालक तबेला के मनोहर दास रस्तोगी कविता के क्षेत्र में ख्याति अर्जित कर चुके थे। इन्हीं के साथ पं0 रघुबीर दत्त शाकद्वीपी, बेलतर के नवीनदास अग्रहरी और बाबा जी घाट के बालकृष्ण दास भी श्रेष्ठ लेखन के प्रति समर्पित थे।

साहित्यिक मूल्य में चाहे बड़ी ऊँचाई न भी हो लेकिन कुशवाहा कान्त के उपन्यासों ने किस पाठक का दिल नहीं स्पर्श किया। महुवरिया निवासी कुशवाहा कान्त ने हिन्दी साहित्य को बहुत से उपन्यास दिए। कहानियों पर डा0 कृष्ण लाल का शोध प्रबन्ध मानक मूल्य रखने वाला माना जाता है। ये सीखड़ ग्राम निवासी थे। निबन्ध लेखन क्षेत्र में इन्होंने यश कमाया इनके शिष्य डा0 शीतकण्ठ भी सीखड़ के रहने वाले हैं। इन्होंने भी कहानी समीक्षा पर अच्छा कार्य किया है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में इनके समीक्षात्मक निबन्ध अब भी देखने को मिल जाते हैं।

इस प्रकार मीरजापुर में साहित्य की जिस श्रेष्ठ परम्परा की स्थापना हुई वह आज भी अपनी रचनात्मक भूमिका निभा रही है।

समसामयिक साहित्य चेतना की श्रेष्ठ श्रृंखला को आगे बढ़ाने में मीरजापुर साहित्यकार परिषद ने पूरी जिम्मेदारी का परिचय दिया। इस परिषद का गठन यहाँ के प्रसिद्ध कवियों हरिनाथ शर्मा वैद्य, प्रताप विद्यालंकार, छंगामल जैन 'अटल', फूलचन्द जायसवाल, रूद्रमणि पाण्डेय, आनंद दूबे, केसरी कुमार मेहरोत्रा ने किया। इस साहित्य परिषद में कछवा निवासी कमलाधर शास्त्री जैसे कवि रहे हैं जिनकी कविताएँ कई प्रदेशों की सरकार द्वारा पुरस्कृत हुई थीं। इस परिषद के श्री प्रताप विद्यालंकार अत्यन्त प्रतिभाशाली कवि और समीक्षक रहे हैं। हिन्दी की लगभग सभी पत्र पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ छपी है। इन्होंने रूसी भाषा के तीन उपन्यासों का अनुवाद भी किया है। इस जनपद में नयी कविता के ये सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। इनकी कविताओं में सामाजिक चेतना की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। इस साहित्य परिषद ने पूरे जनपद में कविता और कहानी का जो वातावरण तैयार किया उस वातावरण की कड़ी आगे ही आगे बढ़ती चल रही है।

इस प्रकार मीरजापुर में साहित्य की जिस श्रेष्ठ परम्परा की स्थापना हुई वह आज भी अपनी रचनात्मक भूमिका निभा रही है। ☐

वर्तमान में श्री चन्द्र शेखर मिश्र, नवगीतकार श्री गुलाब सिंह सहित अनेक प्रतिष्ठित एवं प्रतिभाशाली रचनाकारों ने हिन्दी साहित्य को नई गरिमा प्रदान की है, जिनमें से कुछ की श्रेष्ठ रचनाएं इस स्मारिका में संग्रहीत हैं।

–सम्पादक

प्रकृति का चितेरा एक कलाकार-विनोद कुमार सिंह

श्रीमती नन्दिता सिंह

धर्मपत्नी श्री विनोद कुमार सिंह .सुप्रसिद्ध चित्रकार जिनकी कलाकृतियाँ देश-विदेश में प्रदर्शन एवं प्रशंसित/मिरजापुर के मूल निवासी

"पानी की गिरती बूदों से, पत्थर को कटते देखा है।
पत्थर सी चट्टानों पर भी, जीवन को उगते देखा है।।"

यह कहना है कलाकार श्री विनोद कुमार सिंह का, और प्रकृति की इस विसंगति को कलाकार ने बहुत ही नजदीक से देखा और महसूस किया है। यही विसंगतियाँ उनके चित्रों में बरबस ही उतरती चली गयी हैं। उनके प्रत्येक कलाकृति में लाइट एवं शेड्स का अनूठा संगम है, यही खूबी उनकी कलाकृतियों को सुन्दरता की पराकाष्ठा पर ले जाती है जिसे देखकर हर कोई "क्या बात है" कहने को मजबूर हो जाता है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से मास्टर आफ फाइन आर्ट्स (एम. एफ. ए.) गोल्ड मेडल की डिग्री लिये मिरजापुर के श्री विनोद कुमार सिंह ने अपनी अमूल्य कृतियों से अपना ही नहीं बल्कि अपने जिले का नाम भी देश-विदेश में मशहूर किया है। उनका कहना है विन्ध्य की पहाड़ियों ने उनकी सोच और जीवन को नई दिशा दी है और शायद प्रकृति के इस अजीबो गरीब मेल ने ही उनके मन के कलाकार भाव को इतना विकसित और पुलकित किया है।

उनका कहना है कि पत्थर पर उगे फूल, पहाड़ियों से गिरते झरने और उनसे बनने वाले मोहक दृश्य बरबस ही मेरे मन को झकझोर देते हैं और मुझे प्रकृति की गोद में रहने को विवश कर देते हैं, साथ ही जीवन की सच्चाई का एहसास कराते हैं।

प्रकृति और संस्कृति का यही अनूठा सम्मिश्रण विनोद जी के चित्रों में भी साफ झलकता है। देश के कई भागों में अपनी एकल चित्रकला प्रदर्शनी के माध्यम से काफी ख्याति अर्जित कर विनोद जी ने ग्रामीण परिवेश को भी अपनी कला का अंग बनाया है। ग्रामीण परिवेश को चित्रित करते समय कलाकार ने नारी की विभिन्न भाव भंगिमाओं को बखूबी चित्रित किया है। उनके दुःख-दर्द, रहन-सहन और संस्कृति को बहुत ही खूबसूरती से अपने कैनवस पर कैद करने की कोशिश की है।

नारी पीड़ा और उनके व्यक्तित्व को सिर्फ पेन्सिल के माध्यम से भी कलाकार ने एक नयी अभिव्यक्ति दी है। अपनी एक कृति में कलाकार ने सिर्फ कपड़ों के फोल्ड से ही भारतीय नारी उनकी दशा और उनकी संस्कृति के महत्वपूर्ण पक्षों को चित्रित किया है और अपनी इस कृति के लिये राज्य सरकार से सम्मानित भी हो चुके हैं।

अपनी प्रदर्शनी की अगली कड़ी में कलाकार ने विन्ध्य की पहाड़ियों के अमूर्त रूप को बहुत ही तन्मयता और सजीवता के साथ मूर्त रूप में चित्रित किया है। यह प्रदर्शनी मुम्बई के होटल (ओबेराय शेरेटन) में प्रदर्शित हो चुकी है जहां से विदेशों में भी विन्ध्य की पहाड़ियाँ कला के माध्यम से अपनी पैठ बना चुकी हैं।

स्वप्न और कलाकार का चोली दामन का साथ है। सपनों की दुनियाँ में खोया रहने वाला कलाकार जब हकीकत के धरातल पर उतरता है तो कैनवस पर बिखरे रंगों की छटा एक नवीन छवि लिये प्रतीत होती है। बनारस के घाटों को चित्रित करते समय शायद कलाकार ऐसी ही भावनाओं में बहका दिखाई देता है। ऐसा उनकी बनारस पर बनीं कृतियों को देखकर महसूस होता है चाहे बनारस की गलियाँ हों, घाट हो, मंदिर हों। बनारस की सुबह, हर जगह कलाकार अपने सपनों के बनारस को ही खूबसूरती प्रदान करता दिखाई देता है। बनारस के घाट तो कलाकार के रग-रग में रचे बसे दिखाई देते हैं। शायद इसीलिये बनारस और घाटों के चित्रण के समय कलाकार की तूलिका और ही मुखर हो उठती है।

विनोद जी का मानना है कि कलाकार की अपनी स्वयं की प्रकृति और प्रवृत्ति उसके विषयों को बेहद प्रभावित करती है। इसके अलावा कलाकार अपने विषय, दैनिक जीवन की निजी घटनाओं, अनुभवों तथा बदलते सामाजिक परिवेश से लेता है। सुनामी लहरों की विभीषिका, वाराणसी बमकाण्ड आदि अनेक घटनाओं पर चित्रकार की उठी तूलिका कलाकार के सामाजिक पक्ष को बखूबी बयां करती है।

बड़ी संख्या में देखी व सराही गई जी0 डी0 बिड़ला प्रेक्षागृह, लायन्स स्कूल मिरजापुर में आयोजित एकल चित्र प्रदर्शनी व बच्चों का वर्कशाप कलाकार विनोद जी की अपनी मातृभूमि के प्रति आदर व श्रद्धा का परिचायक है। आप इस समय में आदित्य बिड़ला ग्रुप के ए0 बी0 पी0 एस0 इण्डोगल्फ, जगदीशपुर में फाईन आर्ट्स विभाग के विभागाध्यक्ष हैं। आपकी हाल ही में व्यक्ति चित्रों की समूह प्रदर्शनी लखनऊ के राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र में 6 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक आयोजित हुयी थी जिसका शुभारम्भ पद्मश्री डा0 गोपाल दास नीरज ने किया था। इस प्रदर्शनी में राज्य के कई सम्मानित कलाकारों की उत्कृष्ठ कृतियाँ प्रदर्शित की गयी थीं।

गत 11 नवम्बर 2006 से विनोद जी के चित्रों की बृहद प्रदर्शनी सिगांपुर के होटल ''द सांग आफ इण्डिया'' में लगी है जो 20 जनवरी 2007 तक जारी रहेगी। हजारों की संख्या में देशी-विदेशी नागरिक, कलाकृतिओं को देख कर आत्मविभोर हो रहे है। आन द स्पाट पोर्ट्रेट चित्रण द्वारा दर्शकों पर विनोद जी अपनी अमिट छाप छोड़ने में सफल रहें। ❑

राजस्थानी नृत्य-संगीत (तैल चित्र)
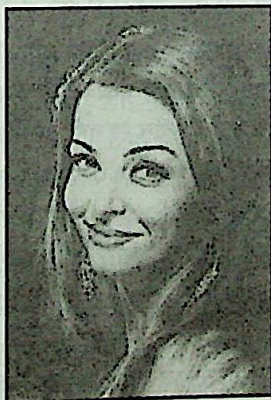
ऐश्वर्या राय (तैल चित्र)
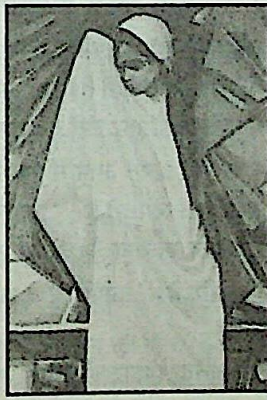
गंगा घाट पर साड़ी पहनती (तैल चित्र)
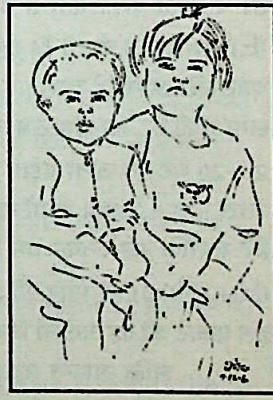
विनोद कुमार सिंह द्वारा बनाये गये रेखांकन

माता अमृतानन्दमयी : अम्मा

मोहन लाल आर्य

(भौतिक वैज्ञानिक, सेवा निवृत प्रधानाचार्य
अध्यात्म में विशेष अभिरूचि, त्रिवेणी कोषाध्यक्ष)

माता अमृतानन्दमयी देवी को उनके भक्त लोग अम्मा कहते हैं। अम्मा यानि माँ (Mother) अपने भक्तों के लिये वे सारमौमिक माँ (Universal Mother) हैं। वे करुणा की प्रतिमूर्ति हैं – ऐसी करुणा जो शायद ही कहीं देखने को मिले। केरल निवासी दत्तन बचपन से कुष्ठ रोग से ग्रसित था। उसके शरीर भर में कोढ़ था। घावों से खून–पीव बहते रहते थे। उसके शरीर से बदबू आती थी। उसके माँ–बाप तक ने उसे घर से निकाल दिया। वह भीख माँगता था। दूसरे भिखारी उसे अपने पा बैठने नहीं देते थे। वह अम्मा के दर्शन के लिये गया। उसकी दशा को देख कर लोगों ने अम्मा के पास नहीं जाने दिया। शोर गुल सुनकर अम्मा का ध्यान उसकी ओर गया। उन्होंने उसे बुलाया। गरम पानी से नहलाया। फिर उसके घावों को चूसा। खून और पीव को थूका। इस क्रिया को देखकर बहुत से लोग बेहोश हो गये। कुछ को कै होने लगी। लोगों ने अम्मा से पूछा – "यह आप क्या कर रही हैं?" उन्होंने कहा – "अम्मा अपने बच्चे को प्यार कर रही है। लोगों ने उसे त्याग दिया है। लेकिन माँ अपने बच्चे को कैसे त्याग सकती है?" ऐसा ईश्वरीय प्यार संसार के कितने लोगों में होता है? लोग उनसे पूछते हैं – "आप का धर्म क्या है?" वे उत्तर देती हैं – "प्यार (Love) ही मेरा धर्म है। दीन–दुखियों की सेवा ही मेरा धर्म है। प्रभु ने इसीलिये मुझे भेजा है और मैं वही कर रही हूँ। मेरे लिये जाति, धर्म, देश, विदेश का कोई अर्थ नहीं है। मेरे लिये सब अपने हैं। सभी अम्मा के बच्चे हैं।" वे अपने को शरीर से अलग मानती हैं। इसलिये अन्य पुरुष (Third Person) में बात करती हैं। वे यह नहीं कहतीं कि तुम लोग मेरे पास आओ। मैं तुम्हारे साथ हूं। वे कहती हैं – "तुम लोग अम्मा के पास आओ। अम्मा तुम्हारे साथ है।" उन्हें इस बात का भलीभाँति बोघ है कि वे शरीर नहीं हैं – आत्मा हैं। इसीलिये ऐसा कहती हैं और करती हैं।

सभी महापुरुष अपने भक्तों को, अनुयायिओं को दर्शन देते हैं। दर्शन के समय या तो लोग उन्हें दूर से प्रणाम करते हैं या अधिक से अधिक उनके चरण स्पर्श करते हैं। इसमें घंटा आध घंटा लगता है। लेकिन अम्मा के दर्शन की विधि अलग है। वे जैसा दर्शन देती हैं वैसा शायद ही किसी ने दिया हो। वे हर दर्शनार्थी को गले लगाती हैं। उसका आलिंगन (Embrace) करती हैं। वह चाहे गरीब हो या अमीर, नारी हो या पुरुष, वृद्ध हो या युवा, किसी देश का राष्ट्राध्यक्ष हो या चपरासी। अम्मा के दरबार में कोई भेद–भाव नहीं है। एक अनुमान के अनुसार अब तक वे लगभग 5 करोड़ लोगों को गले लगा चुकी हैं। जब तक सब लोग दर्शन नहीं कर लेते तब तक वे अपने स्थान से नहीं उठतीं। इस क्रिया में कभी–कभी उन्हें 20–20 घंटे बैठे रहना पड़ता है। यह भी अपने आप में एक रिकार्ड हैं, एक चमत्कार है। एक बार B.B.C. के रिपोर्टर ने उनसे पूछा – "आप लोगों को गले क्यों लगाती हैं?" उन्होंने प्रति उत्तर दिया – "नदी क्यों बहती है? चिड़ियाँ क्यों गाती हैं? क्योंकि यह उनका धर्म है। उनका स्वभाव है। अम्मां अपने बच्चों को प्यार नहीं करेगी तो कौन करेगा? आलिंगन (Hugging) मेरे प्यार की अभिव्यक्ति है।" इसीलिये वे संसार भर में Hugging Saint के नाम से जानी जाती हैं। इस प्रकार की वह अकेली विभूति हैं।

शक्ति सम्पन्न महापुरुष अनेक प्रकार से लोगों की आघ्यत्मिक शक्तिओं का जागरण करते हैं। इस क्रिया को 'शक्तिपात' कहा जाता है। इसकी अनेक विधियाँ हैं जैसे छूकर, देखकर, प्रसाद देकर, आशीर्वाद देकर आदि। अम्मा आलिंगन (दर्शन) द्वारा लोगों की सुप्त आघ्यात्मिक चेतना को जगाती हैं। जो जैसा पात्र होता है उसी के अनुसार उनकी करुणा, दया, शक्ति क लाम पाता है।

अम्मा संसार भर में कितनी लोकप्रिय हैं इसका पता इसी से चलता है कि सन् 2003 में जब उनकी स्वर्ण जयन्ती (Golden Jubilee) मनायी गयी थी तो उसमें 191 देशों के लोगों ने भाग लिया था। उसकी जो कमेटी बनी थी उसमें भूतपूर्व राष्ट्रपति आर0 वेंकट रमन के अलावा भूतपूर्व प्रधान मंत्री पी0 वी0 नरसिंह राव, चन्द्र शेखर, देवगौड़ा भूतपूर्व उपराष्ट्रपति नज़मा हेपतुल्ला जैसे लोग और अन्य केन्द्रीय मंत्री तथा अनेक प्रान्तों के मुख्यमंत्री उसके सदस्य थे। वे एक ऐसी विभूति हैं जिनका आशीर्वाद पाने के लिये अनेक देशों के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति तक लालायित रहते हैं।

विश्व–धर्म सम्मेलनों एवं संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O) द्वारा अम्मा सम्मानित की जा चुकी हैं। सन् 1993 में शिकांगो के विश्व–धर्म–संसद में अम्मा तीन सभापतियों में से एक सभापति चुनी गयी थीं। सन् 1995 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर–धर्म–समारोह (Inter-Religion-Assembly) को सम्बोधित करने के लिये अम्मा को आमंत्रित किया गया था। सन् 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल असेम्बली में हुये शांति सम्मेलन में अम्मा को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

'माता अमृतानन्दमयी मठ' एक पंजीकृत, लोक धर्मार्थ न्यास (Public Welfare Trust) है जिसकी शाखाएँ एवं सेवा–केन्द्र (Servic Centre) सम्पूर्ण भारत या विश्व में फैले हुये हैं जो जाति, धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर मानव की सेवा में समर्पित है। सेवा साधना का अभिन्न अंग है – मानव सेवा ही माधव सेवा है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित संस्थाएँ कार्यरत हैं–

अमृत निकेतन अनाथालय :- केरल के पारीपल्ली और मदुराई में चलाये जा रहे अनाथालयों में लगभग 600 अनाथ बच्चों को आश्रय प्रदान किया गया है।

अमृता संस्कृत विद्यालय:- अमृता संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केरल के कोल्लम जिले के सबसे सफल स्कूलों में से एक है जिसमें संस्कृत एवं मलयालम में माध्यमिक स्तर की शिक्षा दी जाती है।

अमृत कुटीरम आवास योजना :- इस योजना के अन्तर्गत विधवाओं, वृद्धों, विकलांगों एवं समाज के निम्न वर्ग के लोगों के लिये 25,000 मकानों के निर्माण की रूप रेखा है जिसमें से 5000 लोगों को सन् 1998 में तत्कालीन प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा मकान दिये जा चुके थे।

अमृत निधि :- 50,000 विधवाओं एवं बेसहारा महिलाओं के लिये यह एक पेंशन योजना है। इसके अन्तर्गत 17,000 महिलाएँ केरल में पेंशन पा रहीं हैं। इस योजना को पूरे देश में लागू करने का प्राविधान है।

चिकित्सा शिविर :- मठ की सभी शाखाओं में समय–समय पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगते हैं। रोग विशेषज्ञ डाक्टर मरीजों की जाँच करते हैं और निःशुल्क दवा दी जाती है।

अन्नदान :- अनेक केन्द्रों के माध्यम से मठ प्रत्येक सप्ताह लगभग 5000 गरीबों को भोजन कराता है।

समाज कल्याण:- हर वर्ष सैकड़ों बच्चों, औरतों एवं जरूरत मंदों को वस्त्रदान, शैक्षणिक सहायता, छात्रवृत्ति और वर्दी (Uniform) आदि प्रदान किये जाते हैं। साथ ही साथ रक्तदान अभियान चलाना, प्राकृतिक चिकित्सा की कक्षाएँ चलाना, मनोरुग्ण एवं गरीब मरीजों की सेवा करना इसके क्षेत्र में आता है।

अम्बुइल्लम:- अम्बुइल्लम का अर्थ है वृद्धाश्रम। शिवकाशी में एक वृद्धाश्रम है जिसमें व्यक्तिगत कमरे, प्रार्थना–कक्ष, मनोरंजन कक्ष, भोजन कक्ष, पुस्तकालय, अध्ययन कक्ष एवं बागवानी शामिल है।

अमृत कृपा धर्मार्थ अस्पताल:- अमृतपुरी में स्थित यह अस्पताल निःशुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान करता है। इसमें गरीबों को मुफ्त दवाएँ दी जाती हैं। हर महीने लगभग 10,000 रोगियों की चिकित्सा की जाती है।

अमृत कृपा सागर:- मुम्बई के समीप स्थित बदलापुर में 'अमृत कृपा सागर अस्पताल' है जो कैंसर से पीड़ित गरीब एवं उपेक्षित रोगियों की सेवा करता है।

अमृता गुरुकुलम:- पालक्कड़ जिले में स्थित अट्टपाड़ी जनजाति क्षेत्र में 15 पाठशालाएँ हैं जिन्हें अमृता गुरुकुल कहा जाता है। इन विद्यालयों में आदिवासी बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा दी जाती है।

अमृतावाणी एवं श्रवण सुधार विद्यालयः- इस विद्यालय में मूक एवं बधिर बच्चों में वैज्ञानिक ढंग से बोलने एवं संदेश-संचारण की क्षमता विकसित की जाती हैं। इन्हें कला एवं नृत्य के क्षेत्र में भी प्रोत्साहित किया जाता है।

अमृता इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एवं रिसर्च सेंटर (AIMS)- यह आधुनिकतम उपलब्ध संसाधनों से परिपूर्ण अस्पताल है जिसमें सारे संसार से आये पूर्ण कालिक, उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्राप्त डाक्टर हैं। इसमें भी गरीबों को निःशुल्क सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

माता अमृतानन्दमयी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रः- अनेक व्यवसायों के लिये संस्था आदर्श तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करती है।

अमृता इन्स्टिट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेजः- यह संस्था दो वर्षों का उच्चस्तरीय डी0 फार्मा पाठ्यक्रम प्रदान करती है।

अमृता इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंसेजः- यह इंजीनियरिंग कालेज स्नातक (B.Tec) एवं स्नातकोत्तर (M.Tec) स्तर की शिक्षा देता है। यह भारत की पहली ऐसी निजी संस्था है जिसमें सुपर कम्प्यूटर – 10,000 की सुविधा उपलब्ध है।

अमृता इन्स्टिट्यूट ऑफ एडवान्स्ड कम्प्यूटरिंगः- यह संस्था उच्च कम्प्यूटरिंग में पोस्टग्रेजूएट डिप्लोमा प्रदान करती है।

अमृता इन्स्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंटः- यह दो वर्षीय आवासीय स्नातकोत्तर प्रबन्धन कार्यक्रम की शिक्षा देती है।

अमृता इन्स्टिट्यूट ऑफ कम्प्यूटर टेक्नोलॉजीः- यह संस्था कम लागत में उच्चस्तरीय कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान करती है।

आश्रम की भावी योजनाएँः- 1. देश के एड्स रोगियों के लिये अस्पताल। 2. ग्रामीण इलाकों में जन-सुविधाओं एवं स्नानगृहों का निर्माण। 3. ऐसे 5000 युवकों के लिये कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र जो आधुनिक शिक्षा का भार नहीं ग्रहण कर सकते। शर्त बस इतनी है कि नौकरी पाने पर वे अपने जैसे किसी गरीब छात्र को प्रशिक्षण दिलवा देंगे। 4. मोबाइल मेडिकल यूनिट – जो दूर दराज के गाँवों के गरीबों को मेडिकल सुविधा उपलब्ध करावे।

आपात कालीन सेवाः- 1. गुजरात के भूकम्प पीड़ितों की आश्रम ने भरपूर सेवा की थी। दवाएँ दी थी, मकान बनवाये थे, कुछ गाँवों को गोद लिया था। 2. सुनामी के पीड़ितों के लिये 100 करोड़ (1 अरब) रुपये दिये थे।

कितने आश्चर्य की बात है कि जो आज लाखों को रोटी-रोजी दे रही हैं, उच्च शिक्षा प्रदान कर रही हैं उनका बचपन बड़े कष्टों में बीता था। अम्मा का जन्म 27 सितम्बर 1953 को केरल के एक गाँव अलप्पाड में एक गरीब मछुआरे परिवार में हुआ था। गरीबी के कारण वे कक्षा चार तक ही पढ़ पायीं। वे काले रंग की है। अतः उनके माता-पिता उनकी बड़ी उपेक्षा करते थे। कसाई की तरह काम लेते थे। बात-बेबात मारते थे। कभी हाथ से, कभी पैर से, कभी मूसल से तो कभी पेड़ में बाँध कर। कुछ दिनों के बाद तो उन्हें घर से निकाल भी दिया। वे खुले आसमान के नीचे जमीन पर पड़ी रहती थीं। उस समय एक गाय उन्हें बछड़े के समान अपने थन से दूध पिलाती थी। एक कुत्ता उनकी रक्षा करता था। गहरी समाधि से साम्यावस्था में लाने के लिये एक साँप उनके शरीर पर रेंगता था। उनका जन्म का नाम सुधामणि था। सन् 1981 में उनके एक ब्रह्मचारी शिष्य ने उन्हें 'माता अमृतानन्दमयी' के नाम से नवाजा। वे अवतारी सत्ता हैं। जन्म के समय वे मुस्करा रही थीं। वे जीवन-मुक्त कोटि की विभूति हैं। एक दिन देवी माँ उनके सामने प्रकट हुयीं। प्रकाश रूप में उनमें समा गयीं और अंतर से आवाज आयी "तुम्हारा जन्म पीड़ित मानवता की सेवा के लिये है। मैं सभी जीवों में वास करती हूँ। सभी जीवों के हृदय में अवस्थित मेरी आराधना करो।" और तभी से अम्मा मानवता की सेवा कर रही हैं। अम्मा ने एक और क्रांतिकारी काम किया है। उन्होंने दक्षिण के मन्दिरों में महिलाओं को पुजारी बनाया है। ☐

> "आदमी वो नहीं हालात बदल दे जिनको
> आदमी वो हैं जो हालात बदल देते हैं"

त्रिवेणी परिवार

30122006

प्रथम पंक्ति (बायें से) : सर्वश्री विश्वेश्वर नाथ अग्रवाल, के. के. मिश्रा, गुलाब चन्द तिवारी, शम्भू नाथ अग्रवाल, पं. उमाकान्त मिश्र, किशन बुधिया (संयोजक), भगवती प्रसाद चौधरी, कैलाश नाथ खण्डेलवाल, रामजी सिंह गौतम

द्वितीय पंक्ति (बायें से) : सर्वश्री के. एन. माली, डॉ. आर. सी. दुआ, प्रभु नारायण श्रीवास्तव, प्यारे लाल अग्रवाल, श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल, शकुन्तला बुधिया, सत्या शर्मा, डॉ. भावना दुआ, सर्वश्री विनय गुप्ता, ओम प्रकाश सिंघानिया

तृतीय पंक्ति (बायें से) : सर्वश्री डॉ. के. एन. त्रिपाठी, शिवरतन रामरंग, बाँके बिहारी लाल श्रीवास्तव, लालव्रत सिंह 'सुगम' गणेश लाल विश्वकर्मा, बंशीलाल गुप्ता, डॉ. रामशरण सेठ, हरिओम भार्गव, संगम लाल अग्रवाल, रामकृष्ण गुप्त, डॉ. सच्चिदानन्द तिवारी, शशिकान्त मिश्र, एस. पी. शर्मा, अमानुल्ला अन्सारी

मिरजापुर के दर्शनीय पर्यटन स्थल

माँ विन्ध्यवासिनी

भगवान बावन (ओझला)
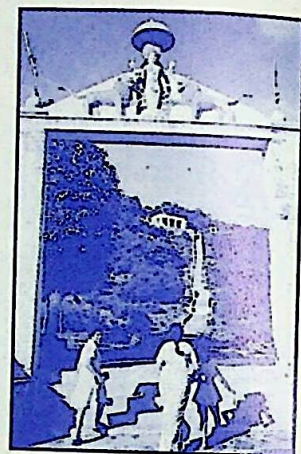
नन्दजा मन्दिर

अष्टभुजा बंगले से गंगाघाटी
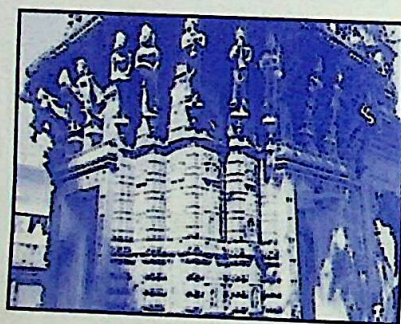
बरियाघाट शिव मन्दिर
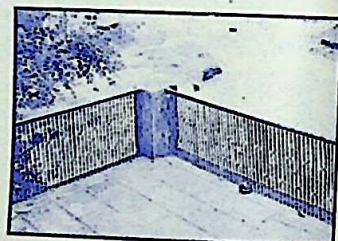
लखनिया दरी

विन्ढमफाल
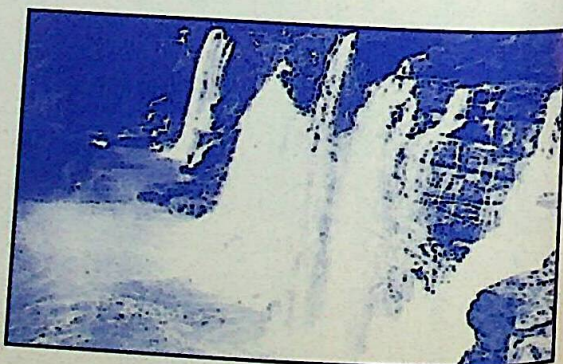
सिरसी फाल
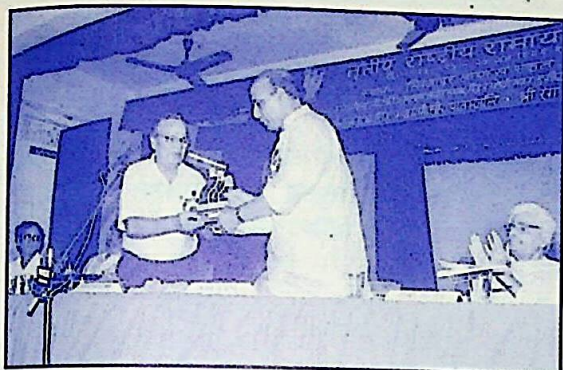
तृतीय रामायण मेला के मुख्य अतिथि भाजपा अध्यक्ष
मा0 श्री राजनाथ सिंह को त्रिवेणी स्मृति
चिन्ह भेंट करते हुए त्रिवेणी संयोजक किशन बुधिया
बगल में सभा अध्यक्ष पं0 उमा कान्त मिश्र (पूर्व सांसद)

सुप्रसिद्ध वरिष्ठ मनोचिकित्सक
डा0 वेणु गोपाल झवर
द्वारा त्रिवेणी जनसभा में उद्‌बोधन

कजली महोत्सव के मुख्य अतिथि
पद्मविभूषण पंडित किशन महराज
त्रिवेणी संयोजक किशन बुधिया के साथ

बी. एच. यू. राजीव गांधी साउथ कैम्पस उद्‌घाटन के
अवसर पर मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह को
उत्तरीय एवं मानपत्र भेंट करते हुये संयोजक
त्रिवेणी किशन बुधिया 19.8.2006

कजली महोत्सव 2006 में कजली प्रस्तुत करती युवतियाँ
''चमके मँगिया बीच सेन्हुरवा, नयन कजरवा चमके ना''
निर्देशन श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव 11.08.06

कजली महोत्सव 2006 में बाल कलाकार
कु0 मालविका शरद द्वारा कजली गायन ''बिना चटनी
के सइयां नाही खात बा, बड़ा रिसियात बा ना''
11.08.06
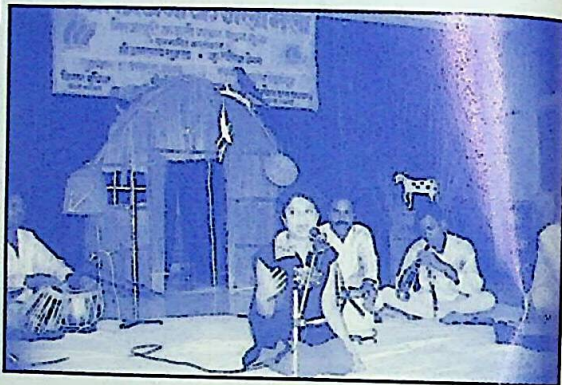
तृतीय गुलाब उत्सव (चैती मेला) में गंगा तट पर स्थित
गंगा दर्शन कालोनी उद्यान में उप शास्त्रीय गायन–चैती,
ठुमरी, दादरा प्रस्तुत करतीं हुई पद्मभूषण गिरिजा देवी की
शिष्या, इलाहाबाद की कु0 आरती श्रीवास्तव 4.4.06

प्रथम गुलाब उत्सव (चैती मेला) के अवसर पर शास्त्रीय
गायन प्रस्तुत करते हुए देश के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ
पं0 शान्ता राम विष्णु काशलकर 27.03.04

जिला पंचायत, मीरजापुर
शुभ कामनायें !

अध्यात्म–संस्कृति–साहित्य क्षेत्र के लिए समर्पित पत्रिका ''त्रिवेणी'' के अगले अंक के प्रकाशन पर जिला पंचायत मीरजापुर की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।

जिला पंचायत, मीरजापुर अपने सीमित संसाधनों के अन्तर्गत जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों के बहुमुखी विकास के लिए कटिबद्ध है।

विन्ध्य क्षेत्रान्तर्गत माँ के दर्शनार्थ आये हुए अतिथिगण के अवस्थान हेतु जिला पंचायत ने वातानुकूलित अष्टभुजा डाक बंगला एवं रैन बसेरा तथा विढंमफाल बंगला को पूर्ण रूप से सुसज्जित कर व्यवस्थित की है। जनपद के अतिदुर्गम क्षेत्रों में जिला पंचायत स्तर से सड़कों के निर्माण तथा पुल–पुलिया आदि का निर्माण युद्धस्तर पर कराया जा रहा है।

जनपद के समस्त व्यवसाइयों से अनुरोध है कि वे जिला पंचायत द्वारा आरोपित करों का भुगतान समय से करके विकास कार्य में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

विनोद कुमार सिंह
अपर मुख्य अधिकारी,
जिला पंचायत, मीरजापुर

प्रभावती यादव
अध्यक्ष
जिला पंचायत, मीरजापुर

नगरपालिका परिषद, मीरजापुर
शुभ कामनायें !
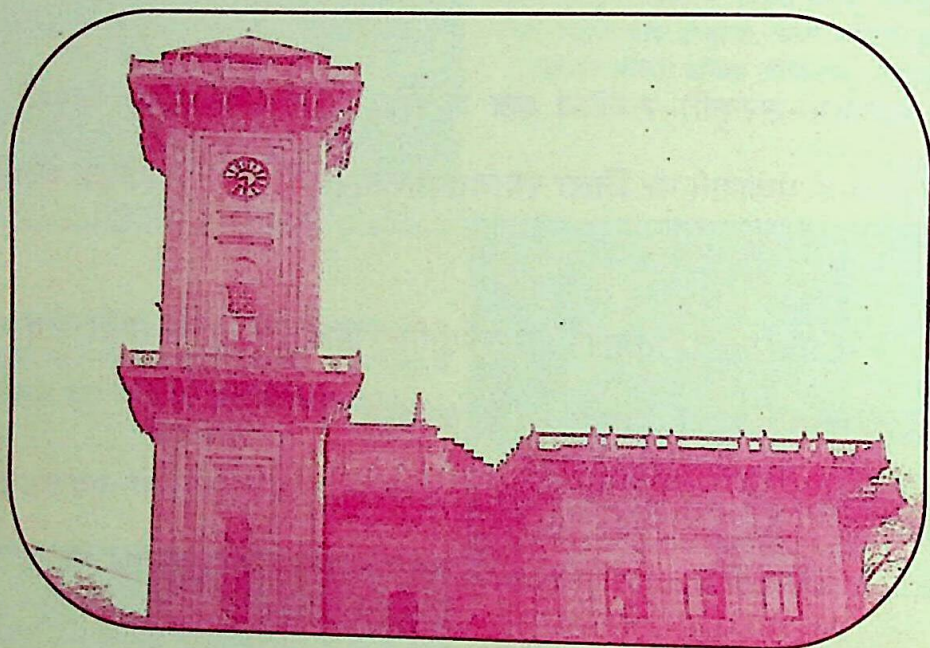
1– नगर वासियों को इस अवसर पर शुभ कामना ज्ञापित करते हुये उनसे नगर की सुख समृद्धि हेतु कामना करते हैं कि वे नगर की सफाई हेतु निर्धारित स्थल पर ही कूड़ा एकत्रित करें।

2– निर्धारित समय पर गृहकर/जलकल एवम् अन्य करों का भुगतान पालिका में जमा करके नगर के विकास कार्य में भागीदार बनें।

3– जल ही जीवन है उसका अनावश्यक दुरुपयोग न करें तथा पेयजल लेने के बाद नल की टोटी को बन्द रखें।

4– पालिका भूमि, सड़क अथवा पटरी तथा नाली आदि पर अतिक्रमण न करें।

5– पशुओं को खुला न छोड़े जिससे आवागमन में बाधा उत्पन्न न होने पाये।

6– खुले हुये तथा सड़े–गले खाद्य पदार्थों का सेवन कदापि न करें जिससे स्वास्थ्य की रक्षा हो सके।

दीपचन्द्र जैन
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद, मीरजापुर

ज्ञान गंगा का स्तम्भ स्थल- लायन्स स्कूल

लायन राजेश अग्रवाल
(चीफ इक्जीक्यूटिव शिक्षा से जुड़े सक्रिय समाज सेवी)

''कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषव-तंसमा'' अर्थात् मनुष्य को कर्म करते हुए जीने की इच्छा करनी चाहिए। कर्महीन जीवन की कल्पना ही नहीं है। ईशावास्योपनिषद की इस सूक्ति को चरितार्थ करते हुए तत्कालीन जिलाधिकारी श्री वी0 के0 मलहोत्रा की प्रेरणा से एवं लायन्स क्लब के कर्मठ सदस्य स्व0 मुरलीधर गोयनका, श्री रविभूषण अग्रवाल, लायन शम्भू नाथ अग्रवाल तथा लायन किशन बुधिया ने अब से 26 वर्ष पूर्व ज्ञान के स्तम्भ के रूप में समाज को प्रगति की मूलधारा से जोड़ने के उद्देश्य से 19 मार्च 1980 को लायन्स स्कूल की स्थापना की। 17 जुलाई सन् 1980 से प्रथम सत्र का प्रारम्भ मात्र पाँच कमरों, तीन कक्षाओं (कक्षा 1, 2 तथा 6), 78 बच्चों, 4 अध्यापक, प्रधानाचार्य एवं एक क्लर्क को लेकर किया गया। तब से आज तक यह विद्यालय अहर्निश प्रगति के पथ पर अग्रसरित हो रहा है।

आज यह एक विशाल वट वृक्ष के रूप में मिरजापुर की भूमि से पोषित होकर फूलता-फलता अपनी विशालता को सुदृढ़ बनाए हुए विकसित वृक्ष के रुप में के0 जी0 कक्षा से लेकर कक्षा 12 तक के बच्चों को ज्ञान की सृजनात्मक शक्ति प्रदान कर रहा है।

प्रगति की इस यात्रा में विद्यालय ने अनेक उपलब्धियाँ हासिल की। 1 मई 1983 में विद्यालय के सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड से मान्यता प्राप्त हुई। तब से दसवीं कक्षा के इक्कीस बैच तथा बारहवीं कक्षा के 19 बैच बोर्ड की परीक्षा में सम्मिलित हो चुके हैं, एवं अनेक विद्यार्थी श्रेष्ठता सूची में अपना नाम दर्ज करवा चुके हैं। सन् 2006 में दसवीं कक्षा का 91 प्रतिशत तथा बारहवीं कक्षा का 95 प्रतिशत परिणाम रहा। श्रेष्ठता की सूची में पूरे जनपद में लायन्स स्कूल का नाम अग्रणी रहा है। सन् 1980 में विद्या मंदिर का जो दीप प्रज्ज्वलित किया गया था, आज भी उसकी लौ उसी प्रकार जल रही है जिसकी स्वर्णिम रश्मियों से हिन्दुस्तान का कोना-कोना देदीप्यमान है।

''फानूस बन के जिसकी हिफाजत हवा करे, वह शम्मा क्या बुझे जिसे रौशन खुदा करे।''

तरक्की का यह सफर कभी न खत्म होने वाला है। वर्तमान समय में विद्यालय में बारह सौ छात्र-छात्राएं, तीस कमरों में पैतालीस अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। चार प्रयोगशालाएं- जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान एवं गणित की है, जिसमें समस्त अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं। छात्रों के ज्ञान के भण्डार में वृद्धि करने के लिए लायनेस लाइब्रेरी जिसमें विभिन्न विषयों की 15 हजार पुस्तकें उपलब्ध हैं और आधुनिक मॉडल के कम्प्यूटर्स-प्रिन्टर्स-साफ्टवेयर से युक्त कम्प्यूटर लैब हैं। इसके अतिरिक्त एक विशाल जी0 डी0 बिरला प्रेक्षागृह, खेलकूद के लिए विशाल मैदान एवं टीचर्स हॉस्टल तथा स्पोटर्स काम्प्लेक्स (मेल्विन जोन्स भवन) भी सम्मिलित है। निर्बाघ विद्युत आपूर्ति के लिए जेनरेटर और शुद्ध जलापूर्ति के लिए बोरिंग एवं एक्वागार्ड, वाटरकूलर की व्यवस्था है।

विद्यालय के समस्त छात्र–छात्राएं 5 हाउसों में गाँधी, नेहरू, सुभाष, शास्त्री एवं टैगोर हाउस में बँटे हुए हैं। समय–समय पर अनेक रचनात्मक कार्यक्रमों, खेलकूद, शारीरिक प्रशिक्षण, कला, नृत्य, नाटक, संगीत, पर्यटन, श्रमदान, समाजसेवा आदि का आयोजन किया जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है– ''शिक्षा का उद्देश्य मानव की अन्तर्निहित क्षमताओं को पूर्ण विकसित करना है।'' स्पिक मैके के सहयोग से शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार एवं ज्ञान प्राप्ति हेतु अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध कलाकारों द्वारा कार्यक्रम नियमित रूप से प्रस्तुत किए गये हैं।

लायन्स स्कूल गौरवान्वित है अपने अनगिनत प्रतिभा सम्पन्न पूर्व छात्र–छात्राओं से जो डाक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, एम.बी.ए., सी.ई., सफल गृहणी, उद्योग–व्यापार क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर देश–विदेश में नाम रौशन कर रहे हैं। वर्ष 2006 में श्री अभिषेक दीक्षित आई.पी.एस. में चयनित होकर मील के पत्थर बन गए हैं।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।

इस प्रकार लायन्स स्कूल मिर्जापुर का मूल उद्देश्य है, अन्धकार से प्रकाश की ओर अनवरत अग्रसर होते रहना। सन् 1980 से आज तक विद्यालय अपनी यात्रा पथ पर बिना किसी पड़ाव के अनवरत अग्रसर है और उच्च स्तरीय गुणवत्ता से युक्त शिक्षा का पर्याय बन गया है। हमारी कोशिश यही रहेगी कि प्रगति का यह कारवाँ बिना रूके आगे और आगे बढ़ता रहे।

लायन्स स्कूल प्रवेश द्वार

म्यूरल : आर.एस. अग्रवाल (इलाहाबाद)

सृजनधर्मी डा० काशी प्रसाद जायसवाल

बृजदेव पाण्डेय
(विद्वान लेखक, हास्य/व्यंग कवि से. नि. प्राचार्य)

डा0 काशी प्रसाद जायसवाल ज्ञान के सच्चे संवाहक थे। उनकी इतिहास दृष्टि और शोधवृत्ति से पूरा विश्व चकित था। उन्होंने इतिहास, पुरातत्व और भारतीय संस्कृति पर इतनी विद्वत्ता और अधिकार के साथ कलम चलाई कि उस काल के बड़े-बड़े कलाकार उनके ज्ञान और मौलिकता का लोहा मानने लगे। डा0 काशी प्रसाद जायसवाल का रहन-सहन, खान-पान और जीने का अंदाज भले ही अंग्रेजों जैसा रहा हो परन्तु उनकी कृतियाँ काल और भारतीयता की उद्घोषक रहीं हैं। उन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच, जापानी, तिब्बती और चीनी साहित्य का गंभीर अध्ययन किया था परन्तु उनके लेखन पर विदेशी रंग हावी नहीं हो पाया था। अपनी इसी मौलिकता और भारतीय सांस्कृतिक रंग के कुशल रंगकार होने के कारण डा0 काशी प्रसाद सम्पूर्ण ज्ञान जगत में आदरणीय थे।

जन्म- डा0 काशी प्रसाद जायसवाल का जन्म अगहनसुदी 6 सं0 1938 (सन् 1881 ई0) में हुआ था। जन्म स्थान को लेकर थोड़ा मतभेद है। उनके परिवार के सदस्यों का कहना था कि वे झालदा में पैदा हुए थे जो उस समय बिहार में था परन्तु बाबू श्याम सुन्दर दास ने 'हिन्दी कोविद रत्नमाला भाग दो' में डा0 काशी प्रसाद जायसवाल की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनका जन्म स्थान मीरजापुर माना है। इसी मत का प्रतिपादन महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी 'सरस्वती' की एक सम्पादकीय टिप्पणी द्वारा किया है। डा0 काशी प्रसाद जायसवाल के पिता महादेव साहु चपड़ा (लाह) के अच्छे व्यवसायी थे। उनका चपड़े का व्यापार मीरजापुर, झालदा और कलकत्ता तक फैला था। पटना में भी ब्रान्च कार्यालय था। साहु महादेव प्रसाद अपने परिवार के साथ अक्सर झालदा वाले कारखाने का काम-धाम देखने जाया करते थे। शायद इसी कारण जन्म स्थान को लेकर कुछ भ्रम हो गया हो। डा0 काशी प्रसाद का लालन-पालन मीरजापुर में ही हुआ था।

पारिवारिक जीवन- डा0 काशी प्रसाद के पिता साहु महादेव प्रसाद तीन भाई थे। उनके भाइयों के नाम थे साहु मातावदल और साहु शीतला प्रसाद। साहु महादेव प्रसाद की नारघाट मीरजापुर में एक भव्य कोठी थी। उस कोठी को महादेव प्रसाद जी ने किसी अंग्रेज से खरीदी थी। साहु महादेव प्रसाद का दो विवाह हुआ था। उनकी पहली पत्नी थी सोमारू देवी और दूसरी जानकी देवी। सोमारू देवी को दो पुत्र हुए- डा0 काशी प्रसाद जायसवाल और गोविन्द प्रसाद जायसवाल। ये दोनों भाई किशोरावस्था की दहलीज पर पैर रख रहे थे कि उनकी माँ का निधन हो गया। पुत्रों की देख-माल करने के लिये साहु महादेव प्रसाद जायसवाल को दूसरा विवाह जानकी देवी से करना पड़ा। जानकी देवी को चार पुत्र और दो पुत्रियां हुए। पुत्र थे- उमेश सिंह जायसवाल, रमेश सिंह जायसवाल, केशरी सिंह जायसवाल और जयदेव सिंह जायसवाल। पुत्रियां थीं- जयदेवी जायसवाल और विद्यावती जायसवाल। उमेश सिंह बिहार में इंजीनियर थे। उनको अंग्रेजों ने रायबहादुर की उपाधि दे रखी थी। रमेश और जयदेव सिंह जायसवाल व्यापार को विस्तार दे रहे थे। केशरी सिंह मुख्यतः कलकत्ते का व्यापार देख रहे थे परन्तु बाद में घरेलू परिस्थितियों के कारण उन्हें मीरजापुर के व्यापारिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करना पड़ा। जायसवाल जी की मीरजापुर के दक्षिणांचल में स्थित मतुवा और ककरैत गांवों में खेती होती थी।
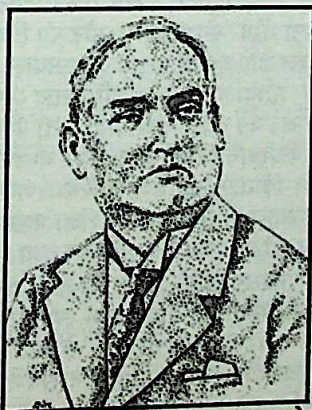
डा0 काशी प्रसाद जायसवाल, बार-ऐट-लॉ
चित्र : विनोद : 8.12.06

डा0 जायसवाल की चाची कुछ खर मिजाज की थीं। वे प्रायः जायसवाल जी की माँ को अपमानित करती थीं। माँ सोमारू देवी अक्सर अपने पुत्रों को लेकर मायके चली जाती थीं। मायका गरीब था। वह काशी प्रसाद की मिठाई खाने की जिद पूरी नहीं कर पाता था। बिना मिठाई के काशी प्रसाद जायसवाल खाना नहीं खाते थे। नानी ने एक युक्ति सोची। उन्होंने गुड़ मिलाकर सत्तू के लड्डू बनाये और कहा कि जो सत्तू के लड्डू खाते हैं, उनकी छाती चौड़ी और बुद्धि तीव्र होती है। बालक काशी प्रसाद को नानी के कथन पर विश्वास हो गया और वे बड़े चाव से लड्डू खाने लगे। डा0 काशी प्रसाद जायसवाल बचपन की इस याद को बनाये रखने के लिए जीवन पर्यन्त सत्तू के लड्डू खाते रहे।

बड़े होकर जब डा0 काशी प्रसाद जायसवाल ने अपने पिता का कारोबार संभाल लिया तब उनका विवाह एक सुशील कन्या मालती देवी से हुआ। उनके ससुर पड़री के एक व्यवसायी थे। डा0 काशी प्रसाद को पांच पुत्र और तीन पुत्रियाँ हुए। पुत्रों में चेतसिंह जायसवाल बैरिस्टर, सहदेव सिंह जायसवाल बिहार सरकार में कृषि निदेशक, चतुर्भुज सहाय पिता-पितामह की सम्पत्ति के प्रशासक थे। डा0 पदमनारायण सिंह जायसवाल ने विलायत से एम0 बी0 बी0 एस0 किया था। वे सेना में कैप्टन थे। दीपनारायण सिंह जायसवाल के कंधों पर पुश्तैनी कारोबार का भार था। उनकी पुत्रियों में सुशीला का विवाह मुंगेर के ख्यातिलब्ध वकील मोती लाल से हुआ था। धर्मशीला बैरिस्टर थीं। पटना में उनकी बैरिस्टर के रूप में अच्छी ख्याति थी। ज्ञानशीला एम0 बी0 बी0 एस0 थीं। अग्रिम अध्ययन के लिए वे लंदन गई और वहाँ से लौटने पर रांची में उन्होंने अपना नर्सिंग होम खोला उनका विवाह भी राँची में ही हुआ था।

शिक्षा-दीक्षा- डा0 काशी प्रसाद मेधावी बालक थे। उनकी अध्ययन रुचि देखकर उनके पिता ने उनका नाम लंदन मिशन स्कूल, (बी0एल0जे0 इण्टर कालेज) मीरजापुर में लिखाया। उनके प्रिंन्सिपल एफ0 एफ0 लांगमैन, काशी प्रसाद जायसवाल की प्रतिभा से काफी प्रभावित थे। उन्होंने काशी प्रसाद की प्रगति में विशेष रुचि ली। उनके इतिहास के टीचर विद्वान थे। उन्होंने काशी प्रसाद जायसवाल पर विशेष ध्यान देकर इतिहास का गंभीर ज्ञान कराया।

छात्र काशी प्रसाद जायसवाल में अध्ययन के प्रति विशेष रुचि थी। लंदन मिशन स्कूल में पढ़ते समय ही संस्कृत का गहन और विस्तृत अध्ययन करने के लिए काशी प्रसाद जायसवाल प्रतिदिन अष्टभुजा पहाड़ पर जाते थे। वहाँ गेरुहवा से मोतिया तालाब के बीच संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हंड़िया बाबा रहते थे। उनके चरणों में बैठकर वे संस्कृत का गंभीर अध्ययन करते थे। जब वे कक्षा 9 के विद्यार्थी थे उनका संस्कृत वाङ्मय का ज्ञान इतना गहरा और विस्तृत हो गया था कि उनसे बात करने में शास्त्री तक के विद्यार्थी घबराते थे। हड़िया बाबा के आशीर्वाद से उन्हें वेद, उपनिषद, पुराण, व्याकरण, दर्शन और साहित्य का गहन ज्ञान प्राप्त हो गया था। हड़िया बाबा एक निस्पृह संत थे। वे मिट्टी की हांडी में ही भोजन पकाते और खाते थे। अष्टभुजा पहाड़ी पर प्रातः चार बजे जाते समय छात्र काशी प्रसाद की प्रतिदिन भेंट बिलरिया बाबा से भी होती थी जो अपने कँधे पर पूड़ी लादकर शहर से अष्टभुजा जाते थे और कुत्तों तथा बिल्लियों को रास्ते भर पूड़ियाँ बांटते थे। उनके प्रताप से कुत्ते-बिल्ली अपना स्वाभाविक बैर भुलाकर उनके पीछे-पीछे चलते रहते थे। एक चिरइया बाबा भी थे जो चिड़ियों को इकट्ठा कर उनको दाने चुंगाते थे। ऐसे त्यागी और जीव-जन्तु के कल्याण के लिए समर्पित साधु संतों के सम्पर्क का छात्र काशी प्रसाद पर काफी प्रभाव पड़ा। यहीं कारण है की जब तक काशी प्रसाद जीवित रहे जरूरतमंद लोगों की सहायता करते रहे। उनके पटनावाले निवास पर कुत्ते और चिड़िया पालने की विशेष व्यवस्था थी।

18 वर्ष की उम्र में सन् 1899 में छात्र काशी प्रसाद जायसवाल ने लंदन मिशन स्कूल मीरजापुर से एन्ट्रेंस की परीक्षा पास की और एफ0 ए0 पढ़ने के लिए वे बनारस गये। वहाँ क्विंस कालेज में नाम लिखाया। वहाँ से एफ0 ए0 पास होने के बाद वे घरेलू परिस्थितियों के कारण मीरजापुर आये और चपड़े का व्यापार करने लगे।

मीरजापुरी मित्र मण्डली- डा0 काशी प्रसाद जायसवाल और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की मित्र मण्डली प्रायः एक थीं। पं0 बदरी नाथ गौड़, भगवानदास हालना, उमाशंकर द्विवेदी, लक्ष्मी शंकर द्विवेदी, पं0 लक्ष्मी नारायण चौबे, मास्टर भगवान दास, पं0 केशव प्रसाद उपाघ्याय, राजेन्द्र बाला घोष 'बंगमहिला', और पं0 त्रिवेणी माधव शुक्ल का सम्पर्क शुक्ल जी और जायसवाल जी दोनों से था। पं0 रामचन्द्र शुक्ल डा0 काशी प्रसाद जायसवाल से तीन वर्ष छोटे थे। 'बंग महिला' शुक्ल जी से एक वर्ष बड़ी थी। बाबू महादेव प्रसाद सेठ 'मतवाला' डा0 काशी प्रसाद जायसवाल की कोठी के निकट ही गऊघाट में रहते थे। वे डा0 काशी प्रसाद के घनिष्ठ मित्र थे। पं0 बदरी नाथ गौड़ थे तो पेशे से वैद्य परन्तु उनको संस्कृत व्याकरण और साहित्य का अद्भुत ज्ञान था। प्रायः उन्हीं के वैद्यखाने त्रिमुहानी पर मित्र मण्डली इकट्ठी होती थी। वहाँ इकट्ठा होकर मित्र काव्यपाठ करते थे और साहित्य की विभिन्न विधाओं पर चर्चा-परिचर्चा करते थे। शुक्ल जी जायसवाल जी के स्कूली साथी थे। सन् 1898 में ए0 एस0 जे0 मिडिल स्कूल से मिडिल की परीक्षा पास करने के बाद शुक्ल जी लंदन मिशन स्कूल में नाम लिखाया। सन् 1898-99 में जायसवाल जी का स्नेह उन्हें भी प्राप्त हुआ।

मीरजापुरी प्रेरणास्रोत- डा0 काशी प्रसाद जायसवाल के ऊपर मीरजापुर के साहित्यकारों का काफी प्रभाव पड़ा। जब वे साहित्य जगत में कलम पकड़ना सीख रहे थे प्रेमघन जी साहित्य में स्थापित हो चुके थे। प्रेमघन जी पत्रकारिता, नाटक, लेख, आलोचना और लोकगीतों के द्वारा नवजागरण का सन्देश देश के कोने-कोने में फैला रहे थे। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का प्रभाव डा0 काशी प्रसाद पर पड़ना बड़ा स्वाभाविक था। पं0 इन्द्र नारायण शैगूल की ऐतिहासिक शोधवृत्ति, वावनाचार्य गिरि पौराणिक संदर्भों को लेकर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नाटक लिखने के वैदुष्य का डा0 काशी प्रसाद पर काफी असर हुआ। महंथ जयराम गिरि अच्छे साहित्यानुरागी और गोष्ठी प्रिय थे। उनके यहाँ मीरजापुर तथा बाहर के साहित्यकार एकत्रित होते

थे और अपनी-अपनी रचनायें सुनाते थे। वे कवियों और लेखकों का सम्मान धन देकर भी करते थे। उनकी उदारता, विद्वानों को सम्मान देने की प्रवृत्ति का डा0 काशी प्रसाद जायसवाल पर इस कदर प्रभाव पड़ा कि उनके पटना निवास पर देश के कोने-कोने से अनेक भाषाओं के विद्वान आते थे और उनके द्वारा सम्मानित होते थे। लेखन की सम्पूर्ण तैयारी जायसवाल जी ने मीरजापुर में ही कर ली थी।

काशी प्रसाद जायसवाल के निर्माण में काशी का योगदान- जिस समय छात्र काशी प्रसाद जायसवाल बनारस में अध्ययन कर रहे थे बनारस साहित्य और संस्कृति की राजधानी मानी जाती थी। वहाँ छात्र काशी प्रसाद की मुलाकात युगनिर्माता महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्याम सुन्दर दास, मिश्रबन्धु, देवी प्रसाद, बाबू दुर्गा प्रसाद, सैयद अमीर अली, सिद्धेश्वर वर्मा, किशोरी लाल गोस्वामी, गौरी शंकर, हीराचन्द ओझा और बाबू राय कृष्ण दास से हुई। इन साहित्यकारों के सानिध्य ने डा0 काशी प्रसाद जायसवाल के जीवन को पूर्णतः लेखन और शोध की ओर मोड़ दिया। वे पूरी तरह प्रतिश्रुत हो गये लेखन के प्रति। वे नागरी प्रचारिणी सभा में उपमंत्री बनाये गये। काशी का प्रसाद पाकर ही काशी प्रसाद सही अर्थों में काशी प्रसाद बनें। काशी में ही रहकर काशी प्रसाद जायसवाल ने 'कौशाम्बी' और 'लार्ड कर्जन की वक्तृता और बक्सर' जैसे लेख लिखे जिनका प्रकाशन नागरी प्रचारिणी पत्रिका में हुआ।

मीरजापुर का साहित्यिक ध्वज प्रयाग में फहराया- काशी से लौटने के बाद युवक काशी प्रसाद जायसवाल अपने पुश्तैनी व्यापार में अवश्य लग गये परन्तु उनका मन उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए मचल रहा था। अंततः वे अग्रिम अध्ययन के लिए प्रयाग गये और वहाँ उन्हें साहित्यकार श्रीधर पाठक, बालकृष्ण भट्ट और हिन्दी साहित्य के पुरोधा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का आशीर्वाद मिला। सन् 1903 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के मजबूत कँधों पर 'सरस्वती' के सम्पादन का भार आया। उन्होंने अपने सम्पादन के प्रथम वर्ष में ही डा0 काशी प्रसाद जायसवाल की रचनायें प्रकाशित की। उदाहरण के लिए डा0 हार्नली (पृ0 339), मारकर लौटने वाला अस्त्र (पृ0 386) और उपन्यासकार और उनकी कृति (प0 440) जायसवाल जी के 'डा0 हार्नली' लेख से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इतने ज्यादा प्रभावित हुए कि उन्होंने भी 'हार्नली पंचक' कविता लिखी और उसे काशी प्रसाद जायसवाल के लेख के साथ छपवाया। काशी प्रसाद जायसवाल के 'स्वर्ण' शीर्षक कविता (पृ0 सं0 346), 'भाषा का महत्व' (पृ0 सं0 209) और 'कविकीर्ति' लेख ने उनको साहित्यकारों की महत्वपूर्ण पंक्ति में ला खड़ा किया। सन् 1904 में डा0 काशी प्रसाद जायसवाल के लेखन का रंग पुरातात्विक हो गया। 'जलवर्षक वृक्ष' (पृ0 सं0 66) और 'पठानी सिक्कों पर नागरी' (पृ0 सं0 380) का प्रकाशन सन् 1904 की 'सरस्वती' में हुआ।

इंग्लैण्ड गमन- वैसे तो कटाक्ष मर्माहत करता है परन्तु एक वृद्ध चपड़ा व्यापारी के कटाक्ष ने काशी प्रसाद जायसवाल को लंदन भेज दिया। चपड़ा व्यापार के उत्कर्ष के लिए 'चेम्बर आफ कामर्स' के ढंग पर काशी प्रसाद जायसवाल ने 'चपड़ा व्यापारिक सभा' का गठन किया था। चपड़ा का व्यापार किस तरह आगे बढ़े इसके लिए 'चपड़ा व्यापारिक सभा' के संयोजकत्व में चपड़ा व्यापारियों की एक बैठक चल रही थी। काशी प्रसाद जायसवाल पुराने व्यापारियों के सुझाव को जब अपने तेज तर्कों की धार से काटने लगे तब एक व्यापारी ने उन पर कटाक्ष किया 'तुम तो इस तरह बोल रहे हो जैसे बैरिस्टर हो।' यह बात काशी प्रसाद को चुभ गई। उन्होंने अपने पिता से बैरिस्टर की पढ़ाई पढ़ने के लिए अनुमति मांगी। वे 4 अगस्त 1906 को पच्चीस वर्ष की उम्र में लंदन गये, वहां चार वर्ष रहकर उन्होंने इतिहास से एम0 ए0, (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से) किया और बैरिस्टरी भी पास की। लंदन में उनकी प्रगाढ़ता भारतीय क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा, मैत्री लाल, एस0 आर0 राणा, विनायक दामोदर सावरकर, मैडमबाला, मि0 शाकिर अली और लाला हरदयाल से इतनी बढ़ी कि वे अंग्रेज अधिकारियों की नजर पर चढ़ गये। इंग्लैण्ड के शहरों और गांवों में घूमकर काशी प्रसाद जायसवाल ने 'क्यू', 'शाही बाग' और 'महाराज बनारस का कुंआ देखें' और 'महाराज बनारस तथा शाही बाग 'क्यू' पर सन् 1908 में रिपोर्ताज लिखे। सभी रिपोर्ताज बारी-बारी से सरस्वती में प्रकाशित हुए। उन्होंने अर्थशास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते, इग्लैण्ड की बैंकिंग प्रणाली का भी अध्ययन किया और अपने अनुभवों को लेखबद्ध कर 'सरस्वती' में भेजा, जो सरस्वती के भाग सं0 8, पृ0 सं0 202 पर छपा। उन्हें सन् 1909 में आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी का 'रिसर्च स्कालर' तथा डेविस चायनीज स्कालर नियुक्त किया गया। उन्हें इग्लैण्ड के विद्वानों ने काफी सम्मान दिया परन्तु क्रान्तिकारियों से सम्बन्ध होने के कारण इग्लैण्ड में उनका टिकना कठिन हो गया और वे सन् 1910 में टर्की, मिस्र और अरब होते हुए भारत लौट आये। इग्लैण्ड में डा0 ग्रियर्सन और डा0 हार्नली के करीब आना और शेक्सपीयर तथा वर्ड्सवर्थ का घर देखना उनके साहित्यिक जीवन की भारी उपलब्धि रही।

व्यक्तित्व विकास में कोलकाता की भूमिका- उनकी विद्वत्ता को देखकर कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उनकी नियुक्ति प्रोफेसर पद पर की परन्तु सरकारी दबाव के कारण उन्हें पद त्याग करना पड़ा। दो वर्ष बाद सन् 1912 में उन्हें पुनः इतिहास का प्रोफेसर बनाया गया। परन्तु सरकार के हस्तक्षेप के कारण शीघ्र ही उस पद को भी छोड़ना पड़ा। कोलकाता विश्वविद्यालय में स्थापित रवीन्द्रपीठ से उन्होंने मनु और याज्ञवल्क्य पर अनेक सरगर्भित लेक्चर दिए।

पटना में विधि और साहित्यिक जीवन यात्रा- डा0 जायसवाल ने पटना हाईकोर्ट में वकालत प्रारम्भ किया। उनकी ईमानदारी और एडवोकेसी के नाते उनकी प्रैक्टिस शीघ्र ही बुलन्दी पर चली गई। उनका विधि-ज्ञान-वर्धन और लेखन उत्कर्ष साथ-साथ हो रहा था। उनके घर पर उस काल के संस्कृत और हिन्दी साहित्य के विद्वान महामहोपाध्याय पं0 रामवतार शर्मा, पं0 मोहन लाल महतो वियोगी, राहुल सांकृत्यायन, रामधारी सिंह दिनकर, मैथिली शरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, मुं0 अजमेरी लाल और लोचन पाण्डेय अक्सर आते थे। उनसे डा0 जायसवाल का घण्टों तर्क-वितर्क होता था। राहुल सांकृत्यायन को तिब्बत जाकर संस्कृति और बौद्ध धर्म की पाण्डुलिपियाँ लाने की प्रेरणा डा0 जायसवाल से ही मिली। उन्होंने अपने महान व्यक्तित्व से अनेक साहित्यकारों को लेखन की प्रेरणा दी।

हथुवा नरेश का मीरजापुर आगमन- डा0 काशी प्रसाद का रहन-सहन राजाओं की तरह होता था। वे सामंती जीवन जी रहे थे। एक दिन की बात है कि पटना में ही 'राजाओं की स्थिति और अंग्रेज शासक का व्यवहार' विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए बिहार तथा आस-पास के राजाओं को बुलाया गया था। गोष्ठी प्रारम्भ होने के पूर्व राजाओं का परिचय कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। अपना परिचय देते हुए डा0 काशी प्रसाद जायसवाल ने अपने को कोटघाट का राजा बताया। उनके बगल में बैठे राजा हथुवा नरेश ने जब कोटघाट रियासत देखने की इच्छा प्रकट की तब उन्होंने उनसे एक वर्ष का समय मांगा और एक साल के भीतर ही कोटघाट मीरजापुर में शानदार गेट और किला बनवाया। अपनी कोठी में जाने के लिए जो प्रवेश द्वार बनवाया वह भारतीय संस्कृति, पुरातत्व, वास्तुकला, प्रस्तरकला और डा0 काशी प्रसाद जायसवाल की कलारुचि के प्रवक्ता के रूप में आज भी पूरी ताजगी के साथ खड़ा है। डा0 काशी प्रसाद जायसवाल ने घोड़ा-हाथी और सैनिकों के साथ हथुवा नरेश का इस कदर स्वागत किया कि वे मुग्ध हो गये। डा0 जायसवाल अचानक ही राजाओं के वकील बन बैठे।

रचना धर्मिता- डा0 काशी प्रसाब जायसवाल ने 'एशियाटिक सोसायटी' के जर्नल, 'ला जर्नल', 'इंडियन एंटिक्वेरी' तथा 'वीकली नोट्स' जैसी पत्रिकाओं में विधि, इतिहास और पुरातत्व सम्बन्धी अनेक लेख लिखे। डा0 जायसवाल ने सन् 1915 में स्थापित 'बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसायटी' के जर्नल का सम्पादन कर जर्नल को विश्वख्याति दिलाई। सन् 1917 को याज्ञवल्क्य और 'मनु' पर दिए गये उनके भाषणों को संकलित कर पुस्तक का रूप दिया गया। उस पुस्तक की ख्याति इतनी बढ़ी कि डा0 टामस और डा0 फिट्ज गेराल्ड जैसे विद्वानों को उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करनी पड़ी। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भारतीय राजतंत्र को निरंकुश और स्वेच्छाचारी कहे जाने पर डा0 जायसवाल बड़े आहत हुए। उनकी अल्पज्ञता पर उन्हें दुःख हुआ। भारतीय राजतंत्र में भी लोकतंत्र था और राज्य संचालन विधियों और निश्चित सिद्धान्तों द्वारा होता था, इसको सिद्ध करने के लिए उन्होंने 'हिन्दू पालिटी' पुस्तक लिखी जो दो भागों में छपी। प्रो0 टामस बोर्डन ने इस पुस्तक की काफी तारीफ की।

सन् 1930 में 'हिस्ट्री आफ इण्डिया' का लेखन किया जिसका प्रकाशन सन् 1932 में हुआ। इसमें सन् 150 से 350 तक का कार्यकाल संनिहित है। इस पुस्तक द्वारा उन्होंने इतने नये तथ्य प्रस्तुत किये कि विन्सेन्ट स्मिथ द्वारा लिखे इतिहास में ई0 एडवर्ड को संशोधन करना पड़ा। सन् 1934 में उन्होंने 'इम्पीरियल हिस्ट्री आफ इण्डिया', जिसमें सन् 700 से 770 तक कार्यकाल समाविष्ट है, लिखकर अनेक ऐसे नये तथ्य प्रस्तुत किये कि सारी दुनिया चकित रह गई और उसने अपने ज्ञान कोष में वृद्धि की। सन् 1936 में 'क्रोनोलाजी एण्ड हिस्ट्री आफ नेपाल' लिखकर वे नेपाल द्वारा सम्मानित हुए।

सम्मान- सन् 1930 में उन्हें 'गायकवाड़ स्वर्ण जयन्ती' का प्रतिष्ठित पद तथा ओरियन्टल कान्फ्रेन्स (जिसकी पटना में सभा हुई) का स्वागताध्यक्ष पद प्रदान कर सम्मानित किया गया। उनका स्वागत भाषण साहित्य का अंग बन गया। वे सन् 1934 तथा 1936 में भारतीय मुद्रा समिति के अध्यक्ष बनाये गये। जायसवाल जी ही ऐसे भारतीय रहे जिन्हे लन्दन की 'रायल एशियाटिक सोसायटी' ने सन् 1935 में मौर्य सिक्कों पर व्याख्यान देने के लिए बुलाया। ये बंगाल एशियाटिक सोसायटी के मेम्बर भी रहे।

निधन- सन् 1937 के प्रारम्भ में डा0 काशी प्रसाद जायसवाल को कारबंकल हो गया। महीनों इस असह्य पीड़ा को झेलते हुए 4-8 सन् 1937 को वे यह संसार छोड़कर महा प्रस्थान कर गये। उनके निधन पर उस काल के सभी नेताओं और साहित्यकारों ने उनके सम्मान में सम्वेदनायें प्रकट की।

"जहाँ रहेगा वहीं रौशनी लुटाएगा
चिराग का कोई मकां नहीं होता" वसीम बरेलवी

कजरी मिर्जापुर सरनाम

डा० अर्जुन दास केसरी
(लोक कला, लोक गीत, लोक संस्कृति के प्रतिष्ठित विद्वान अनेक स्तरीय पुस्तकों के रचयिता, राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय पुरस्कारों से सम्मानित मिरजापुर कजली के संग्रहकर्त्ता, त्रिवेणी कजली सम्मान से अलंकृत)
(दीन दयाल उपाध्याय पुरस्कार (2 लाख) नवम्बर 2006)

पावस ऋतु में प्रकट अति, कजरी मंजु मल्हार ।
घर–घर गावत नारि–नर, करि श्रावण सिंगार ।।

आपने कजरी का नाम लिया तो एक साथ कई चित्र आँखों के सामने नाचने लगे – पावस ऋतु प्रकृति के बहुरंगी रूप, श्रावणी श्रृंगार, झूले और कजरी के मेले–ठेले। ''भारी रामनगर की लीला, कजरी मिर्जापुर सरनाम'' की कहावत प्रसिद्ध है। सचमुच कजरी का आनन्द आप को लेना हो तो भादों में मिर्जापुर में वास कर जाइए, मिर्जापुरी बन के उसका आनंद लीजिए। रात–रात जागिए, मुहल्ले–मुहल्ले घूमिये। कजरी गाने वालों से मेल–मुहब्बत कीजिए। उनकी आत्मीयता प्राप्त कीजिये। कजरी सुनिये, कजरी गाइए, कजरी पढ़िये, कजरी गुनिये और तब उसका असली आनन्द पाइयेगा। एक बार जो इसका आनन्द पा जाता है, बस समझिये कि उसको परमानन्द मिल जाता है। चाहे जहां रहे रतजगा के चौबीस घण्टे तो मिर्जापुर में बिताना ही चाहता है।

वैसे तो कजरी का आनन्द मूर्ख–विद्वान सभी को मिलता है। स्त्री–पुरुष, बाल–वृद्ध कजरी की धुन पर झूमने लगते हैं, लेकिन कवि–हृदय व्यक्ति इसका विशेष आनन्द लेता है। आप ने हिन्दी के महान साहित्यकार भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र का नाम तो सुना ही होगा। वे स्वयं कजलियां लिखते थे। लिखते ही नहीं अपने मण्डल के अन्य प्रायः सभी साहित्यकारों से कजलियां लिखवाते थे। स्वयं गाते और गवाते थे। उनके मित्रों में बद्री नारायण चौधरी, ''प्रेमघन'' मिर्जापुर के ही थे। कजली के अवसर पर भारतेंदु बाबू, अपने अन्य मित्रों के संग मिर्जापुर आते थे और कजरी का भरपूर आनन्द लेते थे।

भंग–बूटी छनती। नौका–बिहार होता। लिट्टी–भंटा, बाटी–चोखा बनता। समस्या पूर्ति होती। गायक–गायिकाओं में होड़ होता। लाग पर कजली गायी जाती। नगर के वेश्याओं में अलग कजली–प्रतियोगिताएं होती। अधिकारी, सेठ–महाजन सभी उत्सव में शामिल होते। कजली के अखाड़िये जुटते। उनमें दंगल होता। मिठाइयां बांटी जातीं। पुरस्कार दिये जाते। संक्षेप में बस इतना जानिये कि इस अवसर पर मिर्जापुर का पूरा नगर जगमगा उठता। संगीत के स्वर से पूरा का पूरा वातावरण मुखरित हो उठता था। न जाने क्यों धीरे–धीरे अब कजली का त्यौहार फीका होता जा रहा है। अब साहित्यकों में भी कजली के प्रति रुचि–रुझान का अभाव देखा जाता है। वर्ना उन दिनों ''प्रेमघन'' ने ''आनन्द कादम्बिनी'' ''कजली कादम्बिनी'' ''कजली कुतूहल'' का प्रकाशन किया था जिनमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, किशोरी लाल गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास, श्रीधर पाठक जैसे श्रेष्ठ कवियों की कजलियाँ धड़ल्ले से प्रकाशित होती थीं।

कजली की लोकप्रियता और व्यापकता का अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि अकेले मिर्जापुर में कजली के सात–आठ मान्य अखाड़े थे और हर अखाड़े में सौ–डेढ़ सौ गायक शामिल थे। हर अखाड़े का एक सरगना यानी गुरू होता था जिसके सभी शिष्य या चेले होते थे। यही शिष्य परंपरा जब व्यापार–नौकरी की तलाश में वाराणसी, इलाहाबाद, कलकत्ता, बम्बई अन्य बड़े शहरों अथवा प्रदेशों में गया तो वहां भी कजली गाये जाने की परंपरा चल पड़ी। इस समय मिर्जापुर की कजली लगभग पूरे देश में गायी जाती है।

हां, तो कजली के अखाड़े की बात चल रही थी। मैं आप को यह बता देना चाहता हूं कि एक ही लय–धुन–तर्ज के गाने वाले एक अखाड़े में होते हैं। शहर–गुरू होते हैं जो विशेष प्रकार की कजलियां बनाकर, उनकी अलग तर्जें बांधकर मधुर–कंठ वाले गायकों को गाने के लिए देते हैं।

उस ढंग की वही चीजें गाने वाले तमाम गायक एक ही अखाड़े में बंधकर–हिन्दू, मुसलमान दोनों रहते और कजलियां गाते हैं।

मिर्जापुर के जो सात मान्य अखाड़े हैं उनमें पण्डित शिवदास का अखाड़ा अपना बड़ा महत्व रखता है। इसमें पांच सौ से अधिक गायक हो चुके है जिनमें हिन्दू–मुसलमान दोनों हैं। इनमें वियोग–श्रृंगार तथा भक्ति रस की कजलियां गाने वालों की संख्या अधिक है। ये गायक साहित्यिक कजली के पक्षपाती हैं। पावस–गीत ही अधिक लिखते हैं। पंडित शिवदास की ही कतिपय पंक्तियां सुनिये–

"सोनवन मढ़ैबै तोरा ठोर रे पपिहरा,
जो अइहैं आज स्वामी मोर घरे रे पपिहरा।
शुचि–सुन्दर–मन्जन मजेज, करि वसन विसर छबि छाप रे,
जावक–पग–पूरन–प्रकाश तें, जावत विपत्ति–बहार रे।
कच–कुंचित–कंचुकि–कसटि पर,
कुच–मणिमाल देखाय रे।
देखत पिया–पांउ,
लुटाऊं तोरे ऊपर दान करोर रे पपिहरा।

दूसरा इमामन का अखाड़ा है। यह अखाड़ा बहुत पुराना है। इसमें भी हिन्दू–मुसलमान दोनों शामिल हैं। इस अखाड़े के गायकों द्वारा श्रृंगार–गीत अधिक लिखे और गाये जाते हैं।

तीसरे जहांगीर के अखाड़े में पुरानी चाल की कजरी गायी जाती है। कुछ लोगों का ख्याल है कि इसी अखाड़े से कजरी की शुरुआत हुई थीं। वरकत अली इस अखाड़े के सबसे अच्छे गायक थे। बरकत के बाद हाफिज जॉन मुहम्मद का नाम भी आदर से लिया जाता है। इनके शिष्य मन्नी हुए और मन्नी के शिष्य तिरबेनी हुए। इसके बाद तालिब ने बसहीं गांव से गांवों में कजरी गाने की परंपरा का श्री गणेश किया।

इसके बाद भैरो का अखाड़ा भी काफी मशहूर हुआ। भैरो हेला बनारस के थे। इस अखाड़े के गायक निरगुनियां और भक्ति रस की कजलियां गाने के लिए प्रसिद्ध हैं। इन पर कबीर की छाप है, जैसे–

"मन फंसल चेहल और नइहरवां (टेक)
सुनौ मोरी सखी–सयानी, कहौं एक बात लोय।
पिया मोहिं दिहले अमल–दल कमल विसात लोय।।
तीन गुन गनल बनल, दिन रात न रहल कहत–अरे नइहरवां।
आग लगे नइहर के नगरिया, डगरिया अपार लोय।

इसके बाद बफ्फत के अखाड़े का नाम लिया जाता है। ये सीखड़, चुनार के रहने वाले थे। चुनार तहसील में कजरी गाने की परपंरा की शुरुआत इन्हीं से मानी जाती है। नब्जा, करमुल्ला, छटंकी इस अखाड़े के नामी गायक थे। इस अखाड़े के दो–तीन सौ गायक अहरौरा, राबर्ट्सगंज और उधर काशी तक जा–जा कर कजलियां गाया करते थे। अहरौरा के कजली गायकों में कुदरन, बनवारी, महाबीर, भगेलू तथा रामनाथ मुख्य हैं। कुदरन के नाभी शिष्य थे लल्ली, रामनाथ। बनवारी के शिष्य हुए जुट्ठन तथा अब्दुला। महाबीर के शागिर्द हुए– तिरबेनी, ललित तथा पांचू। राबर्ट्सगंज के प्रमुख गायकों में कल्लू मास्टर और पं० राम निहोर के नाम मुख्य हैं। पंडित राम निहोर भी साहित्यिक कजलियां रचते और गाते थे। बाद में इनका भी एक अलग अखाड़ा कायम हो गया जिसके मुख्य गायकों में पांचू, भुवनेश्वर प्रसाद और इन्द्र बहादुर सिंह हुए। बाद में कल्लू मास्टर ने भी एक अखाड़ा कायम कर लिया जिसके गायकों में रहीम, उमर, गुलाब, शिवनाथ तथा गंगा मुख्य थे। पंडित शिवदास की कजली का एक भाग आप सुनिये–

"लागल गंगा जी क मेला,
छोड़ह घरवां क झमेला
चलि चल के करेजवा जुड़ालह गोरिया।
अयना कंघी, सेन्हुर, टिकुली,

सबके लगल दुकनियां
कइसे टिकुली बिकाई,
कइसे गजरा ओराई
तूँ त सबके निकलबू दिवाला गोरिया।

मिर्जापुर में हर जाति–वर्ग के लोग, बिना किसी भेद–भाव के कजरी गाते थे। इसमें अमीर–गरीब,ऊँच–नीच का कोई भेद–भाव न था। नाई, मोची, मेहतर को भी अपना शागिर्द बनाने में लोग गर्व का अनुभव करते थे। यहां ठेला वालों का भी एक अखाड़ा था जो ''मूरत ठेलहा'' के नाम से सम्मानित था। इसके गायक आर्थिक तंगी में थे।

इसी प्रकार एक और अखाड़ा भी था। मिर्जापुरी रंग–ढंग की कजलियां इसी अखाड़े के गायक गाते थे जिनसे लोगों का भरपूर मनोरंजन हो जाता था।

इन अखाड़ों के शताधिक गायक आज भी कजलियां बनाते और गाते–गवाते हैं। अब पुराने गायकों में उत्साह की कमी देखी जा रही है, परन्तु नये गायक पुनः उभड़ रहे हैं।

ये तो रहे अखाड़ों और अखाड़ियों के हाल। अब सुनिये कजरी के दंगलों का बयान। अभी तक आपने कुश्ती के दंगलों के बारे में जाना सुना होगा। कुश्ती की तरह कजली के भी दंगल होते थे। आज भी कजरी लड़ाई जाती है।

मिर्जापुर में सबसे बड़ा कजली–दंगल सन् 1942 में हुआ था। ओझला पुल पर आयोजित इस दंगल में कमिश्नरी भर के लगभग तीस गिने–चुने अखाड़े शामिल हुए थे। उनमें राबर्ट्सगंज के प्रमुख कजली रचयिता कल्लू मास्टर को प्रथम पुरस्कार गंडेबिया साहब कलेक्टर ने दिया था। इसी के देखा–देखी वाराणसी जिले के चकिया तहसील में सन् 1943 में एक बड़ा दंगल आयोजित हुआ। इसमें लगभग 20 गिने–चुने अखाड़ों ने भाग लिया था। इसके बाद तीसरा बड़ा दंगल 1944 में अहरौरा में श्री सदायतन पाण्डेय की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें आठ अखाड़े सम्मिलित हुए थे और समस्याएं देकर कजलियां गवायी गयी थीं। इसमें ''अलबेली और नवेली'' समस्या पूर्ति पर कल्लू मास्टर को प्रथम पुरस्कार मिला था जिसकी कुछ पंक्तियां है–

खोया है मन मेरा, अलबेली के ध्यान में,
हय रहे न अपने ज्ञान में।
सिन चौदह की नारी नवेली,
संग में चम्पा लिये–चमेली
करती अठखेली–
अब आयी नजर जहान में।
हय रहे न अपने ध्यान में ....।

इसके बाद सन् 1955 में राबर्ट्सगंज में श्री पशुपति नाथ दूबे की अध्यक्षता में एक दंगल आयोजित था ''प्रेमभाव से भरी चुनरिया'' समस्या पूर्ति पर पं0 राम निहोर को पहला पुरस्कार मिला था। वैसे तो हर वर्ष कजली के दंगल होते ही हैं, किन्तु अब लोगों में रूचिबोध की कमी के कारण कजली–गायन के प्रति लोगों में उत्साह की कमी भी होती जा रही है।

मैं आप को पहले ही बता चुका हूँ कि इन आयेजनों में स्त्री–पुरुष दोनों शामिल होते थे। आज भी कजरहवा पोखरा पर मिर्जापुर में स्त्रियां कई दलों में होकर मुक्त भाव से कजली गाती हैं।

पहले वेश्याएं कजली गाने में बड़ी रूचि लेती थीं। उनके भी दंगल आयोजित होते थे। मिर्जापुर में सुन्दर वेश्या एक प्रमुख गायिका हो चुकी हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वह भले घर की कन्या थीं जिन्हें मिसिर नामक दलाल ने बुरी नजर से देखा था और उसके विरोध में ''नागर'' नामक एक पहलवान ने मिसिर को पराजित कर सुन्दर को अपनी बहन बना लिया था। इस सम्बन्ध में सुन्दर की एक कजली मशहूर है जो नागर के जेल जाने पर लिखी गयी थी–

अरे रामा नागर नैया जाला काला पनियां रे हरी,
घरवां में रोवैं नागर भाई औ बहिनियां रामा,
सेजिया पै रोवै बारी धनियां रे हरी।
खुटिया पर रोवैं रामा ढाल–तरवरिया रामा,
कोनवां में रोवैं कड़ाबिनियां रे हरी।

रहिया में रोवैं तोर संघी और साथी रामा,

नारघाट पै रोवैं कसबिनियां रे हरी।।

इसी कोटि में विश्वनाथ, बिहारी, मोती, मतई, मारकण्डेय भी मिर्जापुर के प्रमुख कजली गायक हो चुके हैं।

मैं आप को बताना चाहता हूं कि मिर्जापुर और बनारस कजली के सर्व प्रमुख क्षेत्र रहे हैं। पड़ोसी होने के कारण दोनों जनपदों के गायक आपस में घुले-मिले थे। भाषा और शिल्प में थोड़ा-बहुत अंतर होने के कारण मिर्जापुरी और बनारसी कजली के दो भाग हो गये। लय और धुन में भी थोड़ा-बहुत अंतर आया। मिर्जापुर में ''प्रेमघन'' प्रतिनिधित्व कर रहे थे तो वाराणसी में भारतेंदु बाबू और अम्बिका दत्त व्यास। मिर्जापुरी धुन से हटकर बनारसी शैली में लिखी व्यास जी की कजली का एक उदाहरण आप देखें-

कवन रंग बैनवां, कवन रंग सैनवां

कवन रंग तोरा रे नयनवां।

प्रत्युत्तर देखियें- छैल रंग बैनवां, मदन रंग सैनवां

पर असल रंग तोरा रे नयनवां।

इसी प्रकार- मींठे-मींठे बैनवां, फटक मेरे सैनवां

पै जियरा मोरा तोरा रे नयनवां।

और देखिये- अमृत नयनवां, मद के सैनवां,

पै जहर के तोरा रे नयनवां।

''सुकवि'' आजु कहां रहलू जनियां,

अटपट बैनवां सैनवां रे नयनवां।

इसी प्रसंग में बद्री नारायण चौधरी ''प्रेमघन'' की मिर्जापुरी कजरी के कुछ पद भी सुनिये-

साँचहुँ सरस सुहावन, सावन, गिरिवर विन्ध्याचल पै रामा।

हरी-हरी मिर्जापुर की कजरी लागै प्यारी रे हरी ।।

× × × × × × ×

घर घर झूला झूलै, करै कलोलै गलियां-गलियां रामा,

हरी-हरी ढुनुमुनियां खेलैं जुबती और बारी रे हरी।

मेहदी ललित लगाय करन में

साजे मूहीं सारी रामा

हरी-हरी कुलवारी तिय गावैं चढ़ी अटारी रे हरी।

वर्तमान में मिर्जापुर नगर की सांस्कृतिक संस्था 'त्रिवेणी', कजली को पुनः प्रतिष्ठापित करने में व इसे लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। त्रिवेणी संस्थापक श्री किशन बुधिया के नेतृत्व व कजली गायिका श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव के सक्रिय सहयोग से गत 10-12 वर्षों से लगातार कजली मेला का आयोजन किया जा रहा है जिसमें नए पुराने कलाकारों को मंच प्रदान किया जा रहा है और प्रत्येक वर्ष कलाकारों व विद्वानों का सार्वजनिक सम्मान भी हो रहा है। इसके लिए त्रिवेणी संस्था बधाई की पात्र है।

अब आइये कजली की उत्पत्ति पर भी विचार कर लें। कजली गीत कब, कहां से, कैसे, किस कारण उत्पन्न हुआ, यह बताना कठिन है, तब भी यह मत अब मान्य हो गया है कि कजरी या कजली की उत्पत्ति मिर्जापुर से ही हुई। भाषा, भाव, शैली, सामग्री सभी दृष्टियों से विचार करने में कजली मिर्जापुर की गीत-विधा प्रतीत होती है।

इसका आरंभ शक्ति पूजा से माना जाता है। मिर्जापुर विन्ध्याचल आरंभ से ही शक्ति साधना का केन्द्र रहा है। इसे प्रायः स्त्रियां गाती हैं और स्त्री या नारी स्वयं शक्तिस्वरूपा है। जिस प्रकार होली फाल्गुन में पुरूषों के उमंग का त्यौहार है, उसी प्रकार श्रावण-भाद्रपद भी नारी वर्ग के उमंग-उत्साह के माह हैं। जिस प्रकार गुजरात में श्रावणिका नामक ब्रत और बंगाल में दुर्गापूजा का ब्रत मान्य है, उसी प्रकार उत्तर प्रदेश में तीज और कजली का। भविष्य पुराण के उत्तर पर्व के बीसवें अध्याय में वर्णित हरिकाली नामक ब्रत इसी का पर्याय है।

कजली की उत्पत्ति के संबंध में और भी किंवदन्तियां कहीं सुनी जाती है। कहते हैं कंतित नरेश की पुत्री ''कजली'' ने अपने पति के वियोग में जिन विरह गीतों की रचना की थीं, वे ही कजरी के नाम से विख्यात हुए।

कुछ अन्य लोगों के अनुसार अष्टभुजी देवी का दूसरा नाम ''कज्जला देवी'' था। एक पौराणिक आख्यान के अनुसार यह देवी यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वहीं देवी हैं जिसे कंस ने बसुदेव देवकी की आठवां संतान समझकर पत्थर पर पटक दिया था और देवी स्वरूपा वह बालिका आकाश में उड़कर अष्टभुजा पहाड़ पर शक्ति के रूप में आकर अवस्थित हो गयी। बाद में जब वह यौवनावस्था को प्राप्त हुई तो कामान्ध होकर इधर–उधर विचरण करने लगीं। उसके सामने जो भी आता उसे शाप दे देती। एक बार एक मुसलमान जाति का व्यक्ति उसके सामने पहुंच गया। बालिका ने उस पर भी आक्रमण किया। तब उस व्यक्ति ने देवी को प्रसन्न करने के लिए एक गीत रच कर सुनाया। देवी रूप बालिका उस गीत पर प्रसन्न हो गयीं और कहा कि ऐसे ही गीत रचकर मुझे सुनाया करो। तभी से उसी लय–धुन में कजली–गीतों के लिखने की परंपरा शुरू हो गयी। विन्ध्यावासिनी देवी को भी काजल के टीके लगाये जाते हैं, इसीलिए कुछ लोग उन्हीं से कजली की उत्पत्ति मानते हैं।

मिर्जापुर में कजली के कई मेले लगते हैं। कजरहवा पोखरा का उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं इसके अतिरिक्त ओझला पुल के मेले का प्रसंग भी आ चुका है। इसके अलावा कंतित, विन्ध्याचल, अष्टभुजा, कालीखोह, तारा देवी, लायन्स स्कूल नारघाट, पक्काघाट, घण्टाघर और त्रिमोहानी पर भी कजली के एक दिन पूर्व रतजगा यानी 'जागरण' की रात मनायी जाती है। उस रात भर मुहल्ले में कजली गायी जाती है।

जहां तक शिल्प और काव्य तत्वों का सवाल है, कजली गीतों में उनकी प्रधानता है। तब भी लोक तत्व इसकी प्रमुख विशेषता है। जीवन का कोई भी पक्ष इससे अछूता नहीं है। आशा–निराशा, सुख–दुख, स्नेह, दया, करूणा, प्रेम, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य की बातों को सर्वत्र स्थान मिला है। प्रकृति चित्रणों को सर्वत्र स्थान मिला है। इन गीतों के अंत में ''ना'' ''हरे रामा'' ''हरी–हरी'' ''सांवरिया'', ''बलमुआ'', ''रामा हो रामा'' विरहा झालरिया मनवां, सुगनवां, ''झीर झीर बुंदिया'' आदि पचासों टेक मिलते हैं। जहां तक राग–रागिनियों का सम्बन्ध है, सामान्य लय–धुन के अलावा गृहस्थिनियों, नटिनियों, वेश्याओं की लय में कजलियां लिखी गयीं हैं। इसी के साथ बनारसी लय, मुण्डानी लय, विकृत लय, गवनहारिनी लय, विन्ध्याचली लय, खजरीवालों का लय आदि शैलियों में कजली गीत लिखे गये हैं।

राग–रागनियों से इनका कोई घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि यह नवीन ग्राम्यगीत है। एक ही गीत कई तर्ज में गाया जाता है। तब भी अधिकतर कजलियां ''मलार'' धुन में गायी जाती हैं। अन्य रागिनियों में गोंड़ बिन्ध, जंगला, वरवा, पीलू, झिझौरी, इनम, तिलक–कामोद, बिहारी और पहाड़ी आदि के भी स्वर गाये जाते हैं।

ताल भी कोई निश्चित नहीं है। अधिकतर तीन ताल बजते हैं। कहीं–कहीं खेमटा आदि अन्य ताल भी बजते हैं। धुन और तर्ज के अनुसार मात्राओं में भी घटाव–बढ़ाव होता रहता है। कजली गीतों की भाषा मिर्जापुरी बोली मुख्य है। इसके अलावा उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत में भी कजलियां लिखी गयी हैं। कजली गीत अधिकतर श्रृंगार, करूण, वीर, हास्य रस में लिखे गये हैं।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि कजली एक लोक काव्य–विधा है जिसकी उत्पत्ति ग्राम्य जीवन और संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिए हुई है। ❑

त्रिवेणी कजली महोत्सव में विद्वान डा0 अर्जुन दास केसरी एवं
गायिका कु0 ऊषा गुप्ता का सम्मान : 14.08.03

डा० वेदपति मिश्र
पी०सी०एस०
(अध्यात्म वेत्ता विद्वान, प्रतिष्ठित कवि-साहित्यकार, कई रचनायें प्रकाशित, सम्प्रति : अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) मिरजापुर)

''मानस'' में 'स्वार्थ' शब्द का निहितार्थ

वेदोद्भूत भारतीय धर्म एवं संस्कृति में श्रीराम न केवल परमतत्व के रूप में ग्राह्य हैं, अपितु वह एक जागतिक पुरूष एवं मानवता के मूर्तिमन्त आदर्श के रूप में ख्यातिलब्ध हैं। राम कथा पर आधारित विभिन्न रचित सद्साहित्यों में रामचरित मानस आम जनभाषा में रचित होने के कारण ही समाज में समादृत है। रामचरित मानस में वर्णित विभिन्न कथाओं एवं संवादों में तुलसी का निज संदेह कहीं-कहीं पर विशुद्ध वैयक्तिक है और इस व्यक्तिनिष्ठता में समाविष्ट जन सामान्य की पीड़ा भी दृष्टिगोचर होती है, भले ही यह चाहे बौद्धिक वर्ग की रही हो, अथवा सामान्य वर्ग की। इस प्रकार रामचरित मानस धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का निरूपण करने के अतिरिक्त जीवन में व्यक्ति के व्यावहारिक पक्ष का भी मार्गदर्शन करती है। अतः उसके व्यावहारिक सिद्धन्तो अथवा पक्षों का अध्ययन करने से पूर्व उसे सवर्तोभावेन पूर्णरूप से आत्मसात करना आवश्यक हो जाता है। रामचरित मानस में 'स्वार्थ' शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर हुआ है, और प्रायः साधारणजन व्यावहारिक जीवन में उसे निषेध-रीति से ही ग्रहण करते हैं किन्तु रामचरित मानस में 'स्वार्थ' शब्द के अर्थ की एक पृथक व्यञ्जना की गयी है जिसका निहितार्थ व्यक्त किया जाना समीचीन होगा। रामचरित मानस की एक सुप्रसिद्ध चौपाई है-

सुर नर मुनि सब कै यह रीति ।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीति ।।

भावार्थ यह है कि संसार में प्रेम का कारण ''स्वार्थ'' हे तथा सुर, नर, मुनि भी इस स्वार्थ की रीति से नहीं बच पाये हैं। अब यहाँ पर विचारणीय बिन्दु यह उत्पन्न होता है कि जब सुर, नर, मुनि भी 'स्वा' से अपने को पृथक नहीं कर सके तो साधारणजन उससे कैसे विमुक्त हो सकता है? ''स्वार्थ'' शब्द को निषेधात्मक भाव में क्यों अंगीकार किया जाता है? यहीं पर एक विडम्बना यह भी उत्पन्न होती है यदि समाज में ''स्वार्थ'' का बोलबाला होगा तो ''स्वार्थ'' के रहते परार्थ का चिन्तन कैसे हो सकता है? व्यावहारिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति प्रायः एक दूसरे पर यह टिप्पणी करते हुये सुना जाता है कि अमुक व्यक्ति बड़ा स्वार्थी है किन्तु वास्तविकता यह है कि जीवन के व्यावहारिक धरातल पर हम सभी स्वार्थी हैं।

वस्तुतः ''स्वार्थ'' के दो रूप होते हैं। एक स्वार्थ वह है जिसमें संम्पृक्त होकर लोग अहर्निश, झूठ, कपट तथा छलछद्म करते रहते हैं और दूसरा स्वार्थ वह है कि जिसमें परार्थ चिन्तन भी निहित होता है। यौगिकशास्त्रों में ''स्वार्थ'' के इसी भिन्नार्थ को स्वीकार किया गया है। रामचरितमानस में स्वार्थी बनने की कसौटी इतनी कठिन बतायी गयी है कि उस पर खरे उतरने की कल्पना आम जन दूर-दूर तक नहीं कर सकता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भरत को स्वार्थी के रूप में चित्रित किया है। एक ओर माता कैकेयी ने भरत के लिए विशाल-वैभव एवं सम्राज्य की ऐसी व्यवस्था की थी कि-

अवध राज सुर राज सिहाहीं।
दशरथ धन लखि धनद लजाहीं।।

अवध का कोष इतना सम्पन्न था कि धन का अधिपति कुबेर भी लज्जित हो जाता था और यह सोचता था कि अवध की तुलना में मेरे पास कुछ भी नहीं है। ''सिहाहीं'' शब्द साभिप्राय है। सम्मान में इन्द्र के समकक्ष ऐश्वर्य में कुबेर से भी धनाढ्य साम्राज्य की स्थापना माता कैकेयी ने भरत के लिए किया था किन्तु भरत ने सर्वस्व त्याग कर तीर्थराज प्रयाग से भीख माँगने का प्रयत्न किया है–

मागँहु भीख त्यागि निज धरमू।
आरत काह न करइ कुकरमू।।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि भरत आर्त क्यों हैं? चित्रकूट की सभा में भरत ने इस शंका का समाधान स्वतः ही किया है–

कहहुँ बचन सब स्वारथ हेतू।
आरत के चित रहइ न चेतू।।

आखिर भरत किस स्वार्थ के लिए आर्त हैं? अपना धर्म त्याग कर, अधीर बनकर गिड़गिड़ा रहे हैं तथा भीख माँग रहे हैं। भरत ने अन्ततः अपनी स्वार्थ की भीख को माँग ही लिया–

सीता राम चरन रति मोरे।
अनुदिन बढ़ई अनुग्रह तोरे।।

भरत की दृष्टि में भगवान के चरण कमलों का स्नेह ही एक मात्र ''स्वार्थ'' है। भरत जी के स्वार्थ की आंशिक सिद्धि भी होती है और उन्हें रामचन्द्र जी की चरण–पादुका मिलती है। चरण–पादुका सिर पर रखकर भरत अयोध्या के लिए प्रत्यावर्तित होते है और चरण पादुका की पूजा में मन केन्द्रित कर अपने ''स्वार्थ'' को हल हुआ समझते हैं किन्तु जब श्रीराम चौदह वर्ष बाद अयोध्या लौट आते हैं तब भरत जी का ''स्वार्थ'' पूर्णतः सिद्ध होता है ।

राम चरित मानस में भरत के बाद दूसरे ''स्वार्थ'' के रूप में कागभुशुण्डि जी वर्णित हैं । पक्षिराज गरूण को जब सन्देह हो गया तो वह अन्यान्य देवताओं के पास गुजरते हुए भगवान शिव के पास पहुँचे थे । भगवान शंकर ने गरूण जी से कहा कि आपका संशय इतनी शीघ्र निवारित होने वाला नहीं है ।

तबहिं होइ सब संसय भंगा ।
जब बहुकाल करिय सतसंगा ।।

पक्षिराज को आशुतोष–प्रलयंकर–शंकर ने कागभुशुण्डि जी के आश्रम में भेज दिया था जहाँ पहुँचने मात्र से गरूण जी का कुछ संशय दूर हो गया था और जब उनके कज्जलवर्ण–काकयोनि के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा तो कागभुशुण्डि जी ने उत्तर दिया–

जेहिंते कछु निज स्वारथ होई ।
तेहिं पर ममता कर सब कोई ।।

जिससे अपना निजी स्वार्थ सिद्ध होता है, उससे सभी ममता रखते ही हैं । पुनः यह प्रश्न उठा कि काग–तन से आखिर कौन सा स्वार्थ सिद्ध हुआ है? महर्षि कागभुशुण्डि जी ने शंका का निवारण करते हुए कहा –

ऐहिंतन राम भगति उर जामी ।
ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी ।।

सन्दर्भित प्रकरण अत्यन्त ही रोचक है क्योंकि कागभुशुण्डि जी ने गरूण की शंका निराकरण करते हुए यह कहा था कि पक्षिराज मैं तो सदैव कौवा ही रहा, यह बात सतय नहीं है क्योंकि पूर्वयोनियों में मैनें भी सुन्दर शरीर धारण किया था–

कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं,
मैं खगेस भ्रमि–भ्रमि जग माहीं ।
देखेउँ कर बस करम गोसाई,
सुखी न भयउँ अवहिं की नाई ।।

अभिप्राय यह है कि कौवे का तन जिसे अत्यन्त ही निकृष्ट समझा जाता है उसमें कागभुशुण्डि जी को भक्ति की उपलब्धि हुई । ऐसा सुरतन भी किस काम का जिसमें राम की भक्ति न हो? अतः कागभुशुण्डि जी की दृष्टि में भी राम–भक्ति ही जीव का एक मात्र ''स्वार्थ'' है–

स्वारथ सॉच जीव कहँ एहा ।
मन कर्म बचन राम पद नेहा ।।

वस्तुतः इस संसार में किसी भी जीव का सच्चा स्वार्थ मनसा, वाचा, कर्मणा भगवान के चरणारविन्द में अनुरक्ति का होना है । 'स्व' का अर्थ ही ''स्वार्थ'' होता है क्योंकि उसमें स्वयं की सिद्धि होती है । अतः केवल धन, दौलत, विशाल साम्राज्य ऋद्धि सिद्धि, समृद्धि को ''स्वार्थ'' नहीं माना जा सकता है क्योंकि धन, दौलत एवं विशाल साम्राज्य आखिर किसके पास रह गये? यह शरीर ही जब हमारा साथ नहीं देता तो इसके लिए संग्रहीत सभी प्रकार के सुख, साधन एवं भौतिक वस्तुएं आखिर कब साथ देंगी? इसी को लक्ष्य करके गोस्वामी जी ने लिखा–

करहिं मोह बस नर अघ नाना ।
स्वारथ रत परलोक नसाना ।।

मोहासक्त जीव विविध प्रकार के कुकृत्य करता है । वह अपने विवेक से तो स्वार्थ में ही अनुरक्त है किन्तु गोस्वामी जी ने ''परलोक नसाना'' शब्द से उसके सुष्ठु अर्थ को अभिव्यंजित किया है । विभीषण जब राम की शरण में गया था तो राम ने स्वयं अपने श्रीमुख से कहा था कि–

जननी जनक बन्धु सुत दारा,
तनु धनु भवन सुदृढ़ परिवारा ।
सबकै ममता ताग बटोरी,
मम पद मनहिं बॉध वरडोरी ।।

उपर्युक्त चौपाई में स्वार्थी बनने की कसौटी इतनी कठिन है कि सभी जीव उस पर खरे उतरने की कल्पना भी नहीं कर सकते । इष्ट–मित्र, सगे–सम्बन्धी, सबका त्याग सबसे नहीं हो सकता । कोई बिरला भक्त ही ''स्वार्थ'' की सच्ची कसौटी पर खरा उतर सकता है और इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में सच्चे स्वार्थियों की गणना करते हुए लिखा है कि–

सुर नर मुनि सबकै यह रीति ।
स्वारथ लागि करहि सब प्रीति ।।

अतः सुर, नर, मुनि ''स्वार्थ'' हेतु प्रीति करते हैं । इसी स्तर पर भरत जी कागभुशुण्डि, हनुमान जी, लक्ष्मण जी भी स्वार्थी सिद्ध होते हैं । गुरुदेव वशिष्ठ जी ने तो ''स्वार्थ'' एवं ''परमार्थ'' के सम्बन्ध में यह कहा है कि स्वार्थ और परमार्थ क्या हैं? उसे कौन जानता हैं?

नीती प्रीती परमारथ स्वारथ ।
कोऊँ न राम सम जान यथारथ ।।

अतएव ''स्वार्थ'' शब्द के निषेधात्मक अर्थ एवं प्रचलित भ्रम का परित्याग कर सभी जागतिक जीवों को वास्तविक अर्थो में स्वार्थी बनने का प्रयास करना चाहिए । इसलिए ''स्वयं'' से ''पर'' की ओर गमन करो । ''आत्म निर्वासन'' से ''आत्म–विस्तार'' की ओर गमन करो एवं ''मैं'' से ''हम'' की ओर गमन करो । ❑

''सिया राम मय सब जग जानी
करहु प्रनाम जोर जुग पानी''

विनय पत्रिका के राम

डा० अनुज प्रताप सिंह
(तुलसी साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान, उपाचार्य पी.जी. कालेज, अमेठी, मिरजापुर के मूल निवासी)

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद कंजारुणं।।1।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील नीरद सुंदरं।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक-सुतावरं।।2।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्य-वंश-निकंदनं।
रघुनंद आनंद कंद कोशल चंद दशरथ-नंदनं।।3।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदारू अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं।।4।।
इति बदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज-निवास कुरू, कामादि खल-दल-गंजनं।।5।। विनय पत्रिका - 45

वैसे अपने-अपने लेखे-जोखे की बात अलग-अलग होती है परन्तु मेरा तो लेखा-जोखा यह है कि विनय-पत्रिका के राम सबसे निराले हैं। स्वयं तुलसीदास के अन्य ग्रन्थों के राम से भी। बिलकुल अद्वैत। कवि ने समझा-समझाकर, गा-गाकर यही कहा है, अब तक भी कोई न समझे तो उसका क्या दोष? बीच-बीच में उन्होंने सिद्धान्त वाक्य भी दिये हैं। यह प्रयोग नया नहीं, बल्कि पूर्व प्रयुक्त है; कालिदास ने भी ऐसा ही किया है, अच्छा भी है।

सबके साथ यह भी आवश्यक है कि अपने भीतर भी तो राम हैं। ईमानदारी तो यह है कि भीतर वाले राम ही बाहर दिखाई पड़ते हैं। स्वरूप और दिशाएँ भी वही रहती हैं। बाहर वालें राम भीतर बस जायँ तो अच्छा है, पर बस नहीं पाते, यदि बसते भी हैं तो थोड़ी देर के उपरान्त ही भाग खड़े हो जाते हैं- क्या करें विपरीत सदन में कब तक रहें? इसी से बिहारी ने अपना हृदय भी टेढ़ा कर लिया था कि त्रिभंगी लाल को निवास करने में कोई कष्ट न हो; सीधी सन्दूक में टेढ़ी चीज नहीं रखी जा सकती है।

मैं तो गँवार हूँ, वह भी एक पिछड़े और छोटे से गाँव का। सीधी-सादी चीज पर विश्वास कर पाता हूँ। विनय-पत्रिका की बहुआयामी टीकाओं और समीक्षाओं पर भी पूर्णतया विश्वास नहीं कर पाता हूँ, प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ। सीधे विनय-पत्रिका को बार-बार पढ़ता हूँ- फिर विचार करता हूँ; हे राम! तुम 'मानस' से भी अलग खड़े हो - ऐसी अद्वैतता!!

आज कल चश्मा लगाने की परम्परा दृढ़ हो चुकी है और चश्में के प्रकार भी बढ़ गये हैं। बुजुर्ग मान लिये जाने के भय से कोई सफेद चश्मा जल्दी पसन्द नहीं करता और रंगीन चश्में से सब कुछ उसी रंग में दिखाई पड़ता है-फिर मौलिक रंग का पता कैसे चले? चश्मा उतार दें तो विशिष्टता चली जाय, सभ्यता भी। कौन विनोबा - सा एकाकी बैठे? आज कल बाजार के रंगीन चश्में साहित्य में भी आ गयें हैं। अगर इनसे बच सकें तो अच्छा ही होगा।

अब आइये सफेद चश्में से देखिये; विनय-पत्रिका के राम एक आडम्बरहीन, पर सर्व समर्थ अवतारी पुरुष हैं। वे अपने भक्तों के लिए सब कुछ देने वाले हैं। वे भक्त के अपराध तथ प्रदत्त दान का स्मरण कभी नहीं करते हैं। वे रघुकुल के होकर भी सबके कुल के तथा साक्षात् ब्रह्म के अवतारी पुरुष हैं। सत चेतन, व्यापक, आनन्द स्वरूप और सुन्दर हैं। कल्याण रूप को कौशल नरेश के यहाँ चार भाइयों के रूप में सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सामुज्य मोक्ष के चार फल उत्पन्न हुए हैं। वे यज्ञादि कर्म, धर्म, पृथ्वी और गौ, ब्राह्मण, भक्त और साधुओं को आनन्द देने वाले हैं। उन्होंने अनेक दलितों का उद्धार तथा सबलों का मानमर्दन किया है। परशुराम जैसे व्यक्ति का भी मस्तक झुका दिया और पिता के वचन को मानकर 14 वर्ष तक वनवासी बने रहे। वन में उन्होंने अनेक उद्धारक कार्य किये-जो उनके अवतार का उद्देश्य था।

राम का दुष्टों को दण्ड तथा सज्जनों को सुख देने वाला स्वरूप आदि से अन्त तक चलता है। जिसने उनके लिए आर्तनाद किया उनके उद्धार में उन्होंने कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखा। जिसको उन्होंने दण्ड दिया ऐसा कि वह कभी अपराध न कर सका। इन्द्र पुत्र, कपटी काक जयन्त को दण्ड दिया, कपटी एवं गर्विता शूर्पणखा को भली-भाँति पहचान कर

दण्ड किया। खर, त्रिशिरा, दूषण उनकी 14000 सेना तथा मारीच को मारा। मांसभक्षी गीध जटायु, नीच जाति की स्त्री शराबी के प्रेमवश होकर उनका उद्धार किये। ऐसे करुणा के सागर राम त्रिविध तापों को हरने वाले हैं। दुष्ट कबन्ध, महाबली बालि और रावण को मारकर उन्होंने शरणागतों की रक्षा की।

राम का विनय–पत्रिका में पारिवारिक, राजकीय नहीं, बल्कि लोक मंगलकारी तथा परमब्रह्म की सत्ता वाला रूप विशेष उजागर हुआ है। उनके सत्य, शील, शौर्य और सौन्दर्य को कवि ने बार–बार गाया है। यहाँ वंशगत विशेषता, चरित्र, राज्य व्यवस्था, राजा–प्रजा की बात न होकर भक्त और भगवान् की बात है। केवट की तरह भक्त अड़ गया है। राम का इतना व्यापक रूप और कहीं नहीं आ सका है – जिसमें सब कुछ समाहित हो जाता है। स्वयं तुलसी भी कवि और भक्त नहीं, बल्कि सन्त रूप से इसमें विद्यमान है। 'विनय–पत्रिका' के भाव पक्ष पर सन्तों का प्रभाव विशेष रूप से है। राम केवल विष्णु के अवतार नहीं, बल्कि शिव, कृष्ण तथा ब्रह्म हैं। सबसे सम्बन्धित कथाएँ भी इनके साथ जोड़ दी गयी हैं। वैष्णव और शैव, सगुण और निर्गुण, द्वैत और अद्वैत का इतना सहज और सूक्ष्म समन्वय और कहीं नहीं मिलेगा। सगुण और निर्गुण भी एक रस में रम गये हैं। यह अद्वैतता और एक रसता अन्यन्त्र नहीं है। यही रहस्य शेष, महेश, शारदा, नारद, सनक और वेद आदि नहीं समझ पाते हैं। जो लोग राम के रूप को समझ नहीं पाते हैं – वे कुत्ते की तरह दरवाजे–दरवाजे घूमते रहते हैं।

जिसने राम का स्मरण किया उसका निश्चित रूप से उद्धार हो गया। और देवताओं के भजन भाव से क्षणिक उपलब्धि हो सकती है। बहुदेवोपासना पर चोट करते हुए राम को ही सबका आश्रयदाता बताया है। उनका व्यक्तित्व पारसमणि के समान है – जिसके स्पर्श से कुधातु भी सुधातु हो जाती है। अजामिल, अहिल्या और गीध भीतर गये। ऊसर भी सुभूमि में बदल गया; स्वयं तुलसी भी राम को पाकर पूज्य हो गये। राम को पूजकर न जाने कितने लोग स्वयं पूज्य हो गये। ऐसे राम ही सर्वत्र हैं। कोई उनके दरवाजे से निराश नहीं गया।

ऐसे राम योग, यज्ञ, व्रत और उपवास से नहीं; सहजभाव से प्रप्य हैं। यहाँ ब्रह्माचार के महत्व को स्वीकार नहीं किया है। राम प्रेम के प्यासे हैं; षट्कर्म के नहीं। उनके चरणों की वन्दना करके ब्रह्मा और शिव ने सिद्धि को प्राप्त कर लिया। राम–पद–सेवा से शुक, सनकादि जीवन्मुक्त हो विचर रहे हैं। उनके चरण कमलों को पाकर लक्ष्मी अचल हो गयीं। वे सदैव सेवा में लगी रहती हैं। बिना राम की कृपा के कुछ होने वाला नहीं है। सूर्य, चन्द्रमा जब से भगवान् के नेत्र और मन से अलग हुए तभी से दुःख पा रहे हैं। वे रात–दिन आकाश में चक्कर काटते रहते हैं। वहाँ भी बलवान शत्रु राहु पीछा किये रहता है। यद्यपि गंगा जी देवनदी कहलाती है; यशस्विनी हैं, पर भगवान् के चरणों से अलग होकर वे विचर ही रही हैं – स्थिर नहीं हो सकीं। फलतः बिना भगवान् के विपत्तियों का विनाश नहीं हो सकता है। वेद पुराण सभी राम रति के लिए कहते हैं। वे गरीब निवाज हैं। वे दास की सहायता अपने विरद को भूलकर करते हैं। उन्होंने देवता, दैत्य नाग और मनुष्यों को कर्मों की सबल डोरी में बाँध रख है। उसी अखण्ड परम ब्रह्म को यशोदा जी ने प्रेमवश ऊखल में ऐसा बाँधा कि वे खोल नहीं सके। ब्रह्मा नाचते–नाचते जिसका पार नहीं पा सके – वहीं गोपरमणियों के संकेत पर नाचते रहे। अम्बरीष के लिए उन्होंने 10 बार अवतार लिये। जिसको संयमी मुनिगण योग, वैराग्य, ध्यान, जप और तप करके खोजते रहते हैं – उसी ने बन्दर, रीक्ष आदि चंचल नीच पशुओं से प्रीति की। लोकपालक, यमराज, काल, वायु, सूर्य और चन्द्रमा आदि– जिसके आज्ञाकारी हैं; वहीं प्रभु प्रेमवश उग्रसेन के द्वार पर हाथ में लकड़ी लिए हुए दरवान की तरह खड़े रहते हैं।

राम अपने विरोधियों के लिए भी परम उदार हैं। उन्होंने कैकेयी के मन को भी कभी नहीं दुखाया, जैसे मर्म स्थान के कुधाव को संजोया जाता है – वैसे ही उनके मन को संजोये रहे।

राम महिमा बड़ी विचित्र और अव्यक्त है। उनकी विचित्र रचना को देखकर मन–ही–मन समझकर रह जाना पड़ता है। कैसी अद्भुत लीला है कि इस संसार रूपी चित्र को निराकार (अव्यक्त) चित्रकार ने शून्य (माया की) दीवार पर बिना रंग के संकल्प से ही बना दिया ऐसा चित्र जो अमर है। जो मनुष्य विकारों को छोड़ देता है, अद्वैत में अपने को स्थिर कर लेता है, शत्रु–मित्र तथा अपने–पराये के भावों को छोड़ देता है – उसको सब कुछ देने वाले भगवान राम मिलते हैं। ऐसा राम–नाम ही सब कुछ है। इसी से प्रेम करने वाला जीव मुक्ति पा सकता है।

राम की आराधना सबसे सहज है। वे इतने उदार हैं कि बिना सेवा किये ही द्रवित हो जाते हैं। उनके जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण हैं। लंका जैसी सम्पन्ना स्वर्णपुरी को उन्होंने एक छोटे से संकोच के साथ नव मित्र विभीषण को सदैव के लिए दे दिया। राम के व्यक्तित्व में माया, मोह, लोभ कहीं नहीं है। ऐसे ही राम के लिए अनेक भक्तों ने अपना सब कुछ छोड़कर रामपद की सेवा की। राम नाम के जपने से जी की जलन अपने आप समाप्त हो जाती है – फिर कभी नहीं होती, कलिकाल के लिए तो वह कल्प तरु है। ऐसी सहज साधना कहीं नहीं मिलेगी। राम का इतना व्यापक, सबल और सहज रूप–चित्रण विनय–पत्रिका की अपनी विशेषता है। जो परम निकृष्ट, कंगाल और मूर्ख थे उनको भी राम ने निहालकर पूज्य बना दिया। वे पतित पावन, दलित उद्धारक, मर्यादा पुरुषोत्तम परम ब्रह्म, लोकनायक, आराध्य, दरिद्र नारायण, अनाथों के नाथ, शत्रुदमन और मित्र–रक्षक हैं। भाव–कुभाव जैसे भी प्राणी उनको स्मरण करता है, तर जाता है। अतः प्राणी मात्र को राममय भाव में लीन रहना चाहिए। □

प्रेम ही ईश्वर है

पं० उमाकान्त मिश्र
(पूर्व सांसद, (कांग्रेस) दो सत्र, संस्कृत विद्वान
कवि एवं लेखक, त्रिवेणी संस्थापक सदस्य)

महात्मा कबीर दास ने कहा है –

''पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होय।''

बड़ी उत्तम उक्ति है। सम्पूर्ण ज्ञान – विज्ञान, धर्म – कर्म, उपासना, कर्मकाण्ड का सारतत्व है। प्रेम ही ईश्वर है, प्रेम ही आनन्द है, प्रेम हीं मुक्ति का द्वार है। हृदय में वास्तविक प्रेम का उदय हो जाना चरम उपलब्धि है। प्रश्न उठता है कि प्रेम क्या है? प्रेम का स्वरूप क्या है? प्रेम की प्रकृति क्या है? देवर्षि नारद जी ने अपने भक्ति सूत्र में कहा है –

''अनिर्वचनीयम् प्रेम स्वरुपम्''

प्रेम का स्वरूप अनिर्वचनीय है। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अर्वणनीय है केवल अनुभूत किया जा सकता है। भिन्न–भिन्न प्रकार से प्रेम की अभिव्यक्ति होती है जैसे वात्सल्य प्रेम, श्रद्धायुक्त प्रेम, कामना पूर्ण प्रेम, वस्तु प्रेम, सौन्दर्य प्रेम, प्रकृति प्रेम इत्यादि। अनेक प्रकार के प्रेम हैं, किन्तु यह सभी प्रेम के प्रकार लौकिक हैं दैशिक हैं। वास्तविक प्रेम इन सबसे ऊपर है। वह अलौकिक प्रेम है जिससे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थ और प्राणी अपने प्रियतम हो जाते हैं। सर्वत्र प्रियतम ही दिखाई पड़ते हैं। जिस दिन और जिस क्षण यह घटता है सब कुछ आनन्दमय हो जाता है। ईश्वर मिल जाता है। हम ईश्वर और ईश्वर हम हो जाते हैं। हम अनन्त आनंद के सागर में तैरने लगते हैं। प्रश्न है कि इस प्रकार के प्रेम के स्तर पर हम कैसे पहुँचे? इसके लिए साधना की आवश्यकता है। साधना कोई जटिल नहीं है। इसमें किसी शास्त्रीय विधि के पालन की भी आवश्यकता नहीं है। हम अपने मन से अहंकार और द्वैत की भावना को दूर करने का प्रयास करें। हम किसी प्रकार का भेद करना बन्द कर दें। हम पदार्थों और प्राणियों को अपने से पृथक न समझें। अभ्यास यह अनुभव करने का कि जो हम हैं, वहीं सब हैं, जो सब हैं, वहीं हम हैं और धीरे–धीरे यह भावना दृढ़ होती जावेंगी और हम द्वैत से अद्वैत की ओर, भेद से अभेद की ओर बढ़ते जावेगे। अभेद दर्शन तथा अद्वैत दर्शन ही अनिर्वचनीय प्रेम उत्पन्न करता है। जहाँ द्वैत है वहाँ संघर्ष है, जहाँ भेद है, वहाँ विवाद है, जहाँ संघर्ष है विवाद है वहाँ लौकिक प्रेम ही नहीं उत्पन्न हो सकता, अलौकि प्रेम का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

एक बात का ध्यान रखें कि लौकिक से ही अलौकिक की ओर यात्रा की जा सकती है। लौकिक प्रेम अलौकिक प्रेम का द्वार है, मार्ग है। इसलिए लौकिक प्रेम के जो स्वरूप हैं उन्हें परम प्रेम प्राप्त करने का माध्यम बनाना अपरिहार्य है। वात्सल्य प्रेम, श्रद्धा पूर्वक प्रेम, कामना पूर्ण प्रेम इत्यादि जो लौकिक प्रेम के स्वरूप हैं इन्हीं को अलौकिकीकरण की दिशा में ले चलना होगा। लौकिक ही अलौकिक हो जाता है। बिना भौतिक प्रेम के आध्यात्मिक प्रेम नहीं प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए उपनिषद् के ऋषि ने कहा है –

''विद्यां चा विद्यां च यस्त्द्वेदोमयं सह, अविद्याया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमस्मुते।''

अविद्या अर्थात लोक विद्या अर्थात् अलोक। लोक से होकर अलोक में जाना होता है। अलोक में जाने का मार्ग लोक है। अतः प्रथम व्यापक लोक प्रेम का विकास हो। लोक प्रेम को विकसित और विस्तारित तथा परिष्कृत करके उसे अलोक में परिर्वतित किया जाना है। लौकिक प्रेम की अनेक विधायें है किन्तु जब लौकिक प्रेम अलौकिक प्रेम का रूप ले लेता है तब उसकी केवल एक ही विधा हो जाती है फिर वह केवल प्रेम रह जाता है। जिस क्षण इस विराट, विशाल, अगुण, अरूप, अगोचर, अभेद, अद्वैत प्रेम की अनुभूति की घटना घटित होती है उस क्षण सब कुछ परमानन्द अक्षर और अजर आनन्दमय हो जाता है। परमात्मा मिल जाता है। हम और ईश्वर या परमात्मा एकाकार हो जाते हैं। फिर कुछ पाना शेष नहीं रह जाता। फिर कहीं नहीं जाना है। मंजिल मिल गयी फिर तो जीवन और मृत्यु का अन्तर मिट गया और मृत्योर्माऽमृतम् गमय। घट गया अमृत की प्राप्ति हो गयी। □

जीवन क्या है

पं० उमाकान्त मिश्र
(पूर्व सांसद, (कांग्रेस) दो सत्र, संस्कृत विद्वान
कवि एवं लेखक, त्रिवेणी संस्थापक सदस्य)

जीवन क्या है? अर्थ मृत्यु का होता क्या है।
मानवता के आदि काल से प्रश्न खड़ा है।
अंतिम उत्तर की तलाश में जहाँ खड़ा था वहीं पड़ा है।
यही प्रश्न था देवहुती का कपिल देव से।
यहीं प्रश्न था नचिकेता का मृत्यु देव से।
यही प्रश्न था वीर पार्थ का वासुदेव से।
यही प्रश्न जो गूँज रहा है युगों–युगों से।
भूमण्डल में, नभ मण्डल में, मानवता के मन मण्डल में।
उत्तर आये किन्तु अधूरे।
वर्तमान तक हुए न पूरे।
क्या भविष्य में आ पायेगा पूरा उत्तर?
क्या सीमा है इस भविष्य की यह भी प्रश्न बड़ा है।
जीवन क्या है? अर्थ मृत्यु का होता क्या है।
मानवता के आदिकाल से प्रश्न खड़ा है।
अंतिम उत्तर की तलाश में जहाँ खड़ा था वहीं पड़ा है।
कौन कर रहा महा–सृजन यह कौन प्रणेता महा प्रलय का।
क्या नश्वर है, क्या शाश्वत है, क्या अन्तर है उदय विलय का।
कौन क्षितिज के आर–पार से युग कल्पों को हाँक रहा है।
कौन ग्रहों, नक्षत्रों की आकृति पर पर्दा ढाँक रहा है।
कौन छिपा है इस अनन्त लीला विनोद में।
कौन प्राण धारा भरता है इस प्रमोद में।
कोई कहता प्रकृति कर रही, कोई कहता पुरुष कर रहा।
कोई कहता प्रकृति–पुरुष दोनों करते हैं।
प्रकृति पुरुष में कौन बड़ा है?
जीवन क्या है? अर्थ मृत्यु का होता क्या है।
मानवता के आदिकाल से प्रश्न खड़ा है।
अंतिम उत्तर की तलाश में जहाँ खड़ा था वहीं पड़ा है।
प्रकृति पुरुष की लीला कहकर समझाया था देवहुती को कपिल देव ने।
श्रेय प्रेम में उलझाया था नचिकेता को मृत्यु देव ने।
कर्म, अकर्म, विकर्म, योग में सुलझाया था अर्जुन को श्री वासुदेव ने।
किन्तु अभी भी मानव मन में वही पुराना ही झगड़ा है।
जीवन क्या है? अर्थ मृत्यु का होता क्या है।
मानवता के आदिकाल से प्रश्न खड़ा है।
अंतिम उत्तर की तलाश में जहाँ खड़ा था वहीं पड़ा है।
है अनन्त यह प्रश्न नहीं है इसका उत्तर नहीं मिलेगा अंतिम उत्तर।
बन्द करो यह प्रश्न न खोजो कोई उत्तर।
जहाँ प्रश्न ही नहीं वहाँ क्या होगा उत्तर।
मिटना अन्तर जीवन और मरण का शायद होगा उत्तर।
जीवन क्या है? अर्थ मृत्यु का होता क्या है।
मानवता के आदि काल से प्रश्न खड़ा है।
अंतिम उत्तर की तलाश में जहाँ खड़ा था वहीं पड़ा है। ☐

रावण महान

रवीन्द्र कुमार पाण्डेय
(ग्रन्थों के/उपेक्षित पात्रों का चरित्र–चित्रण,
'मानस क्रन्दन' प्रेस में, फौजदारी अधिवक्ता)

लंका के राजा रावण के प्रति भले ही समाज में एक बुरी अवधारणा बनी हुयी हो लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। निःसंदेह रावण ने न तो एक राजपरिवार में जन्म लिया था और न ही राजपद उसे विरासत में मिली थी। वह एक बहादुर पिता का लड़का भी नहीं था कि वीरता उसे खानदान से मिली हो। उसे बहुत बड़ी ऐसी कोई अहेतुक कृपा भी नहीं प्राप्त थी जिसके बल पर वह आगे बढ़ा हो। वह क्षत्रिय वंश का भी नहीं था कि राजोचित गुण उसके खून में रहा हो। लंका का राज्य उसे दान–दक्षिणा से भी नहीं प्राप्त हुआ था, तो फिर इतने बड़े साम्राज्य का राजा होना, उसका विस्तार करना, लौकिक–अलौकिक शक्तियों को जीत कर अपने वश में करना, निःसन्देह उसकी स्वयं की अपनी वीरता कही जायेगी और यही रावण का मूल्यांकन होगा।

हमारी संस्कृति के सर्वमान्य ग्रन्थों में रावण की जो वंशावली मिलती है उसके अनुसार वह एक ब्राह्मण ऋषि का पुत्र था। श्रीमद्भागवत के चतुर्थस्कन्ध के अध्याय 1 का 35, 36, 37वें श्लोक के अनुसार उसकी वंशावली इस प्रकार है–

इस तरह रावण एक तपस्वी का पुत्र हुआ। यहाँ यह कहना कि वह ब्रह्मा के खानदान का था तो ब्रह्मा के खानदान की तो सारी सृष्टि ही है तो फिर सब रावण ही क्यों नहीं हो जाते।

महा भारत के वन पर्व में धर्मराज युधिष्ठिर द्वारा पूँछे जाने पर मार्कण्डेय ऋषि ने रावण की उत्पत्ति इस प्रकार बतायी है :–

ब्रह्मा
|
पुलस्त्य की पत्नी गौ
|
वैश्रवण (कुबेर)

कुबेर ने पितामह की अधिक सेवा करके लोकपाल, धन का स्वामी, अमरत्व, पुष्पक विमान, यक्षराज, महादेव जी की मित्रता, नल कुबर जैसा पुत्र व राज–राज की उपाधि आदि वरदान प्राप्त किये।

कुबेर द्वारा पिता पुलस्त्य की सेवा न किये जाने से नाराज पुलस्त्य जी योगबल से अपने शरीर का रूपान्तर करके विश्रवा नाम से विख्यात हुये। वे कुबेर से सदा कुपित रहते थे अतः कुबेर ने पिता की सेवा में तीन सर्वगुण सम्पन्न राक्षस कन्याओं को उनकी सेवा के लिए दिये। उन कन्याओं की सेवा से प्रसन्न विश्रवा जी ने उनसे निम्न संतति पैदा किये। उन तीन कन्याओं के नाम थे :-

इस वंशावली के अवलोकन से भी रावण एक तपस्वी का ही पुत्र था। अतः जो कुछ भी रावण ने किये, जैसे भी वह आगे बढ़ा, समस्त देवी देवताओं, लोकपालों-दिकपालों को जीता, राजा बना, साम्राज्य का विस्तार किया, वह सब कुछ रावण की अपनी कृति है, अपनी महानता है, इसके लिए वह किसी का मोहताज नहीं है। केवल एक गुण जो उसे विरासत में मिला वह था तपस्या का और रावण ने इस गुण के कारण ब्रह्मा जी की इतनी कठिन तपस्या किया कि वे उस पर बहुत प्रसन्न हुये फिर भी उसने न तो राजपद माँगा न धन माँगा और न अमरत्व ही माँगा। उसे अपनी मेहनत व दृढ़ इच्छाशक्ति पर विश्वास था जिसके कारण वह राजा बना तथा बड़ी से बड़ी विजय प्राप्त किया। इच्छामृत्यु का अधिकार रखने वाले राजकुमार भीष्म एक बहुत बड़े राजघराने की विरासत रखते हुये भी सम्राट के रूप में वह ऊँचाई नहीं प्राप्त कर सके जिस ऊँचाई को एक तपस्वी का बेटा रावण ने प्राप्त किया।
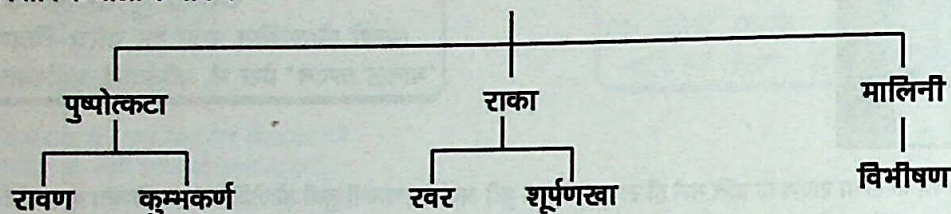
रावण के बारे में ज्यादातर लोग यही जानते हैं कि वह एक बड़ा अन्यायी राजा था। उसका भाई कुम्भकर्ण भयंकर राक्षस था। उसका लड़का मेघनाद देवताओं के राजा इन्द्र को जीत लिया था। रावण ने स्वयं सभी देवी-देवताओं, लोकपाल-दिकपाल आदि को कैद कर लिया था; वह ऋषियों-मुनियों को कष्ट देता था। सीता जैसी नारी का अपहरण कर लिया था लेकिन जितने ये दुर्गुण गिनाए गये हैं ये सारे काम एक साधारण आदमी कदापि नहीं कर सकता। निश्चय ही उसके अन्दर कोई ऐसी असाधारण प्रतिभा रही जिसकी वजह से उसने देवी-देवता, लोकपाल-दिकपालों को जीता; बड़े-बड़े राजाओं से बैर ठाना; उनका मान मर्दन किया; जिसके चलने से शेषनाग जैसे वीरों से रक्षित पृथ्वी डोलने लगती थी, देवता लोग मारे डर के कन्दराओं में छिप जाते थे। गोस्वामी जी ने लिखा है :-

"चलत दशानन डोलति धरनी।
गर्जत गर्भ श्रवहिं सुर रवनी।।
रावन आवत सुनेउ सकोहा।
देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा।।

सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वरुण, पवन, काल, यमराज आदि सब देवता उसकी आशा निहारते रहते थे। उसे राजपद उत्तराधिकार में नहीं प्राप्त हुआ था बल्कि उसने प्रजापति ब्रह्मा द्वारा पालित, पोषित, रक्षित लोकपाक कुबेर को अपने पुरुषार्थ से हराकर उनका राजपद छीनकर तब राजपद प्राप्त किया था और इसके बाद उसने वही किया जो हर समर्थवान राजा करता है। उसने अपने राज्य का विस्तार किया, लंका को अपनी राजधानी बनाया, मारीच सुबाहु, खर-दूषण जैसे वीरों को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया तथा जप-तप, पूजा-पाठ और यज्ञ करने के बहाने अपने राज्य क्षेत्र में अनाधिकार कब्जा करने वाले लोगों का दमन किया। प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में क्षत्रिय ही राजा होते थे और राजपद वंशानुगत होता था लेकिन रावण न तो क्षत्रिय था और न राजपद उत्तराधिकार में पाया था। वह एक तपस्वी का पुत्र तथा पौत्र था और अपने पौरुष के बल पर इतना पराक्रमी राजा हुआ। एक कुलीन ब्रह्मण कुल में जन्म लेने वाला व्यक्ति जिसके पूर्वज पूजा पाठ व तपस्या करके अपना जीवन यापन करते थे, उस कुल में जन्मा व्यक्ति यदि इतना समर्थशाली राजा बन जाय कि देवता, नाग किन्नर, यक्ष, लोकपाल, दिकपाल आदि उसके बस में हो जायँ तो निःसन्देह ही वह कोई महान व्यक्ति ही होगा। उसे कम करके नहीं आँका जा सकता। अतः इतनी बड़ी उपलब्धियों को अपने पुरुषार्थ से हाँसिल करने वाला रावण निश्चय ही एक

महान व्यक्ति था।

अब प्रश्न यह उठता है कि जिन बुराइयों के बारे में उसे दोषी कहा जाता है क्या उसके अन्दर थीं? रावण एक वीर राजा था। उसने कुबेर जैसे लोकपाल को हराकर सत्ता सम्भाली थी। अतः साम्राज्य का विस्तार करना राजा का धर्म होता है। हर बहादुर राजा दूसरे राजा पर आक्रमण करके अपने साम्राज्य की सीमायें बढ़ाता है। यदि रावण ने यह कार्य किया तो कोई बुरा नहीं किया, भले हीं उसने देवताओं को हराकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया हो। एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है कि रावण ने किसी कमजोर राजा को दबाया हो, या उससे लड़ाई किया हो। उसके प्रतिद्वन्दी हमेशा से बाणासुर, बाली, देवता, लोकपाल इत्यादि रहे हैं। उसने उन देवी देवताओं को जींत कर अपने कैदखाने में बंदी बनाया था जो अत्यन्त ही स्वार्थी व डरपोक थे तथा जिनके कारनामे देवत्व के लायक नहीं थे। उनका रहन-सहन तो ऊँचा था लेकिन उनका कार्य निम्न प्रकृति का था। वे दूसरे का उत्कर्ष नहीं देख सकते थे। मानसकार ने अपने मानस में लिखा है :-

''ऊँच निवास नीच करतूती।
देखि न सकइ पराइ विभूती।।''अयोध्या काण्ड

रावण ने उस इन्द्र को जीता था जो नारद जैसे तपस्वी का तप भंग कराया था। जिसे इतना ज्ञान नहीं है कि नारद किस लिए तप कर रहे हैं भला उस व्यक्ति को देवताओं के राजपद पर बना रहना न्यायोचित है। उसने उस इन्द्र का मान मर्दन कराया जो जरूरत बस नहीं बल्कि पुत्र मोह के कारण कर्ण से उसका कवच कुण्डल उतरवा लिया। उसने उन देवताओं को जीता जो राम जैसे व्यक्ति को राजा होना नहीं देखना चाहते थे और उन्हे जंगल भेजने के लिए सरस्वती जैसी देवी से गलत कार्य किये जाने का सहारा लिया है। उसने उन स्वार्थी देवताओं को हराया जो अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए राम को वनवास दिलवाये। देवता बहुत ही स्वार्थी थे। वे राम रावण युद्ध में केवल जय हो जय हो बोल रहे हैं। वे किसी का पक्ष नहीं ले रहे हैं कि पता नहीं कौन युद्ध में जीत जाय। वे युद्ध में मन हीं मन राम की विजय तो स्वार्थवस चाहते हैं लेकिन उनकी कोई मदद नहीं कर रहे हैं। जब रावण के सभी योद्धा जैसे कुम्भकर्ण, मेघनाद, प्रहस्त, दुर्मुख, अकम्पन आदि युद्ध में मारे गये और केवल रावण बचा है, और उन्हें जब पूर्ण विश्वास हो गया कि अब राम की ही विजय होगी रावण हार जायेगा तब इन्द्र अपना रथ राम के पास भेजते हैं। जब तक रावण के सभी योद्धा मौजूद थे और रावण की हार तैं नहीं थी तब तक ये स्वार्थी देवताओं ने राम की कोई मदद नहीं की, जबकि राम के पिता दशरथ दैवासुर संग्राम में देवताओं की ओर से स्वयं युद्ध करने गये थे। परिणाम की जानकारी उन्हें नहीं थीं। अतः ऐसे स्वार्थी व डरपोक देवताओं को जीतकर रावण ने विशेष बुरा कार्य नहीं किया था। उसने ऐसे स्वार्थी देवताओं को हराया था जो जनक के दरबार में छल से आकाशवाणी कराके रावण को सीता स्वयंवर की प्रतियोगिता में भाग नहीं लेने दिये थे। उसने ऐसे राम से युद्ध मोल लिया था जिन्होंने स्वार्थ बश छल से बाली जैसे योद्धा को मारा था। उसने उस राम को चुनौती दिया था जिसने एक स्त्री का नाक कान काटने में तनिक भी मर्यादा नहीं निभायी।

रावण एक असाधारण व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था। पीठ पीछे उसकी हजार बुराई करने वाले लोग सामने पड़ने पर कतराने लगते थे। राज्य के हित में शासन द्वारा कभी कदा कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं, इसके लिए शासक को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। राज्य की प्रतिष्ठा राजा की प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है। यदि किसी राजा की बहन का नाक-कान काट कर कुरूप कर दिया जाय तो यह उस राजा के साथ-साथ सम्पूर्ण राज्य का अपमान माना जायेगा और अपने इस अपमान की प्रतिक्रिया स्वरूप यदि रावण ने उस व्यक्ति की पत्नी का हरण किया जिसने उसकी बहन का नाक-कान काटा था तो रावण ने लंका राज्य का अपमान नहीं किया बल्कि उसकी प्रतिष्ठा ही बढ़ायी। इस बैर का परिणाम चाहे कुछ भी रहा हो लेकिन केवल इस बिना पर रावण को अन्यायी कहा जाना उसके साथ न्याय न होगा। रावण ने सीता हरण के बाद यदि वह दुःचरित्र स्वभाव का होता तो सीता के साथ जबरन बलात्कार तक करके सीता को हमेशा के लिए बदनाम कर सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। सीता स्वयंवर के समय ही यदि वह चाहता तो सीता को जबरन उठाकर ले जा सकता था; लेकिन उसने स्वयंवर के नियम को नहीं तोड़ा। वह इतना बड़ा आदर्शवादी था कि राम द्वारा सेतुबन्ध रामेश्वर की स्थापना के बाद पूजन व प्रतिष्ठा के समय राम अकेले ही पूजन कर रहे थे। राम विवाहित थे। विवाह के बाद हर धार्मिक कृत्य अपनी स्त्री के साथ करना चाहिए। राम ने एक शब्द भी रावण से शिवपूजन के लिए सीता को वापस किये जाने की बात नहीं कही लेकिन फिर भी रावण स्वयं सीता को ले आकर राम के साथ शिवपूजन करवाया। क्या वह उसके चरित्र का उदात्त पक्ष नहीं कहा जायेगा।

रावण के बारे में यह कहा जाता है कि उसने ऋषियों–मुनियों को अकारण दण्ड दिया करता था। यदि ऐसा होता तो विश्वामित्र के साथ तत्कालीन बहुत से ऋषि मुनी अपनी यज्ञ क्रिया की राववाली के लिए सामूहिक रूप से दशरथ के पास जाकर राम लक्ष्मण की मांग करते लेकिन विश्वामित्र को छोड़कर एक भी ऐसा नाम नहीं आता जिसने यज्ञ रक्षा के लिए दशरथ से निवेदन किया हो। ये वही विश्वामित्र हैं जो ब्रह्मर्षि होने के लिए तपस्या करते हैं लेकिन उर्वशी को देखकर काम पीड़ा से उनकी तपस्या भंग हो जाती है। उसने उन्हीं ऋषियों को पीड़ित किया जिनके चरित्र को लेकर संदेह था। वे दिन में तो पूजा पाठ और जप करते थे लेकिन रात्रि के अन्धेरे में छद्म वेष धारण कर अहिल्या जैसी सत्यवती नारी के साथ बलात्कार का अपराध करते थे। उसने उन ऋषियों मुनियों का दमन किया जो बनते बहुत बड़े ब्रह्मचारी थे लेकिन जिनका वीर्य स्खलन सरोवर में नहाती हुयी भोली भाली कन्याओं को देखकर हो जाता था। एक नहीं अनेक इस तरह के उदाहरण भरे पड़े हैं। महर्षि पाराशर ने केवट कन्या के साथ बिना ब्याह किये सम्भोग किया। गौतम के पुत्र शरद्वान का जानपदी नामक देवकन्या को देखकर उनका शुक्रपात हुआ। चन्द्रमा ने गौतम पत्नी अहिल्या के साथ धोखे से पत्नी सम्बन्ध बनाया। भरद्वाज का वीर्य घृताक्षी नामक अप्सरा को स्नान करते देखकर स्खलित हो गया था। महर्षि विभाण्डक उर्वशी को देखकर विमोहित हो गये और सरोवर स्नान करते समय सरोवर में ही उनका वीर्यपात हुआ। उसने उन देवताओं को पद दलित किया जो कुमारी कन्याओं द्वारा जल चढ़ाने तथा उनका स्मरण करने पर उनका कौमार्यत्व भंग कर देते थे। यह सब दोष रावण में नहीं था। यद्यपि वह राक्षस राजा था जिनके समक्ष कोई मान्य नैतिकतायें नहीं होतीं फिर भी उसने नीति का ही पालन किया है। उसने देवता, यक्ष, गंधर्व, नर, किन्नर आदि सभी की कुमारियों को जीत कर लंका ले आया था लेकिन किसी के साथ जबरन बलात्कार किये जाने का कोई दृष्टान्त उसके नाम से नहीं जुड़ा है। उसने इन सबके साथ विवाह किया तब पत्नी सम्बन्ध बनाया होगा। गोस्वामी तुलसीदास जैसे विचारक व रचनाकार ने रावण के विषय में लिखा है–

> "देव यक्ष गंधर्व नर किन्नर नाग कुमारि।
> जीति बरी निज बाहु बल बहुसुन्दर बर नारि।।

रावण जीतने के बाद उनसे विवाह किया तब जो कुछ किया सो किया। सीता प्रसंग में भी उसने बलात्कार किये जाने का कोई प्रयत्न नहीं किया है। यदि वह चाहता तो ऐसा करने में वह समर्थ था। अतः यह सब रावण चरित्र के उजागिर पक्ष हैं।

रावण को यदि एक बहुत बड़ा आदर्शवादी नहीं कहा जा सकता तो वह किसी आदर्शवादी से छोटा भी नहीं था। उसने राम की तरह किसी वीर का छिपकर बध नहीं किया। सीता हरण की घटना यदि उसके आदर्श को गिराने की घटना मानी जायेगी तो स्वयं भगवान कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया है; सुभद्रा का हरण स्वयं अर्जुन से करवाया है। भीष्म जैसे आदर्शवादी ने काशीराज की एक नहीं, दो नहीं, तीन–तीन कन्याओं का बलात हरण किया है जिसमें दो को तो अपनाया लेकिन एक को अपनाया भी नहीं। इसके लिए भीष्म को परशुराम जैसे अवतारी पुरुष से भी लड़ना पड़ा है। किसी सरोवर में नहाती हुयी कन्याओं को देखकर उसका वीर्य नहीं स्खलित हुआ है। उसने किसी कुमारी कन्या का कौमार्यत्व नहीं भंग किया है। किसी सीधी सादी चरित्रवान ऋषि पत्नी के आश्रम में वह रात्रि में बुरी नियत से प्रवेश नहीं किया है। उसने देवताओं के गुरु वृहस्पति की तरह अपने भाई की गर्भवती पत्नी से जबरन मैथुन नहीं किया है। यह सब रावण के आदर्श ही तो कहे जायेगे। यदि इतने आदर्शों के होने के बावजूद भी रावण को एक बड़ा आदर्शवादी बताने में या मानने में किसी को झेप लगती हो तो इतने सब आदर्शों के रहते हुये उसे छोटा आदर्शवादी भी नहीं कहा जा सकता। इसका निर्णय सुधी पाठकगण करेंगे।

रावण बहुत बड़ा विद्वान व प्रकाण्ड पंडित था। वह बहुत बड़ा भक्त भी था, उसने अपने मस्तक को काट कर शंकर की पूजा याचना की थी। वह हजारों वर्ष तक एक पैर पर खड़ा रहकर पंचाग्नि तापते हुये केवल हवा पी कर कठोर तपस्या भी की थी। वह बहुत बड़ा पंडित था, इसका उदाहरण सेतुबन्ध रामेश्वर के समय शिवपूजन के वास्ते सीता को स्वयं ले आकर राम के साथ पूजन कराया है। उसके ज्ञान का लोहा स्वयं राम मानते थे जिन्होने लक्ष्मण को ज्ञान सीखने हेतु मृत्यु शैया पर पड़े हुये रावण के पास भेजा थे, भले ही राम के संसर्ग में रहने के बावजूद लक्ष्मण में यह ज्ञान न आया हो कि किसी भी ज्ञानी से ज्ञान प्राप्त करने हुते उसके चरण में रहकर ज्ञान की दिक्षा ली जाती है न कि सिरहाने बैठकर। रावण का ज्ञान मरते वक्त तक बना रहा और ज्ञान की शिक्षा लक्ष्मण को देने में उसे कोई एतराज नहीं था जिनके बड़े भाई ने उसका वध किया हो और स्वयं लक्ष्मण ने उसकी बहन का नाक कान काटा हो। वह शिक्षा के महत्व को समझाता था तथा गुरु शिष्य

की पवित्र परम्परा को इज्जत देकर ही उसने लक्ष्मण को उपदेश किया नहीं तो वह उन्हें डाँट कर लौटा भी सकता था।

रावण बहुत बड़ा स्वाभिमानी व्यक्ति था। वह अपने स्वाभिमान के साथ किसी भी तरह का समझौता करने को तैयार नहीं था। अपनी बहन का नाक–कान राम लक्ष्मण द्वारा काटे जाने की बात सुनकर व देखकर उसके स्वाभिमान को गहरी ठेस लगी थी। जिस रावण को क्रोधित जान लेने पर समस्त देवतागण अपनी पत्नियों को छोड़कर सुमेरु पर्वत की गुफाओं में छिप जाते थे, जिस रावण के बस में ब्रह्मा की सृष्टि के समस्त तनधारी भय खा–खा कर उसकी चरण वन्दना करते रहते थे, जिस रावण को समस्त देवता व दिकपाल हमेशा हाथ जोड़े उसकी आँखों के इशारे को देखते रहते थे। गोस्वामी जी ने रामचरित मानस में लिखा है–

रावन आवत सुनेउ सकोहा।
देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा ।। बा.का. 182 दोहा
ब्रह्म सृष्टि जँह लगि तनुधारी।
दशमुख बसतर्त्ती नर–नारी।।
आयसु करहिं सकल भयभीता।
नवहिं आइ नित चरन बिनीता।।बा.का. 182 दोहा
कर जोड़े सुर दिसिप बिनीता।
भृकुटि विलोकत सकल समीता।।
रावन नाम जगत जस जाना।
लोकप जाके बंदी खाना।। लंका काण्ड

उस ऐसे रावण की बहन का कोई नाक–कान काट ले और वह उससे बदला न ले, भला रावण जैसे स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए क्या यह संभव था? अतः वह मारीच, माल्यवंत, मंदोदरी व विभीषण द्वारा लाख समझाये जाने के बावजूद उसका स्वाभिमान, उसका जमीर उसे समझौता के लिए इजाजत नहीं दे रहा था और अंतिम दम तक वह स्वाभिमान के साथ समझौता न कर राम से लड़ता रहा। इसके लिए उसने पुत्र खोया, भाई खोया, धन–धान्य व सम्पूर्ण राज्य यहाँ तक कि स्वयं भी बलिदान हुआ लेकिन अपने स्वाभिमान से डिगा नहीं।

रावण बहुत बड़ा देश भक्त व प्रजा पालक था। उसके प्रजा पालन का बस एक ही उदाहरण काफी होगा। रावण जब कुबेर को हराकर लंका पर कब्जा करके अपनी राजधानी बनाया तो पहले रावण घूमफिर कर सारे नगर का निरीक्षण किया कि यह नगर उसके तथा उसके प्रजा के लिए रहने लायक सुरक्षित है, और सब तरह से इत्मिनान हो जाने के बाद ही उसने उसे अपनी राजधानी बनायी तथा योग्यतानुसार नगर के सभी घरों को अपनी राक्षस प्रजा को बाँट कर सुखी किया। यह एक कोरी कल्पना नहीं है बल्कि गोस्वामी जी ने बाल काण्ड में लिखा है–

फिरि सब नगर दसानन देखा।
गयउ सोच सुख भयउ विशेषा।।
सुंदर सहज अगम अनुमानी।
कीन्ह तहाँ रावन रजधानी।।
जेहिं जस जोग बाँटि गृह दीन्हे।
सुखी सकल रजनीचर कीन्हे।।

प्रजा पालक के साथ–साथ वह परिवार पालक भी अच्छा था। अपने विवाह के बाद अपने दोनों भाइयों का विवाह भी उसने खुशी–खुशी किया–

हरषित भयउ नारि भलि पाई।
पुनि दोउ बंधु विआहेसि जाई।।

वह अपने परिवार से भी बहुत सुखी था। कोई किसी तरह की कमी नहीं थी

सुत समूह जन परिजन नाती।
गनै को पार निशाचर जाती।।

"कुम्भ करन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहु जितेउ चराचर झारि।।
कुमुख अकंपन कुलि शरद धूमकेतु अतिकाम।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुमट निकाय।।

रावण अपनी प्रजा के प्रति अन्यायी नहीं था। उसकी लंका में हर तरह और हर विचार धारा के लोग निवास करते थे और रावण सबका संवर्धन करता था। तामसी प्रवृत्ति की बहुतायत वाली लंका नगरी में विभीषण जैसा संत भी रहता था और उसको तब तक लंका से नहीं निकाला गया जब तक वह लंका राज्य के प्रति समर्पित रहा। जैसे ही उसकी निष्ठा लंका राज्य के शत्रु के प्रति बढ़ी, उसे बड़ी निर्दयता के साथ लंका से निकाला गया। लंका में रहकर भी विभीषण जैसे संत के लिए यह छूट थी कि वह चाहे जिसकी भक्ति करे। प्रमाण है कि सीता के खोज के समय हनुमान ने विभीषण को राम राम का जप करते हुये पाया तथा उनके महल में तुलसी का पौधा भी लगा हुआ था। फिर यह कहना कि रावण ने जप–तप करने वालों का विध्वंस किया, उन्हें हानि पहुँचायी एक दम गलत हो जाता है। यहाँ पर यह शंका भी उठायी जा सकती है कि चूँकि विभीषण उसका भाई था अतः रावण ने उसे ऐसा करने की छूट दे रखी हो लेकिन अन्य किसी को ऐसी कोई छूट नहीं थी। लोगों की यह शंका तथा रावण के ऊपर इस तरह का आरोप लगाना उचित नहीं है क्योंकि रावण ने उसी भाई को देश के प्रति विद्रोह करने तथा घर का भेद शत्रु को देने के कारण समासदों से भरी सभा में लात मार कर निकाल दिया था। रावण के ऊपर इस तरह का आरोप इस तरह से भी निराधार हो जाता है कि न केवल विभीषण को ईश्वर की भक्ति के लिए छूट थी बल्कि उसकी सेवा शुश्रुषा व रक्षा में लगे हुये कर्मचारियों को भी छूट थी कि वे जिसकी चाहें भक्ति करें। प्रमाण स्वरूप त्रिजटा नाम की राक्षसी जिसे रावण ने अशोक वाटिका में सीता की रखवाली के लिए नियुक्त किये गये रक्षकों का नायक नियुक्त किया था, उसे भी राम नाम जपने की छूट थी। गोस्वामी जी ने सुन्दर काण्ड में लिखा है–

त्रिजटा नाम राक्षसी एका।
रामचरन रति निपुन विवेका।।

अब भला बताइये कि जिस सीता को रावण छल से हरण करके लंका में ले आया, जिस सीता हरण के लिए वह अपने अहम् को ताक पर रख मारीच के यहाँ स्वयं गया; जिस सीता के लिए उसने जटायू जैसे वीर की हत्या किया भला उसकी सुरक्षा में राम भक्तों को लगाकर कैसे किसी तरह की ढील देता। निश्चय ही रावण के राज्य में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की छूट थी। उसके कर्मचारियों के लिए यह बाध्यता नहीं थी कि वे केवल राक्षस धर्म का ही पालन करें और फिर सुरक्षा जैसे नाजुक व संवेदनशील पद पर त्रिजटा जैसी रामनुयायी को रख कर रावण ने यह दिखा दिया कि उसके राज्य में किसी भी धर्म को मानने की छूट थी और धर्म के आधार पर कोई भेदभाव किसी कर्मचारी की नियुक्ति के लिए नहीं बरता जाता था। इसी तरह लंकिनी नाम की निशाचरी भी जो लंका राज्य की सुरक्षा व्यवस्था में लगायी गयी थी, वह भी राम भक्त थी। रावण ने उसे भी नियुक्त किया था। चूँकि वह लंका की सुरक्षा के प्रति निष्ठावान थी अतः उसे इस कारण नहीं हटाया गया कि वह राम भक्त थी। गोस्वामी जी ने लिखा है कि वह हनुमान को देखकर और यह जान कर कि वे राम के दूत हैं, वह अपने को बहुत पुण्यवान मानती है–

"तात मोर अति पुन्य बहूता।
देखेऊँ नयन राम कर दूता।।"

उसके पवित्र विचार देखिये। वह कहती है–

"तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।"

इसी तरह रावण ने सुखेन वैद्य को भी लंका में रहने की पूरी छूट दे रखी थी जबकि उसने उसके शत्रुओ का सफल इलाज किया; वह भी ऐसा शत्रु जिसने न केवल लंका पर चढ़ाई की है बल्कि उसकी बहन का नाक–कान काट कर सदा के लिऐ कुरुप बना दिया था। रावण मंदोदरी जैसी पत्नी का भी परित्याग नहीं करता है और न तो इस आधार पर कोई दण्ड ही देता है कि वह बार–बार राम की महिमा का बखान रावण को सुनाकर उनके सामने नतमस्तक हो जाने की सलाह देती है, क्योंकि राम के प्रति आसक्ति रखते हुये भी मंदोदरी की निष्ठा रावण के प्रति या लंका राज्य के प्रति कहीं से कम नहीं थी।

इन सब प्रकरणों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि रावण किसी भी धर्म या धर्मानुयायियों के खिलाफ नहीं था और केवल इस आधार पर उसने पूजा–पाठ या यज्ञ विध्वंश किये जाने की बात नहीं की है। जब भी औ जहाँ भी उसके खिलाफ विद्रोह की बात कही गयी या विद्रोह का ताना–बाना बनाया गया या लंका राज्य के प्रति अनाधिकार आक्रमण या अतिक्रमण किया गया तो उसने किसी को क्षमा नहीं किया फिर वह चाहे राम हो या विभीषण चाहे कोई ऋषि मुनी हो या चाहे कोई सगा सम्बन्धी। यही कारण है कि राम भक्ति का दावा करने वाला विभीषण भले ही अमरत्व का आशीष पा बैठा हो या बहुत बड़ा भक्त हो गया हो लेकिन समाज में वह आज भी आदरणीय नहीं है तथा जिस तरह से अन्य राम भक्तों का नाम सुनकर श्रद्धा से सर नतमस्तक हो जाता है उस तरह से किसी प्रकार की कोई श्रद्धा समाज के किसी भी कोने से विभीषण के प्रति नहीं उठती है। भले ही राम ने स्वयं विभीषण को लंका का राजपद दे दिया हो लेकिन आज भी लंका के राजा के रूप में रावण का ही नाम लिया जाता है, विभीषण का नहीं बल्कि लंका के पतन के लिए विभीषण को ही जिम्मेदार माना जाता है। 'घर का भेदी लंका ढाहे' यह जन–जन की उक्ति बनी हुयी है; कोई भी विभीषण को भक्त राज विभीषण मानने को तैयार नहीं है।

"जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।"

स्वदेश प्रेम न होने के कारण विभीषण राम का सानिध्य पाने के बावजूद केवल 'पत्थर' बन कर रह गया है और रावण मर कर भी 'अमर' हो गया है।

रावण के चरित्र की एक विशेषता हमें और देखने को मिलती है कि रावण माँस, मदिरा का सेवन नहीं करता था। गोस्वामी जी ने कुम्भकर्ण जैसे और राक्षसों के लिए 'महिष खाइ कर मदिरा पाना' वाली बात तो कही है लेकिन अपने पूरे रामचरित मानस में रावण के लिए कहीं भी माँस खाने या मदिरा पीने की बात नहीं कही है। अरण्यकाण्ड के केवल एक प्रसंग में शूर्पणखा द्वारा क्रोध में उसके लिए–

करेसि पान सोवसि दिन राती।
सुधि नहीं तब सिर पर आराती।।

की बात कही गयी है, और यहाँ पर लोग 'पान' से तात्पर्य मदिरा पीने से करते हैं, लेकिन यदि इसके पहले वाली चौपाई जो सूर्पणखा ने रावण के ही लिए कही है–

बोली वचन क्रोध करि भारी।
देस कोस कै सुरति बिसारी।।

के साथ यदि 'करेसि पान सोवसि दिन राती' का अर्थ किया जाय तो जो सबसे ज्यादा सार्थक अर्थ होगा वह यह कि खा पीकर एक दम निश्चिन्त होकर सो रहा है देश, काल, समाज की कोई सुधि नहीं ले रहा है अर्थात् कोई भी व्यक्ति शराब पीकर निश्चिन्त होकर नहीं सो सकता है; रावण निश्चिन्त था और उसके निश्चिन्त होने का कारण था क्योंकि जिस क्षेत्र में शूर्पणखा की नाक–नाक काटने वाली घटना हुयी थी वह खर–दूषण का क्षेत्र था और ये दोनों किसी भी मामले में रावण से कम नहीं थे अतः रावण का इस क्षेत्र की हाल–चाल की जानकारी के प्रति उसे कोई चिन्ता करने का कारण नहीं था। इस प्रकरण से यह भी बोध होता है कि रावण अपने देश–कोस की खोज लेता रहता था अब क्यों भूल गया है जो बड़े आराम से सो रहा है। अतः यहाँ पान से अर्थ मदिरा पान से लगाना एक दम उचित नहीं होगा। एक दूसरी बात यह भी हो सकती है कि शूर्पणखा अपने नाक–कान काटे जाने से एकदम क्रोध में थी और क्रोधित व्यक्ति किसी को क्रोध में कुछ भी कह देता है, वह भी ऐसी स्थिति में जब कि इन दोनों तपस्वियों ने खर–दूषण जैसे योद्धाओं का बड़ी आसानी से वध कर दिया हो। अतः शूर्पणखा द्वारा इस तरह कहे गये वचन से रावण द्वारा मदिरा पान किये जाने की बात सही नहीं प्रतीत होती यह इस तरह से भी सिद्ध हो जाता है कि जैसे ही रावण को शूर्पणखा द्वारा यह बात मालूम होती है कि खर–दूषण का वध हो गया है तो उसका आस्तिक मन सोचता है कि खर–दूषण को मारने वाला जरूर ही ईश्वर का अवतार होगा अतः भगवान से बैर कर उनके बाण से प्राण तज कर भव सागर से पार होना चाहता है। कोई भी शराबी या मदिरा पीने वाला व्यक्ति इस तरह नहीं सोच सकता है। अतः रावण माँस या मदिरा नहीं खाता–पीता था। इस तरह से रावण एक पूर्ण शासक था और जो गुण एक समर्थ शासक या सम्राट में राज्य व समाज के हित के लिए होना चाहिए, वह सब कुछ रावण में था। उसे किसी भी प्रकार से दोषी, व्यभिचारी या क्रूर शासक नहीं ठहराया जा सकता। ☐

प्लूटो-एक अपदस्थ ग्रह

डा० कैलाश नाथ त्रिपाठी
(बहु आयामी व्यक्तित्व, से.नि. गणित विभागाध्यक्ष, के.बी.स्ना.महा., त्रिवेणी सदस्य)

भारतीय ज्योतिष परम्परा में जो भी वस्तु आकाश में गतिमान हो, वह सब ग्रह हैं। इस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा भी ग्रह हैं। पृथ्वी ग्रह नहीं है। इसके अतिरिक्त मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु ग्रह हैं। राहु एवं केतु पिण्ड नहीं बिन्दु हैं, जिससे उस समय चन्द्रमा की परिक्रमा–कक्षा निर्धारित होती है। यह सब ज्ञान प्राचीन मनीषियों ने, नंगी आखों से आकाश का लगातार अवलोकन करके, जाना था।

वैज्ञानिक परिभाषा के अनुसार ग्रह वे आकाशीय पिंड हैं, जो:

(1) सूर्य (या किसी तारे) की दीर्घवृत्तीय कक्षा में परिक्रमा करते हैं।

(2) वे पिण्ड किसी ग्रह की परिक्रमा नहीं करते। ग्रह की भी परिक्रमा करने वाले उपग्रह (चन्द्रमा) कहे जाते हैं। पिण्ड इतना बड़ा हो कि अपने ही गुरुत्व के कारण गोल हो।

(3) वे पिण्ड इतने बड़े हों कि उनके आस–पास का क्षेत्र खाली हो। अर्थात् वे पिण्ड अपने जन्म के समय से अपने गुरुत्व बल आस–पास के पिण्डों को आत्मसात कर चुके हों।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त तीसरी शर्त 24 अगस्त 2006 को, अन्तर्राष्ट्रीय खगोल संघ (आई0 ए0 यू0) ने अपनी महासभा चेक की राजधानी प्राग में, पारित की। इसी तीसरी शर्त ने प्लूटो ग्रह के पद से हटा दिया। अब कुल आठ ग्रह रह गए, जो क्रम से इस प्रकार है– बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनि, यूरेनस एवं नेपच्यून।

यूरेनस की खोज विलियम हर्शेल ने 13 मार्च 1781 को की थी। नेपच्यून की खोज इगलैण्ड के दो वैज्ञानिकों के गणना के आधार पर बर्लिन वेधशाला के दो वैज्ञानिकों ने 23 सितम्बर 1845 में की थी। प्लूटों की खोज, फोटोग्राफों के तुलना के आधार पर क्लाइड टामबॉव ने 13 मार्च 1930 को की थी। सन् 2005 में प्लूटों के खोज की 75 वीं जयन्ती मनाई गयी।

अब जरा इस बात पर गौर करे कि तीसरी शर्त की जरुरत क्यों पड़ी। प्लूटो का व्यास 2320 किलोमीटर है। प्लूटो चन्द्रमा से भी छोटा है तथा पृथ्वी का 1/500 गुना है।

खगोल संघ में एक प्रस्ताव आया कि ईरिस सिरीज एवं कैरन को भी ग्रह का दर्जा देकर ग्रहों की संख्या 12 कर दी जाय। ईरिस, प्लूटो से भी दूर एक पिण्ड है। सिरीज मंगल और वृहस्पति के बीच लाखों पिण्ड हैं, जिनमें सबसे बड़ा सिरीज है। कैरन, प्लूटो का ही साथी है। अगर इन को ग्रह मान लिया जाय तो ग्रह के उम्मीदवारों की भीड़ लग जाती है। इस स्थिति से बचने की तरीका उपरोक्त तीसरी शर्त के रुप में आया।

अतः खगोल संघ ने प्लूटो को लघु ग्रहों की सूची में उसे नया नाम–134340 प्लूटो दे दिया। एक अपदस्थ ग्रह हो गया प्लूटो। □

वन्दे मातरम् माँ तसलीमात

अमानुल्ला अंसारी
(समाज सेवी, अधिवक्ता, त्रिवेणी सदस्य)

आज वन्दे मातरम् गीत को लेकर मुल्क में रहने वाले कुछ लोग काफी बेचैन नजर आ रहे हैं और इस मुद्दे को लेकर कुछ राजनैतिक व्यापार भी प्रारम्भ हो गया है। हालाँकि यह गीत कोई नया नहीं है न तो इसके भावार्थ समझने वाले बुद्धिजीवी लोग कहीं झिझकते हैं क्योंकि यह गीत मुल्क की आजादी के दिनों में दोनों ही कौमें हिन्दू व मुसलमान मिलकर बड़े ही फख्र से गाते हुए ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती देते थे, और यदि नौबत उन्हें फाँसी के फन्दे की भी आती थी तो वे फूलों के गजरा की तरह स्वीकार करते थे। लेकिन अफसोस आज जिन माध्यम से वन्दे मातरम् गीत को प्रसारित करने का प्रयास प्रारम्भ हुआ इसमें किसी राजनैतिक दल की बात के वजाय राष्ट्रीयता के चश्में से देखा जाता तो शायद इस गीत का रस व रहस्य, और मधुर व स्पष्ट प्रतीत होता। मेरा अभिप्राय अपने इस विचार व लेख के माध्यम से किसी भी प्रकार से किसी राजनैतिक पंथ व सम्प्रदाय के ह्रदय को दुःखी करने या राजनैतिक परिप्रेक्ष में किसी प्रकार से सुर्खियों में आना नहीं, बल्कि वन्दे मातरम् गायन पर कुछ लोग इतना बवाल क्यों उत्पन्न करते हैं, इसे स्पष्ट करने का है। यदि ''राष्ट्रगीत'' वन्दे मातरम् का सही तजुर्मा (अनुवाद) स्पष्ट करने का प्रयास व प्रचार प्रसार कर दिया जाता तो इस गीत के प्रति लोगों के दिलों में वजाय एक हिचक इस बात की कि इस गीत में कहीं न कहीं एक खुदा की इबादत की बात नहीं बल्कि मुल्क के हवा-पानी, जलवायु, पहाड़ इत्यादि की इबादत की बात कहीं गयी है। इस कड़ी में छोटा सा प्रयास राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् का उर्दू अनुवाद प्रस्तुत करने का त्रिवेणी जैसी संस्था के माध्यम से जिसका उद्देश्य अध्यात्म-संस्कृति-साहित्य का मिलन हो, राष्ट्रगीत मादर-ए-वतन के मीठे तराने के साथ, गंगा, जमुना व सरस्वती के मृदु, स्वच्छ, निर्मल धारा की तरह सम्पूर्ण भारत ही नहीं विश्व में प्रवाहित होकर आपसी सौहार्द व भाई-चारा उत्पन्न करने का ही है। इस गीत से मुसलमानों को कत्तई परहेज नहीं करना चाहिये-

वन्दे मातरम् का उर्दू अनुवाद

माँ तसलीमात,
तू भरी है मीठे पानी से,
फल-फूलों की शादावी से,
दक्खिन की ठण्डी हवाओं से,
फसलों की सुहानी फिजाओं से,
तसलीमात, माँ तसलीमात,
तेरी रातें रोशन चाँद से,
तेरी रौनक सब्जेफाम से,
तेरी प्यार भरी मुस्कान है,
तेरी मीठी बहुत जुबान,
तेरी बाँहो में मेरी राहत है,
तेरे कदमों में मेरी जन्नत है,
तसलीमात, माँ तसलीमात

सूचना का अधिकार
क्या भ्रष्ट नौकरशाही पर लगाम लगेगी?

डा० राम शरण सेठ
(त्रिवेणी सदस्य, पूर्व सभासद)

"सूचना का अधिकार" – हमें और आपको मिल गया। क्या भ्रष्ट नौकरशाही पर इससे लगाम लगेगी? सूचना का अधिकार लोकतंत्र में लोक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। आजादी के बाद प्रगतिशील शक्तियों द्वारा संसद में यह मांग उठायी जाती रही। 1971 में केन्द्र सरकार में जनता को यह अधिकार दिए जाने की बात बार–बार उठी परन्तु उसे अमली जामा नहीं पहनाया जा सका। इसके पीछे केवल इतना ही कारण पर्याप्त नहीं था कि तत्कालीन सरकार अपने अन्तर्विरोध के कारण इसे मूर्त रूप नहीं दे पायी। इसके पीछे मुख्य कारण यह था कि भ्रष्ट नौकरशाही एवं राजनीतिक गठजोड़ इस कानून को अपने विरुद्ध एक घातक अस्त्र के रूप में देखता रहा और देखरहा है। इसलिए भी यह प्रयास जारी रहा कि जनता को इस अधिकार से वंचित रखा जाए।

संसद ने गत एक वर्ष पूर्ण सूचना के अधिकार को पारित किया। इसे मूर्त रूप ग्रहण करते ही जनता को इस भ्रष्ट गठजोड़ के विरुद्ध एक अस्त्र तो मिल ही गया है।

इस एक वर्ष में इस कानून के अन्तर्गत अनगिनत देश वासियों को उनकी रोजमर्रा की समस्याओं से निजात मिली है। चूंकि इस कानून के अन्तर्गत जनता को मिले अधिकार इतने व्यापक हैं कि यदि आम जनता को इसकी व्यापकता का आभास हो जाए और साथ ही वह इसका कारगर उपयोग करने लगे तो भ्रष्ट नौकरशाही के दंत नख रह ही नहीं जाएंगे। इसके परिणाम स्वरुप आज विकास के पथ पर हम और आप भ्रष्टाचार के दल–दल से निकल सन् 2020 तक (महामहिम राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा निर्धारित) विकसित राष्ट्र की पंक्ति में ये खड़े मिलेंगे।

इस कानून को पारित होते ही असंख्य देश वासियों ने इसका सफल उपयोग किया और अपनी समस्याओं से निजात पायी। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब झुग्गी झोपड़ियों में रहने वालों से लेकर बौद्धिक स्तर पर जागरुक एवं उच्च स्तर पर शिक्षित लोगों ने इसका प्रभावी उपयोग किया है।

दूसरी ओर इस कानून के प्रभावी होते ही भ्रष्ट नौकरशाही अपने भविष्य को लेकर चिन्तित हो उठी है और इसे निष्प्रभावी बनाने में जुट गयी है। विगत दिनों इसमें संशोधन कर इसे विफल करने की असफल कोशिश हुयी। पर बधाई के पात्र वे अनेक सामाजिक संगठन हैं जिनके विरोध के कारण संशोधन बिल को वापस करने के लिए सरकार को बाध्य होना पड़ा। जरूरत इस बात की है कि इसके कानून में निहित अधिकार और लाभ देश वासियों को मिले। सामाजिक संगठनों, राजनैतिक, सामाजिक तौर पर जागरुक नागरिकों, इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं समाचार पत्रों को अपनी कारगर भूमिका निभानी होगी क्योंकि आम आदमी जब तक इसके प्रभाव के साथ ही इसके उपयोग के तरीके को नहीं जान पाएगा यह कानून पूरी तरह से प्रभावी नहीं हो सकेगा।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 एक ऐसा महत्वपूर्ण कानून है जो हर नागरिक को छूता है। उसे उसका हक दिलाने में कारगर है। तुलनात्मक तौर पर अध्ययन से पता चलता है कि ब्रिटेन तथा अन्य राष्ट्रो के कानून से ज्यादा प्रभावी हमारे देश का कानून है।

आवश्यकता इस बात है कि सरकार की मंशा (कानून में संशोधन) के विरुद्ध हम सतत जागरुक रहें क्योंकि भ्रष्ट नौकरशाही एवं राजनेता इसे अपने विरुद्ध खतरा मान रहे हैं और वास्तव में खतरा इनके लिए है भी इसीलिये वे अपनी साजिश में लगे हैं। ☐

आँख–आँख कुर्सी बसी, पोर–पोर छल छंद,
इन दोनों के वास्ते, नए–नए अनुबंध।।

खाट वही, खटमल वही, वही खून औ खाल,
क्या दिल्ली, क्या लखनऊ, क्या पटना भोपाल। जय चक्रवर्ती

मानव के अदृष्य शत्रु
"Human's Invisible Enemies"

गुलाब चन्द्र तिवारी
(एम. एस–सी., एम. एड.
सहसंयोजक त्रिवेणी, पूर्व प्रवक्ता जिला विज्ञान क्लब
एवं बाल विज्ञान कांग्रेस से सम्बद्ध)

ऐसा माना जाता है कि बहादुर दुश्मन सामने से वार करते हैं, आतंकी छुपकर तथा कपटी पीछे से हमला बोलते हैं।

यहां कई ऐसे मानव शत्रुओं का विवरण प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो हमारे सदैव आस–पास रहते हैं, उन्हें सामान्य आँखों से नहीं देखा जा सकता परन्तु सूक्ष्मदर्शी या इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी जिसकी आर्वधन क्षमता एक लाख छियासी हजार गुना होती है। इन्हें देख और पहचान कर बचा जा सकता है।

मानव में रोग फैलाने वाले अदृश्य शत्रुओं को चार भागों में बाँटा जा सकता है, परन्तु संक्षिप्त विवरण वाइरस पर प्रस्तुत किया जा रहा है –

1. वायरस रोग या वायरस जनित रोग (Viral Disease)
2. जीवाणु जनित रोग (Bacterial Disease)
3. सूक्ष्म जन्तु एवं वनस्पति जनित रोग (Protozoan & Fungal Disease)
4. सूक्ष्म कीट जनित रोग (By- Nematodes & Platyhelminthes)

१. वायरस जनित रोग (Viral Disease)

वायरस का पता वैज्ञानिक दमित्रि इवाइनोविस्की (IVANOWSKI)(रूस) 1892 ने सर्वप्रथम तम्बाकू के मोजैक रोग से लगाया। इसके बाद आज तक इस पर अनुसंधान होता आ रहा है तथा इस शत्रु के रहस्य पर्त दर पर्त खुलते चले आ रहे हैं। इनसे होने वाले जानलेवा रोग अनेक हैं इन सब का विवरण देना थोड़े में कठिन है परन्तु कुछ अतिक्रूर वायरस के रोगों का विवरण और बचाव के तरीके दिये जा रहे हैं–

१. सर्दी जुकाम (INFUENZA)

यह सभी उम्र के लोगों में होता है, इसका कारण "Orthoneyxo" समूह के वायरस हैं, इसमें ज्वर, छींक, नाक बहना, सिर दर्द और बदन में दर्द होता है। इसके वायरस विश्व में हर स्थान में हैं। शरीर इनसे स्वयं रक्षा का तरीका ढूढ़ लेता है बस विश्राम और अन्य जीवाणु से बचने के लिये स्वच्छ वातावरण की आवश्यकता है।

एक सामान्य वायरस का रेखा चित्र
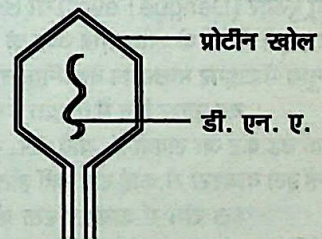
इस रोग में भारतीय आयुर्वेदिक औषधि–मुलेठी, तुलसी की पत्ती, बादाम, कालीमिर्च आदि लाभ दायक है।

विशेष – ये वायरस प्रकृति में सदैव मायावी राक्षस की तरह अपना रूप Transduction और Transcription द्वारा बदलते रहते है तथा आक्रमण करते रहते हैं। ज्यों ज्यों मनुष्य की क्षमता इनसे लड़ने के लिये बढ़ती है वैसे–वैसे रूप बदलते जाते हैं।

रैबीज [Rabies] या पागल कुत्ता काटने की बीमारी –

यह रोग Rabies वायरस से होता है, जो Rabdovirus Group का है और प्रभावित जन्तु के लार में होता है इनके काटने से ही मानव में होता है। बन्दर, खरगोश, कुत्ता, स्यार और बिल्ली के काटने पर हो सकता है।

पहचान- पागलपन और पानी से डरना है। इसका टीका वैज्ञानिक लूई पाश्चर ने विकसित किया।

उपाय- टीका लगवाना अतिआवश्यक है, बिना देर किये डाक्टर की सलाह और टीका ही जान बचा सकता है।

विशेष- झाड़ फूंक, कुंआ झकवाना और मंत्र इत्यादि अनावश्यक समय गवाकर मृत्यु बुलाना है।

बच्चों में होने वाले रोग –

गालोदाई (Mumps) या गलसूआ- यह Paramyxo Virus से होता है, गाल में सूजन और बुखार के साथ कष्ट मय दर्द इसकी पहचान है।

खसरा बुखार या (Measles) – यह Rubeola Virus से होता है वायु से संक्रमण होता है जो छींक या खांसी के साथ प्रसारित होते है। चेहरे पर लाल छोटे दाने के साथ तेज बुखार आता है।

छोटी माता (Chicken Pox) – Varicella Zoster वायरस से वायु या सम्पर्क से प्रसारित होता है।

एक अंलगी माता (Herpes Virus) – से फैलता है शरीर के तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है एक तरह का जलन पैदा होता है।

पोलियो (Poliomyelities) – यह Picorna Virus समूह के वायरस से होता है इसका कारण सभी लोग जानते है। छूत का रोग कह सकते हैं क्योंकि यह गंदे जल में रोगी के मल से, मूत्र से नाक बहने पर अन्य को लगने से होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा भारत में इससे बचने के लिये टीकाकरण अभियान चलाया गया है परन्तु अफसोस कि 2006 के नवम्बर 12 तक काफी सुधार के बाद भी 526 नये रोगी सामने आये हैं। बच्चों में तंत्रिका तन्त्र को हानि पहुंचा कर अपंग बना देता है। इसका सटीक बचाव टीका लगवाना है। इस टीका का आविष्कार वैज्ञानिक Dr. Jonas Salk & Albent Sabin ने 1940 में ही कर लिया था।

नोट :- बच्चों में प्रतिरोध क्षमता पैदा करने के लिये टीकाकरण सर्वोत्तम उपाय है जिसमें M M R, Polio एवं Hepatitis के टीके डा0 के सलाह पर समय–समय पर अवश्य लगवाना चाहिए।

पीलिया या कवल रोग (Hepatitis A & B) या "JAUNDICE" ये HAV और HBV के कारण होते हैं। इसमें लीवर में सूजन नेत्र पीले और यकृत में घाव हो जाता है यकृत कोशों के नष्ट होते रहने से पीला पदार्थ "Bilirubin" रक्त में बढ़ जाता है। पीला पेशाब होता है– हेपेटाइटिस A आयुर्वेदिक दवा पुनर्नवा (गदहपुन्ना) वानस्पतिक नाम Boerhavia Diffusa के प्रयोग से ठीक हो जाता है।Hepatitis B लिवर कैंसर पैदा कर देता है, जान लेवा है अतः टीकाकरण सर्वोत्तम उपाय है।

गंदे जल या भोजन से फैलता है बिना जांचे रक्त चढ़ाने के कारण भी होता है। रोगी के जूठे बरतन पोटैशियम परमैगनेट से धोना अच्छा है।

डेंगू बुखार (Dengue Fever) या Break bone fever – यह रोग Dengue Virus जो Flavi Virus समूह का है व्यक्ति के हड्डी में दर्द के साथ तीव्र ज्वर के साथ आक्रमण करता है। यह महामारी की बीमारी है मनुष्य से मनुष्य या सूअर से मनुष्य में टाइगर मच्छर का वैज्ञानिक नाम एडीज एजेप्टाई Aedes aegypti के मादा से फैलता है।

यह मच्छर दिन में काटता है परन्तु रात में न काटने का व्रत नही ले रखा है। मच्छरों की उड़न क्षमता 20–25 किमी. तक उड़ कर जा सकते हैं, यदि बस, रेल या हवाई जहाज में घुस जाय तो कहां से कहा चले जाय। मच्छर केवल वाहक हैं उन्हें इस वायरस से कोई रोग नहीं होता पर लोगों के रक्त में वायरस पहुंचा कर रोग फैला देते हैं।

इस रोग में वायरस रक्त के लाल कण R. B. C. और Platelet की संख्या कम कर देते हैं, कुछ लोग इसे मलेरिया समझ कर जब अंग्रेजी दवा बिना समझे दे देते हैं तो इसके दूसरे चरण में रक्त की उल्टी या नाक से अधिक रक्त बहने से मृत्यु हो सकती है, एम्स के अनेक रोगी तथा वहा के डाक्टर की भी मृत्यु हो गई।

डेंगू की जांच योग्य पैथोलाजी सेन्टर में होना चाहिए योग्य चिकित्सक के यहां होना चाहिए अन्यथा जान जाने में देर नहीं लगती।

यह रोग अफ्रीकी देशों से भारत आया। इसकी पहले पहल 1942 में हल्का आक्रमण था। 1952 में भी भारत के समुद्र किनारे के शहरों में प्रकोप हुआ लेकिन अब 2006 में दिल दहलाने वाली महामारी के रूप में आया है। राज नेता चाहे महामारी घोषित न कर के जीं बचाना चाहते हैं परन्तु चिकित्सकों और वैज्ञानिक दृष्टि से यह पूर्ण महामारी का रूप ले चुका है। इसकी पहचान "TOURNIQUET TEST" से हो पाता है। डा0 ए0 सी0 मिश्रा (वरिष्ठ वैज्ञानिक–पूना वायरस

अनुसंधान केन्द्र) और उनके साथियों ने इसके बारे में नये खोज सामने लाये हैं जिससे इन वैज्ञानिकों की पूरे विश्व में सराहना हो रही है।

इन्होनं खोजा कि डेंगू मच्छर (एडीज एजेप्टाई) इन वायरसों को अपने अण्डों में ही स्थानान्तरित कर दे रहा है अर्थात् अब बच्चे के भी काटने से यह रोग हो जा रहा है। ''सांप तो सांप सपोला भी जहरीला''

चिकन गुनिया- यह भी उसी मच्छर से फैल रहा है पर इसमें कुछ कम खतरनाक प्रभाव है। इसमें हाँथ, पाँव के जोड़ों में दर्द, सूजन, तेज बुखार तथा चलने और काम करने क्षमता 80 प्रतिशत तक कुछ समय के लिये हो जा रही है जिससे मानसिक व्यथा भी बढ़ जाती है।

मच्छर से होने वाले रोगों का एक मात्र बचाव, इन्हें दूर रखा जाय तथा मच्छरदानी का नित्य उसी तरह प्रयोग किया जाय जैसे विस्तर पर चादर रोज विछा कर सोते हैं।

एड्स (AIDS) – यह रोग "HIV" VIRUS अर्थात् पूरा नाम Human Immunodeficiancy Virus से फैलता है तथा रोग हो जाने पर वह AIDS (Acquired Immuno-Deficiency Syndrom) कहलाता है।

वास्तव में यह शरीर की रोग रोधक क्षमता को समाप्त कर देता है जिससे कोई भी संक्रमण जैसे टी. बी., टायफायड, निमोनिया या अन्य कोई भी रोग हो जाने पर वह रोग जान ले लेता है, कोई दवा असर नहीं करती। यह वैसे ही है जैसे युद्ध में किले की दीवार टूटने पर शत्रु के सामने सभी अन्दर के सैनिक असहाय हो जॉय और जो चाहे वही मार ले।

आज से 20–25 वर्षों तक इसका कोई पता नहीं था। सबसे पहले कुछ अमेरिकी जवानों और महिलाओं में देखा गया जो नशेड़ी और व्यभिचारी थे, इनकी मौत त्वचा कैंसर से हो जाती थीं।

इतिहास- पेरिस के वैज्ञानिक ''लुक मोण्टेगनियर'' (Luc Montagnier) 1983 तथा अमेरिकी वैज्ञानिक ''रोबर्टगेलो (Robert Gallo) 1984 के खोंजो से इसका पता चला सन् 1986 में इसका नाम करण "HIV" के रूप में हुआ।

"WHO" के सर्वे के अनुसार विश्व में ऐसे रोगियों की संख्या छः करोड़ तक हो गई है। भारत में अब तक लगभग सत्तर लाख से अधिक लोग संक्रमित हैं, जिसमें 16 वर्ष से 24 वर्ष के लोग अधिक हैं। सन् 1986 में सबसे पहले डा0 सुनीति सोलोमन ने मद्रास के कुछ वेश्याओं में पाया, इसे फैलाने में वेश्याओं की भूमिका अधिक है। इसका संक्रमित व्यक्ति 3 से 12 साल तक सामान्य रह सकता है कोई कष्ट नहीं रहता, वायरस अन्दर–अन्दर अपना बल बढ़ा लेते हैं तथा इसके बाद अपने अचूक निशाने पर वे व्यक्ति को मार डालते हैं।

बचने के उपाय सदैव मीडिया द्वारा प्रसारित होते रहते हैं परन्तु जो लोग ध्यान में नहीं लाते उनके लिये मुख्य बात लिखना चाहूँगा–

1. कभी भी ऐसे दंत चिकित्सक से शल्य क्रिया न करवायें जिनके पास निजीवीकरण (Sterelization)की सुविधा न हो।
2. बाहर बाल कटवाते समय नाई से उस्तरा साफ रखने या नये ब्लेड इस्तेमाल करने को कहें।
3. अपने जीवन को भारतीय पद्धति से जीने का प्रयत्न करें।
4. HIV का पता योग्य चिकित्सक से।

AZT ELISA (Lit) या Western Blot पद्धति से ही सही ढ़ंग से होता है।

नई खोज - मोटापे के बारे में भारतीय वैज्ञानिकों ने एक नया अनुसंधान किया है जिसमें कुछ वायरस मोटापा बढ़ाते हैं।

डा0 निखिल धुरंधर भारतीय मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक जो अब भारत में ही रहते है (Fat Virus) का पता लगा लिया है। उन्होंने बताया कि Prefat Cells पर ये आक्रमण करके व्यक्ति को मोटा बना देते है। इनके पिता डा0 विनोद की प्रेरणा से यह कार्य पूरा हुआ है। अब ये बम्बई में रहते हैं तथा दावा किया है कि मोटे लोगों में से 10 प्रतिशत इसी वायरस से ग्रसित हैं।

भारतीय वैज्ञानिक डा0 शरद ने यही वायरस पहले मुर्गियों में देखा था। जीवन अमूल्य है हर तरफ शत्रु हैं। शरीर इन शत्रुओं से स्वयं रक्षा कर लेता है परन्तु कुछ के बारे में वह असहाय हो जाता है। इनका पता लगाने पर जीवन काल दवा से लम्बा हो सकता है बच नहीं सकता परन्तु संयम से आप सदैव अपने जीवन की सुरक्षा कर सकते हैं।

टीका, खान-पान, उचित जीवनचर्या, व्यायाम और योग (Yoga) आपकी आयु में वृद्धि करते हैं। कागज के नोट सबसे ज्यादा प्रदूषित हैं थूक लगाकर न गिना जाय, भोजन के पहले हाथ अवश्य धुलें।
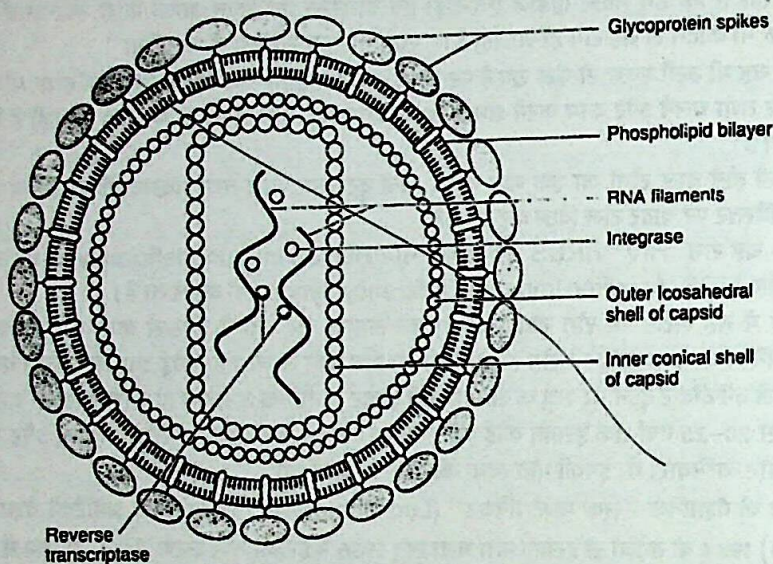
एड्स का एक वाइरस

त्रिवेणी परिवार की श्रद्धांजलि!
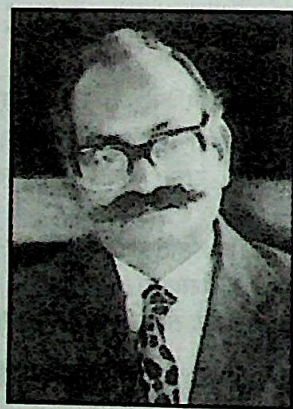
स्व० बलिराज सिंह

जन्म : 10 अक्टूबर, 1930 ● निधन : 18 अगस्त, 2006

त्रिवेणी सदस्य, प्रतिष्ठित वास्तुकार, नेत्रदानी
से. नि. कला अध्यापक, पूर्व सचिव साम्यवादी दल

कथनी करनी में अन्तर

रमा शंकर द्विवेदी
(त्रिवेणी सदस्य एवं गायत्री परिवार
के समर्पित कार्यकर्ता)

''जब भी धर्म, आत्मा या भगवान के विषय में अथवा किसी कार्य की खोज में आप हों और उसके लिए कौन सी कृति करें – इस बारे में आपकी द्विविधा, उलझन हो तो आप ऐसे व्यक्ति का चेहरा अपने सामने लाएँ जिसे आपने कभी देखा हो। उस निस्तेज, निर्बल और गरीब मनुष्य को याद करें, और अपने आप से पूछें कि आप जो कार्य करने की बात सोच रहे हैं, उससे उसे क्या मिलेगा? यह उसे कुछ सहायता पहुँचाएगा? अपने जीवन और भाग्य पर इसके कारण वह नियंत्रण प्राप्त कर सकेगा? यदि ऐसा हो सके तो वह कार्य आपके करने योग्य है।''

– सर्वोदय मंदिर बम्बई

आज के बुद्धिजीवी जब भी कोई विशेष बात करते हैं तो 'बसुधैव कुटुम्बकम्' तुरन्त बोल देते हैं। कथा वाचक, पंडित–पुजारी, राजनैतिक व्यक्ति आदि सभी लोग इसे कहा करते है। कहने सुनने में यह प्रायः आता है लेकिन आचरण में देखने को कम हीं मिलता है। बाल्यावस्था से हम सभी लोग पढ़ते हुए युवावस्था को प्राप्त हो जाते हैं। ऊँचे दर्जे की पढ़ाई जैसे पी0 एच0 डी0, डी0 लिट0, आई0 ए0 एस0, आई0 पी0 एस0 आदि डिग्रियाँ प्राप्त करते हुए हमने अधिकारी की कुर्सी प्राप्त कर लिया। कर्तव्यबोध की शिक्षा तो ग्रहण किया लेकिन उसे प्रयोग करते हुए नहीं के बराबर देखा जाता है। कर्तव्य को भूलकर अधिकार का प्रयोग अधिकतर देखा जा रहा है। ऊँचे स्तर पर पदासीन जैसे जिलाधिकारी, मुख्य चिकित्साधिकारी, पुलिस अधीक्षक, कमिश्नर (मण्डलायुक्त) आदि जब कभी कर्तव्य बोध से कुछ करने का मन बनाते हैं तो उनके अधीनस्थ कर्मचारी उसमें कोई रूचि नहीं लेते। उसके विपरीत कार्य करने वालों को न अधिकारी का भय होता है न परमात्मा का। केवल अर्थ लोलुपता के कारण वे पथ भ्रष्ट होने को तत्पर रहते हैं।

कथावाचक मंच से शबरी, अहिल्या, संत रविदास आदि का उदाहरण देते हैं लेकिन व्यावहारिक जीवन में छूआछूत से ग्रसित रहते हैं। बड़े–बड़े संत महात्मा आज जो पूजा ले रहे हैं उनकी गति (छूआछूत) पर क्या बुद्धिजीवी लोगों की निगाह जा रही है? हम सभी लोग उल्टे मान्यता देते चले आ रहे हैं। इस विडम्बना के कारण आज 'निरंकारी' एक जाति विशेष बनाकर प्रचार–प्रसार करके भेद–भाव बढ़ा रहे हैं जिसका प्रभाव समाज पर बड़ा खराब पड़ रहा है।

शिक्षा जगत में अध्यापक पढ़ाते हैं ''छूआ–छूत मिटाना है, सबको गले लगाना है'' इसी प्रकार वे कहते हैं –

''हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई – आपस में हैं भाई भाई''

इन बातों का अपने जीवन में वे कितना पालन करते हैं? कितने दुःख की बात है, घृणा तो हमें गन्दगी से करनी चाहिए जाति से नहीं। आज जातीय भेदभाव ने देश को किस दशा में पहुँचा दिया है? राजनैतिक दल अपने स्वार्थ को बढ़ावा देने के लिए क्या–क्या नहीं कर या करा रहे हैं?

प्रकृति नियन्ता का खेल अपने आप में जब भी प्रारम्भ होता है, सबको एक घाट पर इकट्ठा कर देता है क्योंकि ''परमात्मा की (प्रकृति) व्यवस्थापिका शक्ति है''।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया''

"धर्म की जय हो – अधर्म का नाश हो" नारे यज्ञों आदि के बाद तेजी से बोले जाते हैं। महन्त – शंकराचार्य इसके प्रचार–प्रसार में पण्डाल बनाकर प्रवचन, सत्संग के माध्यम से कितना लम्बा प्रयास करते चले आ रहे हैं। उनके जीवन को देखा जाय–देश का धन आराम से उनकी कमाई में जा रहा है। कितना प्रभाव उनके आचरण में है? सभी लोग बसुधैव कुटुम्बकम् सुन रहे हैं लेकिन आचरण में उतारने का मन नहीं बन रहा है। क्या कारण है? इस पर विचार नहीं किया जा रहा है।

हम जब, रेल यात्रा के लिए रिजर्व डिब्बे में यात्रा करते हैं, मंदिर, तीर्थस्थल, गंगा स्नान आदि स्थानों पर जाते हैं तो वहाँ पर भाव परिवर्तन अवश्य हो जाता है। पुनः जब अपने स्थल पर आ जाते है तो वहीं परिवर्तन फिर कैसा हो जाता है – कैसी मानसिकता हम लोगों की है? कोई भी उच्चाधिकारी जब छोटी जाति के आते हैं तो हम सभी लोग अपना–अपना काम निकालने के लिए उनके पैर पकड़ने में या उनकी खुशामदी में कुछ बाकी नहीं रखते। वहाँ बसुधैव कुटुम्बकम् स्पष्ट झलकता है।

इस जगत जीव की कैसी विडम्बना है। हम बुद्धिजीवी चिन्तन कर जीवन में नहीं उतार रहे है केवल भाषण में, आदर्श, दिखावा चल रहा है।

मैं तो गायत्री परिवार का एक छोटा सा कार्यकर्ता हूँ – पं0 श्रीरामशर्मा आचार्य जी ने कहा है "कथनी करनी भिन्न जहाँ – धर्म नहीं पाखण्ड वहाँ" मैं यही सत्य देख रहा हूँ। गोस्वामी तुलसी दास जी ने लिखा है –

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे।।"

इन तथ्यों के उपरान्त भी हम लोग सुधार की ओर आचरण प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं।

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी की पत्रिकानुसार (अखण्ड ज्योति, युग–निर्माण) सम्पूर्ण बातें सत्य देखी जा रही हैं। यह अखिल विश्व गायत्री परिवार विश्व ब्रन्धुत्व का भाव प्रदर्शन, सफलता का कार्य करता चला आ रहा है, किसी भी जाति का कोई भेद–भाव नहीं – "सबके लिए सदबुद्धि–सबका उज्ज्वल भविष्य" सामूहिक प्रार्थना के स्वरुप में कर रहा है। शान्ति कुंज के जो हजारों शक्तिपीठ हैं, उनमें से बहुतों के पुजारी ब्राह्मणेत्तर जाति के लोग हैं। कुछ तो हरिजन भाई भी हैं। वहाँ समी का यज्ञोपवीत कराया जाता है। वे जनेऊ धारण करते हैं। वहाँ गायत्री जप नारियों एवं हरिजनों से भी कराया जाता है। स्त्रियों का भी (जनेऊ) "यज्ञोपवीत संस्कार" होता है। इस प्रकार पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी की कथनी करनी में अन्तर नहीं देखा गया।

ईश्वर चन्द विद्यासागर जी मजाक में कहा करते थे – "मैं शिक्षा का नहीं – विद्या का सागर हूँ"। और श्रुति वचन के अनुसार "नास्ति विद्या समंचक्षु" जिसके पास विद्या की आँखें हैं, उसे ही मानवता की पीड़ा, समस्याएँ दिखेगी और वह दूर करने में जुटेगा। जिसे ये नहीं रहीं, इसका मतलब उसके पास विद्या की आँखें नहीं है। उनके इस कथन से हम स्वयं की स्थिति पहचानें। यदि आँख वाले हैं, तो समय को पहचान कर सक्रिय हों।

"किसी के काम जो आए, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए, उसे इन्सान कहते हैं।।"

"वहीं मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे"

इस प्रकार सभी धर्मावलम्बी, बुद्धिजीवी आदि वर्ग के लोग चेत लेंवे तो "बसुधैव कुटुम्बकम्" सार्थक हो जायेगा और युग परिवर्तन होता चलेगा। □

"टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार
रहिमन फिरि फिरि पोइये, टूटे मुक्ता हार"

त्रिवेणी के संस्थापक सदस्य-स्व० नटवर नाथ अग्रवाल

कमला कान्त अग्रवाल
(नगर की विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से सेवारत त्रिवेणी सदस्य व स्व0 नटवर नाथ जी के भांजे)

श्री नटवर नाथ जी अग्रवाल ने मिरजापुर नगर के एक संभ्रान्त व प्रतिष्ठित पंसारी वाला परिवार में सन् 1928 में जन्म लिया। वे श्री गया नाथ जी अग्रवाल, कन्हैया लाल बसन्त लाल डिग्री कालेज के जन्मदाता, के द्वितीय पुत्र थे। उन्होंने 1948 में स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की एवं अपने पारिवारिक धातुवाने के व्यापार में जुड़ गए। व्यापारिक प्रतिष्ठान बिट्ठल नाथ नटवर नाथ उस काल में नगर में (मेटल इम्पोर्ट) धातुबाना आयातक के रूप में शीर्ष स्थान पर था एवं यह नगर भी धातुवाना उद्योग तथा व्यापार में उत्तर प्रदेश ही नहीं भारत वर्ष में अपना विशिष्ट स्थान रखता था। यहाँ का कुटीर उद्योग घरेलू उपयोग के बर्तनों का निर्माण करता था और सारे देश में इनकी माँग थी।

कुछ वर्षों के उपरान्त उन्होंने वस्त्र व्यवसाय में कदम रखा और 'पंसारी वाला वस्त्रालय' के नाम से इस प्रतिष्ठान ने अपूर्व ख्याति अर्जित किया। लोग कहते हैं कि एक पीढ़ी पूर्व इनके परिवार ने नगर के सिरमौर कपड़े व्यापार का जो सुयश स्थापित किया था उसे श्री नटवर नाथ जी ने पुनः स्थापित कर दिया। कालान्तर में 'पंसारी वाला किरोसिन एजेंसी' के नाम से 'हिन्दुस्तान पेट्रोलियम' की एजेंसी लेकर पेट्रोलियम व्यापार में यह फर्म जिले की अग्रणी एजेन्सी बन गई। साथ ही उन्होंने मशीनरी का भी व्यापार आरम्भ किया और 'पंसारी वाला मशीनरी स्टोर' एवं 'श्री गया नाथ इलेक्ट्रिकल' नामों से विभिन्न ख्याति प्राप्त मशीनरी की एजेंसी ली और इस क्षेत्र में भी अच्छी ख्याति अर्जित किया। किर्लोस्कर व क्राम्पटन कम्पनी के डीजल इंजन व पम्प तथा अन्य कृषि उपकरणों का व्यापार सम्पूर्ण जिले में (मिरजापुर एवं सोनभद्र सम्मिलित) गांव-गांव में विख्यात हो गया। हरित क्रान्ति में इस प्रतिष्ठान का अपूर्व योगदान एवं ख्याति हुई।

वर्ष 1976 में नटवर नाथ जी ने हिन्दुस्तान पेट्रोलियम का पेट्रोल पम्प का पुनः शुभारम्भ किया एवं पेट्रोल व डीजल के व्यापार में भी शीर्ष स्थान अर्जित किया और चनईपुर में एक और पम्प लगाया। ये दोनों पेट्रोल व डीजल के पम्प अपनी गरिमा बनाए हुए हैं।

श्री नटवर नाथ जी का निधन वर्ष 27 जुलाई 1995 को हो जाने के उपरान्त उनकी पत्नी श्रीमती शकुन्तला रानी इनका संचालन व देख-रेख अत्यन्त कुशलता से कर रही हैं। उनकी कर्मठता महिला समाज के लिए एक उदाहरण है।

अपने पति के देहावसान के पश्चात उन्होंने श्री नटवर नाथ अग्रवाल चैरिटेबुल ट्रस्ट की स्थापना की। एक आयुर्वेदिक औषधालय, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र (महिलाओं के लिए) वे संचालित कर रही हैं जो नगर के साधन विहीन वर्ग की सेवा कर रहे हैं।

श्रीमती शकुन्तला रानी ने स्व0 नटवर नाथ जी की स्मृति में स्थानीय रामकृष्ण सेवाश्रम अस्पताल में 100' X 50' का एक सम्पूर्ण ब्लाक का निर्माण 21 लाख रूपये का योगदान करके करवाया है एवं वे इस संस्था की ट्रस्टी भी हैं। यह अस्पताल नगर वासियों की अत्यन्त अल्प खर्च में स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर रहा है।

श्रीमती शकुन्तला रानी एक विदुषी व उदार महिला हैं। उन्होंने सरस्वती शिशु मन्दिर में भी नटवर नाथ जी की स्मृति में दो कक्षाओं का निर्माण कराया है।

स्व0 नटवर नाथ अग्रवाल मिरजापुर जूनियर चेम्बर, लायन्स क्लब, मिरजापुर उद्योग एवं व्यापार मण्डल, अग्रवाल नव युवक समिति के संस्थापक सदस्य रहे और जेसी बाल मन्दिर के संस्थापक अध्यक्ष रहे। अध्यात्म-धर्म में उनकी गहरी निष्ठा थी तथा साहित्य-संगीत-कला के अनुरागी थे। श्रेष्ठ व्यक्तित्व के स्वामी नटवर नाथ जी त्रिवेणी के संस्थापक सदस्य के रूप में सक्रिय रहे जिन्हें हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। ❑

धर्म ढकोसला नहीं तर्क सम्मत है

श्रीमती सुषमा अग्रवाल
(सम्भ्रांत परिवार की सुगृहिणी महिला, त्रिवेणी सदस्या)

वस्तुतः धर्म क्या हैं? धर्म का स्वरूप क्या हैं? और इसके पीछे कौन सी भावना निहित है? ये कुछ ऐसे मौलिक प्रश्न हैं जो बार-बार मस्तिष्क में कौंधते हैं और आजकल तो युवा पीढ़ी के मन में धर्म को लेकर अनेक भ्रान्तियां पैदा होतीं हैं।

यदि एक वाक्य में परिभाषित करना चाहें तो हम यह कह सकते हैं कि प्रकृति द्वारा निर्देशित कर्म को सही ढंग से करना ही धर्म है। धर्म का स्वरूप भिन्न-भिन्न हो सकता है किन्तु इसमें ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह आदि का समावेश नहीं है। धर्म में देश और काल की सीमा भी नहीं रहती। सीधे-सादे शब्दों में स्वार्थ की विकृतियों से परे जाकर निःस्वार्थ भावना से किया गया कर्म ही धर्म है।

किसी दुःखी व्यक्ति के आंसू पोंछना, किसी पीड़ित ह्रदय में प्रफुल्लता के चन्दन का लेप लगाना अथवा किसी निराश व्यक्ति के मन में आशा की किरण का संचार करना ही परम धर्म है। इस तरह से धर्म मनुष्य की मानसिक एवं आत्मिक उन्नति में सहायक है।

पुराणों और शास्त्रों में वैज्ञानिक सिद्धान्तों को धर्म का रूप देकर प्रचारित किया गया है क्योंकि हिन्दू मान्यतानुसार धर्म को ही सर्वोपरि मानकर उस पर अत्यधिक विश्वास किया जाता है। अतः जो भी कार्य अथवा जो भी प्रसंग मानव जीवन के लिए उपयोगी होते थे और जिन्हें लोग आसानी से मानने को तैयार नहीं होते थे उसे धर्म का रूप देकर सामने लाया जाता था तो लोग उसे आसानी से और सहर्ष स्वीकार कर लेते थे।

हमारे दैनिक जीवन में बहुत से ऐसे छोटे-छोटे कार्य हैं, ऐसी घटनाएं घटित होती रहती हैं जिन्हें एकाएक स्वीकार करने को मन तैयार नहीं होता है किन्तु उसके पीछे छिपी धार्मिक भावना का ख्याल करके या फिर दुष्परिणाम से डर कर हम उसे करने लग जाते हैं। पर क्या कभी हमने यह सोचने या समझने की कोशिश की कि इसके पीछे वैज्ञानिक तथ्य भी हो सकता है। छोटे-छोटे उदाहरण द्वारा पूर्णतः स्पष्ट कर सकते हैं।

सबसे पहले हमारे देश में मनाए जाने वाले पर्व त्यौहारों को ही लें जिन्हें मनाया जाना केवल धार्मिक रुप से ही मान्य नहीं वरन् उसके पीछे सामूहिक सद्भावना परिलक्षित होती है। पहले समाज में न क्लब थे, न ही कोई सोसायटी बनीं थीं और न ही सिनेमा, टी० वी० आदि की तरह मनोरंजन के साधन ही थे। इसलिए हिन्दू मान्यतानुसार वर्ष के बारह महीनों में कुछ ऐसी तिथियां निर्धारित कर दी गई जब परिवार और समाज के लोग आपस में मिलजुल कर एक स्थान पर एकत्रित हो, पूजा-अनुष्ठान करें तथा साथ मिलकर हंसते-बोलते हुए मिष्ठान, पकवान आदि का आनन्द लें। इससे सभी का मनोरंजन तो होता ही है, आपस में एकता की भावना भी विकसित होती है, साथ ही मन में आई थोड़ी बहुत कटुता का निवारण भी होता है। इसी तरह दिशाशूल के बारे में तो सुना ही होगा। हांलाकि आज के संदर्भ में इसकी कोई मान्यता नहीं रह गई है। मध्ययुगीन काल में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए लोग पैदल चलते थे उनके पास कोई वाहन नहीं होता था। बीहड़ रास्तों और जंगलों से होकर गुजरने में चोर-डाकूओं का भय रहता था। ऐसे में दिशाशूल की परम्परा डाल यह निश्चित प्रथा बना दी गई कि अमुक दिन उत्तर दिशा के लिए उपयुक्त है तो अमुक दिन को दक्षिण, या पूर्व या फिर

पश्चिम दिशा में जाना चाहिए। इससे लोग समूह में एकत्रित हो एक साथ आने-जाने लगे। इससे रास्ता आसानी से कटता था, चोरी-डकैती का भय भी कम लगता। किन्तु विज्ञान के इस बढ़ते चरण में अतिशीघ्र स्वचालित वाहनों के आविष्कार ने दिशाशूल की परम्परा को विस्मृत करा दिया। इस तरह समय और काल के साथ मान्यताएँ, परम्पराएं बदलती गयीं।

इसे एक अत्यन्त धार्मिक कार्य से अच्छी तरह से समझा जा सकता है। मन्दिरों में जगह-जगह पीतल के घंटे टंगे हुए तो सबने देखा है। ये सिर्फ प्रवेश द्वार तक ही नहीं, गर्भगृह तक पहुंचते-पहुंचते अनेक घंटे टंगे हुए होते हैं जिन्हें एक के बाद एक लोग बजाते जाते हैं। पर क्या कभी हमने यह सोंचने की कोशिश की कि इसके पीछे कोई तर्क या तथ्य भी हो सकता है?

वास्तव में ये घंटे प्रतीक हैं हमारी श्रद्धा, शान्ति और विश्वास के। ज्योंही हम मन्दिर में प्रवेश करते हैं हमारा हाथ स्वतः ही घंटे की ओर उठ जाता है। ऐसा क्यों? कहने को हम कह सकते हैं यह प्रथा बनी हुई है कि मन्दिर में घंटा अवश्य बजाना चाहिए, इसलिए हम बजा देते हैं लेकिन क्या कभी हमने यह ध्यान देने की कोशिश की कि इन घंटों से जो ध्वनि मुखरित होती है उससे हमारे हृदय और अन्तर के समस्त तार झंकृत हो उठते हैं जो अन्दर तक एक गहन शान्ति की अनुभूति कराते हैं। इस तरह शान्तचित होकर मानव अपनी याचना के साथ भगवत ध्यान में लीन हो जाता है।

अब एक बड़े उदाहरण से इसे पूर्णतया स्पष्ट किया जा सकता है। वस्तुतः चेचक एक रोग है। भयानक संक्रामक रोग। इसके कीटाणु एक से दूसरे में फैलते हैं। यह छः प्रकार का माना गया है जिसमें सबसे भयानक होती है चामुण्डा माता। जब चेचक रोग इस रूप में आ जाता है तब गला, गुप्तांग, आंखों तक में हो जाता है। इसमें रोगी की जान तक पर बन आती है। इस चेचक रोग को 'माता' भी कहा जाता है। वह इसलिए कि यह रोग अपने अन्दर से ही उत्पन्न होता है। इसका संक्रमण हमारे शरीर से ही उदित होता है। यह सर्वविदित है कि प्रत्येक स्त्री में कुछ विकार होते है। यह विकृत पदार्थ प्रत्येक माह मासिक धर्म के रूप में दूषित रक्त बनकर निकलता है। किन्तु जब स्त्री गर्भवती होती है तो यही विकार नीचे की ओर न जाकर ऊपर की ओर जाता है। यही गर्भस्थ शिशु का आधार बनता है, उसे पुष्टता प्रदान करता है। जब यही विकृत पदार्थ और ऊपर चढ़ता है तो वह मां का दूध बनता है। अतः यह जो चेचक रोग है वह भी हमारे ही शरीर से आता है इसलिए इसे माता कहा जाता है। वह भी शीतला माता।

शीतल का अर्थ है ठंडा। इस रोग में ताप व जलन बहुत अधिक होती है जिसे ठंडा किया जाता है। शीतला माता का जल लाकर रोगी को लगाया जाता है। यह रोग संक्रमित है और इसका संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे में हो जाता है। अतः रोगी को सबसे अलग रखा जाता है। अगर गौर करें तो पायेंगे कि माता को नग्न दिखाया गया है। नग्न इसलिए कि इस रोग के दानों में यदि कपड़े से रगड़ होती है तो तकलीफ बहुत होती है। इसलिए शरीर पर कपड़े न के बराबर होने चाहिए। संभव हो तो नग्न रखकर ऊपर से चादर डाल देनी चाहिए।

देवी के सर पर सूप होता है, कोई सोने का मुकुट या छत्र नहीं। हाथ में झाड़ू। जिस प्रकार से अन्न को सूप से फटक, झटक कर साफ किया जाता है और झाड़ू से बुहार कर घर साफ किया जाता है। ये दोनों ही वस्तुएं प्रतीक हैं इस बात की कि जहां यह रोग होता है वहां सफाई की अत्यधिक आवश्यकता होती है। रोगी के पास नीम की डाली रखी जाती है। नीम संक्रमण को कम करता है, उसकी हवा शीतलता प्रदान करती है।

ठंडे दीपक से पूजा करना तथा ठंडा या बासी खाना भी शीतलता का पर्याय है। शीतला माता का मन्दिर गांव से दूर निर्जन स्थान पर बनाया जाता है वह इसलिए कि रोगी के घर से निकले व्यक्ति को देखकर यह पता चल जाए कि फला घर में माता का प्रकोप है जिससे लोग रोगी से दूर रहें ताकि उन्हें भी संक्रमण न हो जाए। इस तरह सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होताहै कि धर्म ढकोसला नहीं है। हर धार्मिक कार्य के पीछे वैज्ञानिक तथ्य छिपा हुआ है। ❑

> ''नारी जीवन का चित्र यहीं, क्या? विरल रंग भर देती हो
> अस्फुट रेखा की सीमा में, आकार कला को देती हो'' प्रसाद

रोम रोम में रची बसी हमारी संस्कृति!

संकलन : श्रीमती शकुन्तला बुधिया
(विदुषी गृहणी, त्रिवेणी संस्थापक सदस्य)

1. आदि ग्रन्थ वेद : आदि ग्रन्थ वेद 4 हैं जो भगवान के श्रीमुख से उच्चारित एवं श्री वेदव्यास द्वारा संकलित हुए। नाम– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

2. श्रीमद् भगवद् गीता : भगवान श्री कृष्ण के श्रीमुख से उच्चारित, श्री गणेश जी द्वारा लिखित एवं श्री वेद व्यास द्वारा संकलित किये गये। गीता के कुल 18 अध्याय एवं कुल 700 श्लोक हैं। अध्यायों (योग) का नाम इस प्रकार हैः–

अर्जुन विषाद योग, सांख्य, कर्म, ज्ञान कर्म सन्यास, कर्म सन्यास, आत्म संयम, ज्ञान विज्ञान, अक्षर ब्रह्म, राज विद्याराज गुह्य, विभूति, विश्व स्वरूप दर्शन, भक्ति, क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग, गुणत्रय विभाग, पुरुषोत्तम, देवासुर सपंद विभाग, श्रद्धात्रसं विभाग एवं मोक्ष सन्यास योग।

3. महाभारत : वक्ता श्री वेद व्यास, लेखक श्री गणेश, कुल 18 पर्व, श्लोक संख्या 1 लाख।

4. श्रीमद् भागवत : रचयिता कृष्ण द्वयपायन श्री वेद व्यास, 12 स्कन्द, 335 अध्याय, 18 हजार श्लोक संख्या।

5. श्री राम चरित मानस : गोस्वामी तुलसीदास द्वारा 2 वर्ष, 6 माह व 26 दिन में रचित जिसमें कुल 7 अध्याय (काण्ड) बाल काण्ड, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, लंका एवं उत्तर काण्ड।

6. दत्तात्रेय के गुरु : कुल 24 गुरु बनाये।

7. पाँच सर्वश्रेष्ठ वृक्ष : (1) पीपल (2) गूलर (3) पाकड़ (4) आम (5) वट

8. पाँच पवित्र पुष्प : (1) तुलसी (2) गेंदा (3) मंगरैया (4) चम्पा (5) तिल पुष्प

9. पाँच श्रेष्ठ कन्यायें : (1) अहिल्या (2) द्रोपदी (3) तारा (4) कुन्ती (5) मन्दोदरी

10. सात अमर महापुरुष : (1) अश्वत्थामा (2) बली (3) व्यास (4) हनुमान (5) विभीषण (6) कृपाचार्य (7) परशुराम

11. बारह ज्योतिर्लिगं : (1) सोमनाथ (2) मल्लिकार्जुन (3) महा कालेश्वर (4) ओंकारेश्वर (5) बैद्यनाथ (6) भीम शंकर (7) रामेश्वरम् (8) नागेश्वर (9) काशी विश्वनाथ (10) केदार नाथ (11) धुरमेश्वर

12. सात मातायें (सप्तमातृका) : (1) ब्राह्मी (2) माहेश्वरी (3) कौमारी (4) वैष्णवी (5) वाराही (6) इन्द्राणी (7) चामुण्डा

13. नवग्रह : नाम – रत्न–वृक्ष/समिधा

क्रम	ग्रह	रत्न	वृक्ष/समिधा
1.	सूर्य	माणिक्य	बेल या मदार
2.	चन्द्र	मोती	पलाश या ढाक
3.	मंगल	मूंगा	खैर या अनन्त मूल
4.	बुध	पन्ना	अपामार्ग (चिड़चिड़ी)
5.	गुरु	पुखराज	पीपल या हल्दी
6.	शुक्र	हीरा	गूलर
7.	शनि	नीलम	शमी
8.	राहु	गोमेद	दूर्वा या चन्दन
9.	केतु	लहसुनिया	चन्दन/कुश

वास्तु विषय पर वार्ता

(त्रिवेणी संस्था मिरजापुर द्वारा आयोजित)

डा० राम लाल त्रिपाठी
(एम. ए., पीं. एच. डी., अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तु शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, वेदपण्डित पुरस्कार से सम्मानित)

वागीशाद्याः सुमनसः स्तं सर्वार्थानामुपक्रमे।
यंनत्वा कृत कृत्याः स्युरस्तं नमामि गजाननम्।।
नामा स्मृति निबन्धानां मतमालोक्य धीमताम्।
लिख्यते बाल बोधाय वास्तु वार्ता तिरूत्तमा।।

वस् धातु निवास अर्थ में ग्रहण किया जाता है। जिस भूमि पर प्राणी वास करते हैं, उसे वास्तु कहा जाता है। वास्तु से सम्बन्धित विधि विधान का ज्ञान कराने वाले पुस्तक को वास्तुशास्त्र कहते हैं। इसका वर्णन अथर्ववेद के शालासूक्त का0 9 सूक्त 3, 12 में बीज रूप में है। पुराणों में वास्तु के विषय का वर्णन मिलता है। भगवान श्री राम एवं श्रीकृष्ण भगवान द्वारा भी वास्तु का वर्णन है। मत्स्य पुराण के अनुसार वास्तु शास्त्र के 18 उपदेशक हैं तथा उत्तर भारत में वास्तु शास्त्र के प्रधान आचार्य विश्वकर्मा है एवं दक्षिण भारतं के प्रधान आचार्य मयदानव है। दूसरे के भूमि भवन में किया गया कर्म निष्फल हो जाता है। भविष्य पुराण के अनुसार उसका फल भूमि या भवन के मालिक को प्राप्त होता है। अतः अपना घर होना आवश्यक है।

भूमि क्रय करते समय ग्राम या स्थान का नाम तथा अपने नाम से विचार करना चाहिये कि यह हमारे लिय उचित है कि नहीं? फिर भूमि के मिट्‌टी का परीक्षण करें, मिट्‌टी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्ण की होती है। तद्नुसार उसके गुण होते हैं। भूमि के आकार प्रकार पर भी विचार करना चाहिए चौकोर भूमि लाभदायक होती है। दक्षिण–उत्तर की ओर लम्बाई अधिक हो तो चन्द्र वेध एवं पूर्व पश्चिम लम्बाई अधिक हाने पर सूर्य वेध भूमि कहलाती है। चन्द्र वेध निवास के लिये तथा बगीचे के लिये सूर्य वेध अच्छा होता है। भूमि के ढाल एवं गड्ढे तथा ऊँचे–नीचे, कटे–फटे का भी विचार करना चाहिए। उसके दशा एवं दिशा पर विचार करें। भूमि खोदने का कार्य 18 इंच कराके उसमें से निकलने वाले वस्तुओं पर विचार लाभ–हानि का वर्णन वास्तु में है। मिट्‌टी के गन्ध एवं स्वाद के आधार पर फल का वर्णन है। भूमि के शुभाशुभ ज्ञान के लिये कई प्रकार से परिक्षण करने का विधान वास्तु में है। प्रश्न लग्न से भी शुभाशुभ का ज्ञान होता है। भूमि के जाग्रत एवं सुसुप्तावस्था का ज्ञान वर्णित है। विवाह की भाँति अष्टकूट का वर्णन नाड़ी एक होने से लाभ वर्गज्ञान, दशाज्ञान काकिणी विचार गृह निर्माण में मास तिथि नक्षत्र वार योग करण लग्न का फल, द्वार स्थापन की विधि, गृह निर्माण में निषद्ध वस्तुओं का वर्णन शिलान्यास एवं गृह प्रवेश का शुभ मुहूर्त वृषभ चक्र से विचार शल्योद्धार ज्ञान वास्तु पुरुष वास का ज्ञान कूर्मवास ज्ञान, राहु के मुख में खात खोदने का निषेध, अग्नि कोण में शिलान्यास के विधान का वर्णन तथा राहु के पृष्ठ कोण में शिलान्यास करने का विधान, षोडशगृह वर्णन, गृह प्रवेश में भूमि, देहली, रिद्धि–सिद्धि शुभ–लाभ स्वास्तिक, शंख, मत्स्य तोरण द्वार का पूजन, मण्डप में गणेश गौरी, कलश, पृथ्वी पूजन पूण्याहवाचन, षोडश मातृका, सप्तघृत मातृका, पूजन आयुष्य मंत्र जप, नान्दी श्राद्ध, संकल्पिक रूप से करके आचार्यदिवरण दिग्रक्षण, पंचगव्य से प्रोक्षण पंचगव्य प्राशन, गोदान,

स्व० कृष्ण लाल गुप्त 'अन्वेषी'
(एक प्रतिभा सम्पन्न कवि, गीतों का राजकुमार 47 वर्ष की आयु में बिदा)

एक गीत

महके सारी रात
फूल की बात न पूछो!
पारिजात की धुली सेज पर
संकेतों का जादू टोना
कादम्बरी गीत से गूंजे–
गलियारे का कोना–कोना
गंध न हो बदनाम
फूल की जात न पूछो!
चन्दन घाटी का इन्दीवर
दबे पांव आ रास रचाये
शहनाई पर पवन दक्षिणी
झूम–झूम मनुहार सुनाये
रंग न हो नीलाम
फूल की गात न पूछो!
महके सारी रात
फूल की बात न पूछो!

एक लोकगीत

फुलगेंदवा न मारऽ पिया, छुई–मुई हूँ।

नयन लजाधुर जस कनक मछरिया,

घुंघटवा न टारऽ पिया, छुई–मुई हूँ।

लवगं लता अस कस्तूरी देहियां,

गल बहियां न डारऽ पिया, छुई–मुई हूँ।

सोनजुही अस कांची उमरिया,

रस निबुला न गारऽ पिया, छुई–मुई हूँ।

मोम के बबुई नियर 'कृष्ण' पंखिया,

प्रेम अगिया न बारऽ, पिया छुई–मुई हूँ। ❑

वास्तु, योगिनी, क्षैत्र पाल, नवग्रह सर्वतो भद्र पूजन विष्णु पूजन, हवन, पताका पूजन, अग्नि कोण में वास्तु की स्थापना, ब्राह्मण अतिथि बन्धु बान्धव को भोजन कराके स्वयं प्रसाद ग्रहण करना चाहिए। भवन के पूर्व, उत्तर एवं पश्चिम बगीचा लगाना शुभ होता है। अनेक प्रकार के शुभाशुभ वृक्षों का वर्णन दिशा के अनुसार वर्णित है। गोशाला, गजशाला, अश्वशाला, यज्ञशाला का वर्णन एवं राजा मंत्री, पुरोहित आदि के तथा सामान्य जन के निवास का वर्णन, घर के समीप शुभाशुभ वस्तुओं का वर्णन, भूमि के भीतर द्रव्यादि के ज्ञान का वर्णन वास्तुशास्त्र में है। षोडशशाला में रसोई, मंदिर, शयनकक्ष, स्नानघर, शौचालय, शस्त्रागार, भण्डार गृह, सूतिका गृह, कोप भवन, अतिथि कक्ष आदि का वर्णन एवं ध्रुव धान्य, ज़य, नन्द खर आदि षोडशगृह नामों का उल्लेख तथा विधि–विधान का वर्णन है।

वास्तु दोष निवारण के लिये देवी–देवताओं के पूजन, वास्तु पूजन श्री गणेश–लक्ष्मी, रिद्धि–सिद्धि, शुभ–लाभ पूजन स्वास्तिक, शंख, मत्स्य, कलश, नारियल का चिन्ह, ध्वजा पताका, आगंन की शुद्धि, यंत्र–मंत्र का प्रयोग एवं सामान्य परिवर्तनों के द्वारा दोष निवारण सम्भव है।

अतः कोई भी व्यक्ति किसी भी स्थान पर गृह निर्माण कराना चाहता है तो आजीवन सुख शान्ति, समृद्धि के लिये किसी वास्तु शास्त्री से परामर्श करके भवन निर्माण कराना लाभप्रद सिद्ध होगा। ❑

सम्पर्क : बड़ी माता इमली महादेव, मीरजापुर मो0 : 9415205634, 9415689316

समय का सदुपयोग

शशि कान्त मिश्र
शिक्षा अनुरागी, व्यवसायी, त्रिवेणी सदस्य

समय अनन्त है। उसे किसी भी पैमाने से न तो नापा जा सकता है और न किसी तराजू पर तौला ही जा सकता है। यदि कोई चाहे तो वह अपनी शक्ति, धन, सम्पत्ति के बल पर सदुपयोग करने का अभ्यास कर ले तो वह इस छोटे से जीवन में बहुत कुछ कर सकता है। सन्त कबीर ने कहा भी है –

काल्ह करै सो आज कर आज करे सो अब ।
पल में परलै होयगी बहुरि करैगा कब ।।

समय के सदुपयोग का सीधा अर्थ है कि जब जो कार्य जिस समय करना उचित हो तब हम अन्य बातें भूलकर वही कार्य करें। पढ़ने के समय पढ़ना, खेलने के समय खेलना, सोने के समय सोना आदि कार्य समय पर करना ही समय का सदुपयोग कहा जाता है। जिस प्रकार पका हुआ फल जमीन पर गिरने के बाद डाली पर नहीं लगाया जा सकता उसी प्रकार गया हुआ समय भी दुबारा नहीं मिलता। अतः यदि अब तक आपने समय की उपेक्षा भी की है तो कोई बात नहीं पर यदि आप सभी सावधान हो जाते हैं तो शेष समय का सदुपयोग कर लेंगे। यह भावी जीवन की सुखद योजनाओं में अत्यधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। ''देर आयद दुरुस्त आयद'' की कहावत, को ध्यान में रखते हुये समय का सदुपयोग आरंभ कर दें। फिर तो परिणाम हमेशा सुखदायक व सफलतादायक ही होगा। ☐

तुम्हारी याद

राम कृष्ण गुप्त
(साहित्य अनुरागी, सेवा निवृत्त जीवन
बीमा अधिकारी, त्रिवेणी सदस्य)

पर न पाया मैं तुम्हे,
प्यार के अभिसार में ।
खो गई तुम कल्पना सी,
मकरन्द के भुज पास में ।
मैं व्यथित सा हो उठा,
सहसा तुम्हारी याद में ।
तुम न आई–खोगई,
प्यार के अभिसार में । ☐

एक गीत कुछ दोहे नए नए

ओम धीरज
(प्रतिभा सम्पन्न, पुरस्कृत युवा रचनाकार
गीत संग्रह 'बेघर हुए अलाव' प्रकाशित,
सम्प्रति : उपजिलाधिकारी, मड़िहान, मिरजापुर)

चुटकी भर सिन्दूर

कितना मँहगा आज हुआ है,
चुटकी भर सिन्दूर
बेटी–बाप साथ बिकते हैं,
बेबस हो मजबूर

रूपवान गुणवान सुशिक्षित
है सुशील, सब व्यर्थ,
बिना द्रव्य के किसी शब्द का
खुले न कोई अर्थ
दान–साथ दी गई दक्षिणा
अब बनती दस्तूर

अक्ल की कोई नहीं जरूरत
यदि गाठें मजबूत
पग–पग पर मिलते जायेंगे
ऐसे कई सबूत
पूत हुआ क्या खोटा सिक्का
भी चलता भरपूर

धवल–वसन सी हुई पुत्रियाँ
सदा बचाये दाग,
चूल्हें में धुँधुँआती रहती
सुबह, दोपहर, शाम,
हवा में अक्सर जल जाती हैं
जैसे हो कर्पूर

एक डाल पर ही खिलते हैं
ये दोनों बन–फूल
एक बना शुभ 'साइत' लेकिन
दूजा है 'दिक्शूल'
'धीरज' लगता बेटी होना
कोई बड़ा कसूर

धूप-छाँव में

धूप छाँव में हो गया गोपनीय अनुबन्ध,
कविता जाड़े की लिखों हम गर्मी के छन्द।

तकिया करे लिहाफ से चुभती सी इक बात,
चार दिनों की चाँदनी पुनः अँधेरी रात।

मूँगफली बादाम के अलग–अलग है रंग,
यह गरीब के साथ है, वह अमीर के संग।

'ससुरैती' बिटिया हुई यह जाड़े की धूप,
कभी बहू सी छिप दिखे कभी ननद के रूप।

कठुवायी सोयी पड़ी फसलें पाँव समेट,
कुहरे के अँकवार में चादर कई लपेट।

रंगीनी सब छिप गयी हुई कठिन पहचान,
बुर्का पहने ओंस की फसलें दिखें समान।

कठुवाकर वह देखता पुत्रों में अलगाव,
एक पिता के सामने जलते कई अलाव।

धूप धूपौनी कर रही, बेठी गाँती बाँध
इतराता बेटा फिरे चढ़ बापू के काँध

कभी बाँह छाती बँधे कभी ढँके सिर कान,
ठंड सिकुड़ में बेटियाँ माँ को लगे समान।

'बड़ा दिनी' अवकाश में चाचा आये गाँव,
पूस, माघ धूप से रुके नहीं इक ठाँव।

"ग़म बिछड़ने का नहीं करते कभी खाना बदोश
वह तो वीराने बसाने का हुनर जानते हैं" नजर कानपुरी

भवेश चंद्र जायसवाल

(प्रगतिशील धारा के प्रखर-प्रतिष्ठित कवि, 'बदरंग आत्माओं के लिये' 'राख होने से पहले', 'मेरा गाँव मेरा देश' व दो बाल पुस्तकें प्रकाशित विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित सम्प्रति : सह सम्पादक 'तरंग')

मैं तुम्हें खाली हाथ नहीं लौटने दूँगा

वर्ष का अंतिम दिन!
घर में चिल्लाहटें/बच्चों का शोर
पूजा-पथ पर पट पड़ा धर्म-ग्रंथ
भिनकतीं मक्खियाँ
सड़क पर जीनधारी छिछोरे छोकरे
मूछों पर ताव देते साठे-पाठे
फब्तियाँ फेंकते पुलिस-मैन
कोने के नल से दूध में पानी मिलाता दूधिया
पटरी पर पड़ा/ठण्ड से ऐंठा-अकड़ा
अधनंगा आदमी
फूले पेट से तसला टिकाये चली जाती मजदूरिन
खचाखच भरी भागती बस के पीछे खड़ा
दफ्तर का बाबू
दूध-डीपो पर लम्बी लाइन में लगे
लड़ते-झगड़ते लोग,
शाही कुत्तों को टट्टी-पेशाब कराते
गिटपिट अँग्रेजी उलटते, सैर करते मेम-साब .....
और गुनगुनी धूप में बिजली के तार पर
झूलती
छोटी सी एक हरी चिड़िया!
विदा! मेरे 2006! विदा!
मैं तुम्हे खाली हाथ नहीं लौटने दूँगा
एक समय
एक तारीख़ ने जो प्यार मुझे दिया था
वह सब कुछ
मैं तुम्हे देता हूँ।

"मेहरबा हो के बुला लो मुझे चाहे जिस वक्त
मैं गया वक्त नहीं हूँ कि फिर आ भी न सकूं" -गालिब

मुहब्बत-मुहब्बत लिखो

गणेश गम्भीर
(दुष्यन्त कुमार की तरह, हिन्दी गजल को
नई दिशा देने वाले कवि–साहित्यकार)

नफरतों से भरे आज के दौर मे,
बस मुहब्बत–मुहब्वत–मुहब्बत लिखो ।

उगते सूरज की सोना किरण पर लिखो,
उजली रातों के चांदी हिरण पर लिखो ।
खिलते फूलों की हर पांखुरी पर लिखो,
खुशबुओं की नयीं बांसुरी पर लिखो ।
जिसको पढ़ने से जीने की चाहत बढ़े,
जब लिखो इस तरह की इबारत लिखो ।

भूख पर भी लिखो, प्यास पर भी लिखो,
ओस पर भी लिखो, घास पर भी लिखो ।
आग–पानी की जोर आजमाईश लिखो,
आम इन्सान की सारी ख्वाहिश लिखो ।
जुल्म का जिस जगह बोलबाला दिखे,
उस जगह पर बगावत–बगावत लिखो ।

तीरगी है जलाओ दिये ही दिये,
रोशनी चाहिये जिन्दगी के लिये ।
है जरुरी बहुत आदमी के लिये,
हाथ उसके बढ़े दोस्ती के लिये ।
छीन हक जिनको सदियों सताया गया,
साथ उनका दो, पूरी हिमायत लिखो ।

क़ौमो मजहब का बढ़ने लगा शोर है,
इसकी बुनियाद हालांकि कमजोर है ।
बाढ़ पर है पहाड़ी नदी इन दिनों,
गिरते–बहते हुए पेड़ों को मत गिनो ।
सामने जानलेवा मुसीबत खड़ी,
हो मुसीबत से कैसे हिफ़ाजत लिखो ।

नफरतों से भरे आज के दौर मे,
बस मुहब्बत–मुहब्बत–मुहब्बत लिखो ।

ग़ज़ल

ज़फ़र मिर्जापुरी
(मशहूर शायर ''घटाओं के फूल''
रचना संग्रह प्रकाशित)

न पूछो किस लिये चेहरा फ़कीराना बना डाला,
तेरी फुर्क़त की बेताबी ने दीवाना बना डाला ।

शबाबो हुस्न की ख़ातिर दिल आशिक बना डाला,
शमा तन्हा नज़र आई तो परवाना बना डाला ।

सुराहीं जामो मीना से तसल्ली जब न हो पाई,
तेरे क़दमों की मिट्टी ले के पैमाना बना डाला ।

यहां हर धर्म के इन्सां पऐ तसकीन आते हैं,
बड़ा दिल कश मेरे साक़ी ने मैख़ाना बना डाला ।

कभी अलफ़ाज के फूलों से बू उल्फ़त की आती थीं,
दिलों के गुलसितां को किस ने वीराना बना डाला ।

मेरे मालिक तेरी बस ख़ूबियाँ हर शै से ज़ाहिर हैं,
तेरी बारिश ने खेतों के लिये दाना बना डाला ।

कबीर आख़िर बताओं किस लिये ये काम कर बैठे,
बनारस छोड़ के मगहर को काशाना बना डाला ।

जिसे देखो ज़माने में वहीं हाले परीशां है,
'ज़फ़र' हर आदमी को किसने दीवाना बना डाला ।

कुछ और शेर

खेल ये महंगा न पड़ जाए किसी दिन आपको,
घर है शीशे का तो मत पत्थर उछाला कीजिये।

देखिये लग जायेगी खुद आपको अपनी नजर,
आईना हाथों में लेकर यूं न देखा कीजिये।

अपने रन्जो-ग़म को तन्हाई के आलम में 'ज़फ़र',
जिन्दगी की साज़ पर नगमें सुनाया कीजिए।

गजल

रमेश चन्द्र द्विवेदी
शौक मिर्जापुरी
(स्व0 फिराक गोरखपुरी के साहित्यिक सचिव रहे, श्रेष्ठ कवि एवं लेखक)

ज़ख्म़ को फूल तो हम ग़म को दवा कहते हैं
हमको दीवाना जो कहते है बजा कहते हैं
बेनयाजी को भी हम नाज़ो अदा कहते हैं
ना समझ हैं जो करम् को भी ज़फा कहते हैं
तेरी गुफ्तार के बरबत की सदा कहते हैं
जुल्फ लहराये ते सावन की घटा कहते हैं
उनको हम बन्दए–तस्लीम–वो रज़ा कहते हैं
ज़हरे ग़म को जो मोहब्बत की दवा कहते हैं
कोई झोंका जो हवा का कभी आ जाता हैं
उसको भी अहले क़फ़स बादे सबा कहते हैं
तर्के उल्फ़त में भी आराम नहीं है हासिल
दिल में जो एक ख़लिश है उसे क्या कहते हैं

जो समझ में न कभी आये हक़ीकत है वही
हम जिसे छू न सके उसको खुदा कहते हैं
तंग करते हैं जो अग़ियार तो कुछ फिक्र न कर
लोग अच्छों को भी दुनिया में बुरा कहते हैं

बूंद पड़ती है तो होता है तरन्नुम पैदा
सुनने वाले उसे पायल की सदा कहते हैं
तेरे कूचे से महकती हुई जो आती है
उसको हम गुलशने जन्नत की हवा कहते हैं
तेरे रंगीन तबस्सुम के शफ़कज़ारों को
हम दयारे गुलो सासा की फ़िज़ा कहते हैं
महफिले नाज़ पै है बज़्मे सुरय्या का गुमा
चाँद को हम तेरा नक्शे कदे पा कहते हैं
शब का सन्नाटा भी कुछ बोल रहा हो जैसे
हम ख़ामोशी को फ़रिश्तों की नबा कहते हैं
हँस के पी लेते हैं इस दौर के सुक़रात हैं हम
जामे ज़हर को हम आबे बक़ा कहते हैं
राहे मंजिल से जो वाक़िफ़ भी नहीं हैं ऐ शौक
काफिले वाले उसे रहनुमा कहते हैं

"अच्छा है दिल के पास रहे पासबाने–अक्ल*
लेकिन कभी–कभी इसे तनहा भी छोड़ दें" –इकबाल
*बुद्धिरुपी रक्षक

कुछ नई कविताएं

प्रभु नारायण श्रीवास्तव
(से.नि. अंग्रेजी विभागाध्यक्ष जी.डी.बी.कालेज, हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताजार, 'अनाज का दाना चुप है' संग्रह पुरस्कृत, त्रिवेणी सदस्य)

खुशबू

एक निश्चित तापमान पर
उबल जाता है पानी
पिघल जाती है धातुयें
पर खुशबू न उबलती है, न पिघलती है
सिर्फ उड़ती रहती है तितलियों की तरह
इस डाल से उस डाल तक
पृथ्वी से आकाश तक
और नम कर देती है
मिट्टी को, हवा को, मौसम को
छिड़क कर बूंदे
अपनी नरम-नरम हंसी की।

वस्तुयें

वस्तुयें जितनी होती हैं ज्यादा ठोस
उतनी तेजी से गिरती हैं नीचे
हर बार उछालने पर
वे गिर जाती हैं पृथ्वी पर
लगातार खींचती रहती हैं
किसी अदृश्य ताकत की अदृश्य गिरफ्त में
ऊपर तो उठती हैं
हवा, रोशनी, भाप, खुशबू और दीये की लौ
कोई भी ताकत उन्हे सम्मोहित नहीं कर पाती
चूंकि वे वस्तुयें नहीं हैं
और नहीं हैं वस्तुओं की तरह ठोस
वो मुक्त रहती हैं हर गिरफ्त से

परिन्दों मत बैठना

परिन्दों मत बैठना
किसी मन्दिर, किसी मसजिद के कंगूरे पर
वहां पर प्रार्थनायें होती नहीं अब
मुहब्बत के हजारों बीज बोती नहीं अब
वहां पर आग जलती है फिरका परस्ती की
दर्ज़ की जाती है वहां पर सिसकियां
जली अधजली बस्ती की
तोड़ने आते है वहां रखे आइनों को लोग
धन्धा करोड़ों का, करोड़ों का वहां पर
हो रहा विनियोग
अजाने खूब होती है, घड़ी घंटाल भी बजते
बड़े मंहगे लिबासों में
वहां अब देवता सजते
मौत के गुप्तचर बैठे निडर, कुंडली मारे
वन्दना के गीत आखिर
कोई गाये तो गाये कैसे।

आईना

आईना चाहे जैसा हो
टूट जाता है जरा सी चोट लगने पर
फिर जुड़ नही पाता
दरारें रह जाती हैं, छोड़ जाती हैं
खंड-खंड प्रतिबिम्ब
खूब सूरत से खूब सूरत चेहरे
डरावने दीखने लगते हैं
हाँ, पानी के आईने की बात और है
वह टूटता है फिर जुड़ जाता है
कहीं कोई टूटने का निशान तक नहीं रहता।

❑

"जाहिद शराब पीने दे मस्जिद में बैठ कर
या वह जगह बता जहाँ पर खुदा नहीं"

गजल

डा० शाद मश्रिकी
(स्व० अनवर मिर्जापुरी के देश का हर दिल अज़ीज मशहूर शायर)

(1)

"और कुछ सोचे तरीक़ा ये पुराना हो गया,
तोड़ते पत्थर से शीशा एक ज़माना हो गया।"

"अब उसे पहचानना दुश्वार है मेरे लिये,
जिसका अंदाज़े तबस्सुम क़ातिलाना हो गया।"

"झिलमिला कर बुझ गये जितने भी रौशन थे चिराग,
कल जो एक जिन्दा हक़ीक़त था फसाना हो गया।"

"धड़कने दिल की किसी के कोई सुनता ही नहीं,
जिन्दा रहने का सलीक़ा ताजिराना हो गया।"

"जाते–जाते दे गया कलियों को फूलों का लिबास,
ओस का क़तरा जो सूरज का निशाना हो गया।"

"मैं दुवाएँ दे रहा हूँ गर्दिशे अय्याम को,
बिजलियों की नज़्र मेरा आशियाना हो गया।

"शाद" उनसे दूर रखना चाहते थे सब मुझे,
एक क़यामत उनके फिर नज़दीक जाना हो गया।

(2)

"आग लगाने बारूदी तदबीरे आतीं हैं,
बरबादी की गोद में जब तामीरें आती हैं।"

"दुनियाँ में जिन्दा रहते हैं बेच के जो ईमान,
हाथ उन्हीं के गैरों की जागीरें आती हैं।"

"मंजिल की जानिब बढ़ते हैं जब भी मेरे पॉव,
मेरी जानिब बल खाती ज़ंजीरें आतीं हैं।"

"माज़ी की खुश्बू का जिनसे रिश्ता होता है,
अक्सर मुझसे मिलने को तस्वीरें आती हैं।"

"कागज पीलें पड़ जायें तो उन्हें न देना फेंक,
काम पुराने लोगों की तहरीरे आती हैं।"

"शाद" अता करता है जिनकों रंगीनी एहसास,
सही–सही उन खाबों की ताबीरें आती हैं। ❑

गजल

विनय गुप्ता
(साहित्य, संगीत में समान अभिरुचि, गृहणी, त्रिवेणी सदस्य)

दिल में किसी के प्यार ने तुमको बुला लिया।
क्या हो गई खता कि हमें यू भुला दिया।।
दिल में किसी के प्यार ने तुमको बुला लिया।
हम भी कभी थे अपने मगर क्या गिला हुआ।
क्यों आपने हमें इतना रुला दिया ।।
क्या हो गई खता कि हमें यू भुला दिया।
दिल में किसी के प्यार ने तुमको बुला लिया।।
हम भी कभी थे सोचते होंगे न हम जुदा।
रह–रह के आपने हमें इतना सता दिया।।
क्या हो गई खता कि हमें यू भुला दिया।
दिल में किसी के प्यार ने तुमको बुला लिया।।
अब जिन्दगी में जीने को बाकी ही क्या रहा।
घुट–घुट के हम जीए हमें इतना सिखा दिया।।
क्या हो गई खता कि हमें यू भुला दिया।
दिल में किसी के प्यार ने तुमको बुला लिया।। ❑

लल्लन मालवीय
(कजली अखाड़ा प्रमुख, कवि, गायक त्रिवेणी सम्मान से अलंकृत)

कजली

तीज कजरी क दिना नगिचानबा
रंगाइद पिया लाल चुनरी
लाली चुनरिया पहिरब सँवरिया
दिलवा में इहै अरमान बा
रंगाइद पिया लाल चुनरी
लालई लहँगा रहे लाल चोली
लालई पर जियरा लोभान बा
रंगाइद पिया लाल चुनरी
सेन्दुर टिकुली मेहदी महावर
हाथे लाल चूड़ी मोहे पान बा
रंगाइद पिया लाल चुनरी
लल्लन पिया मोरे तोहई से लाली
तोहई से सान सनमान बा
रंगाइद पिया लाल चुनरी ❑

गीत

सुरेश चन्द्र वर्मा 'विनीत'
(प्रतिष्ठित गीतकार, सेवा निवृत्त लेखाकार)

छा गये नभ पर सघन घन छा गये।
उर विरह को वेदना उकसा गये।।

तपन में तप, तप किया किसने।
सजल बादल दल लगे रिसने।।

आ अतिथि आगत अगिन दहका गये।

प्यास पी पल-पल पलीं पलकें।
निरख नीरद के नयन बहके।।

मधु कलश रस, गन्ध, मद छलका गये।

प्रीति के पल, पोर-पोर पगे।
रास-रति में रोम-रोम रमे।।

मधु मिलन तन-बदन, मन महका गये।

देश की हालत : गजल

अरविन्द अवस्थी
(उदियमान कवि, हिन्दी प्रवक्ता डैफोडिल्स पब्लिक स्कूल)

देश की हालत सुनो, हम क्या बताएँ।
फाइलों में तोड़ती हैं दम, हजारों योजनाएँ।।

लोग कहते हैं कि शिक्षा, रोशनी है जिन्दगी की,
पाठशालाओं में अब तो, मास्टर खिचड़ी पकाएँ।

साँस खींचे है खड़ी, शालीनता सिकुड़ी हुई,
खिलखिलाकर हँस रही हैं, मंच पर अब वर्जनाएँ।

मन बहलता है सभी का, आजकल बस 'पॉप' से,
हो गई कड़वी-कसैली, वेद की पावन ऋचाएँ।

बन गया इतिहास 'शो', रखा हुआ अलमारियों में,
हैं गिलासों में ढुलकती, चटपटी मादक फिजाएँ।

अब नहीं दिखते कलेंडर, त्यागियों बलिदानियों के,
सज रही हैं कक्ष में अब, फनफनाती अप्सराएँ।

कविताएं

केदार नाथ 'सविता'

(छोटी–छोटी रचनाओं से बड़ी–बड़ी बात कहने वाले कवि, बैंक अधिकारी, त्रिवेणी सदस्य)

परिचय

मैं कोई अजनबी नहीं हूँ
इसी पृथ्वी का वासी हूँ
मेरा घर
भावनाओं की चहारदीवारी के
उस पार बसा है
जहां दरवाजे पर टंगी हैं
मेरे जख्मों की तख्तियां ।

जीवन

जीवन!
एक पथिक है
भटका हुआ
वन–वन।

मैं

उस आंख की झील में तन डूब गया, मन डूब गया,
उस रुप की आग में तन जल गया, मन जल गया,
प्यार की दुनिया है ऐसी कि इस जग में आज रह के भी,
मैं न जग का रह गया न खुद का रह गया ।

रोशनी

गिरा कर रुप की बिजली
वे कहने लगे–
हम भी अंधेरे में
रोशनी जलाने लगे ।

प्यार भरे एक दिन के लिए

एक हँसी के लिए कितनी खुशियाँ बर्बाद होती हैं
एक सेज के लिए कितनी कलियां बर्बाद होती हैं ।
यारों, इन्सान की जिन्दगी में प्यार भरे
एक दिन के लिए कितनी सदियाँ बर्बाद होती हैं ।

जिंदगी

उम्र भर
रिश्तों के जोड़–बाकी
से युक्त
गणित है ।

"लबों पे उसके कभी बद्दुआ नहीं होती
बस एक मां है जो मुझसे खफ़ा नहीं होती" –मुनव्वर राना

श्रीमती सत्या शर्मा

(अध्यात्म प्रेमी, समाज सेवी, निःशुल्क होमियो0 चिकित्सा श्रीमद् भगवद गीता एवं इकबाल की ''शिकवा जवाबे शिकवा'' का उर्दू से हिन्दी रुपान्तर, पाकित्तान में जन्मी, त्रिवेणी सदस्या)

एक गीत - एक प्रार्थना

जीवन व्यर्थ में बीत गया,
जो शेष बचा निस्सार न हो।
चाहूं तो क्या कुछ कर डालूं,
कर्त्तव्य का मुझ पर भार न हो।

औरों के दुःख हरुं प्रभु,
मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो।
कटु वचनों के गर्म लौह पर,
शीतलता का संचार करो।

ईर्ष्या की ज्वाला में जल कर,
जिनका तन मन क्षार हुआ।
ज्यों ज्यों व्यंगों की आग मिली,
त्यों त्यों तेरे दर से प्यार हुआ।

तुझे देखा वेवस आंखों में,
जो औषध अपनी कर न सके।
संजोने को जीवन-पूंजी,
जो जी न सके जो मर न सके।

मैं उन का सहारा बन जाऊं,
प्रभु ऐसी शक्ति प्रदान करो।
तन रहते कुछ तो कर जाऊं,
मुझे अपनी दया का दान करो।

सुगन्ध फैला कर पुष्पों सी,
संसार से मैं प्रस्थान करुं।
दया-कल्याण और प्रेम की थाती,
दुखियों को मैं दान करुं। ☐

(एक प्रतिक्रिया)

''सच तो यह है कि मीरजापुर की समृद्धिशाली साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्परा के संवाहक तमाम संस्थाओं में ''त्रिवेणी'' का अपना विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान है, ऐसा मैंने अपने डेढ़ वर्षीय कार्यकाल में अनुभव किया है। अपने विशिष्ट अन्दाज में सुरुचिपूर्ण संयोजन एवं विलक्षण प्रस्तुति के जरिए आपकी संस्था हम जैसे प्रवासी मीरजापुरियों को एक स्वच्छ परिवेश उपलब्ध कराती है तथा यहाँ की प्राचीन संस्कृति एवं परम्परा से शालीन एवं भद्र तरीके से सुपरिचित कराती है; इसके लिए हम जैसे लोग निश्चय ही ''त्रिवेणी'' परिवार के ऋणी रहेंगे।''

दिनांक : 29.11.2006

ओम धीरज

जिन्दगी

लालब्रत सिंह 'सुगम' मिर्जापुरी
(पूर्व प्रवक्ता, त्रिवेणी सदस्य, हास्य–व्यंग के सशक्त रचनाकार)

एकमत दम्पति सुघर, रसदार लगती जिन्दगी ।
फिर भी करते लोग क्यों, व्यभिचार सारी जिन्दगी ?

प्रेम जोड़े दिल से दिल को, प्रेम ही परमात्मा,
प्रेम में सन्देह जग, निस्सार कर दे जिन्दगी।
फिर भी करते लोग क्यों, व्यभिचार सारी जिन्दगी ?

दुःख असिम सागर यहाँ, आनन्द इक मधु बूँद सा,
होश में आ सोच लो, किस पार तेरी जिन्दगी ?
फिर भी करते लोग क्यों, व्यभिचार सारी जिन्दगी ?

चूक बन जाय हूक जब, मझधार भटके जिन्दगी,
ज्ञान बनता व्यक्ति का, पतवार सारी जिन्दगी।
फिर भी करते लोग क्यों, व्यभिचार सारी जिन्दगी ?

जब प्रकृति लेती परीक्षा, त्रासदी के रूप में,
झेलते दुर्भाग्य कह, लाचार सारी जिन्दगी।
फिर भी करते लोग क्यों, व्यभिचार सारी जिन्दगी ?

व्यस्त परहित में सदा, सच्चा वही धर्मात्मा,
ढोंगी करता धर्म का, व्यापार सारी जिन्दगी।
फिर भी करते लोग क्यों, व्यभिचार सारी जिन्दगी ?

क्या किया? क्या ना किया? सोच लो अब भी 'सुगम',
अन्त में जाना है यम के द्वार कैसी जिन्दगी ?
फिर भी करते लोग क्यों, व्यभिचार सारी जिन्दगी ?

❑

"हम वह स्याह नसीब हैं 'तारिक' कि शहर में
खोले दुकान कफ़न की तो सब मरना छोड़ दे" –तारिक अजीज

कैलाश नाथ खण्डेलवाल

(कर संरचना व रोटरी सेवा के साथ, एक नया विस्मयकारी व्यक्तित्व, पुरानी फाइल से प्राप्त 15 व 50 वर्ष पूर्व की दो रचनाएं–त्रिवेणी सदस्य द्वारा)

मेरी कल्पना

मैं जगत को कल्पना में–
प्रकृति का उपहार मानूँ।
मैं प्रभा को कल्पना में–
प्रकृति का मुस्कान मानूँ।
तारिकाओं को निशा में–
निशा का श्रृंगार मानूँ।
सांध्य में रक्तिम गगन को–
निश–माँग का सिंदूर मानूँ।
मैं कुसुम को कल्पना में–
मधुरता का सार मानूँ।
आंसूओं को कल्पना में–
मोतियों का हार मानूँ।
मैं विरह की वेदना को–
स्नेह का उपहार मानूँ।
मैं बिछे पथ–कंटको को–
प्यार या उपहार मानूँ।
चाँद की हिम–चन्द्रिका को–
स्नेह का उद्गार मानूँ।

अगस्त, 1950

अनुभूति सपनों की

नींद खुल गई थी
सपना देखकर उठा
तो जैसे शरीर के पोर–पोर में
सुगंध रची बसी थी
मीठे सपने की मादकता
इसी तरह विभोर करती हैं क्या?

सपनों को सुनाना
उन पर अत्याचार करना है
वे कितने गोपनीय होते है
कि बस उन्हें भोगा ही जा सकता है
शब्दों में बाँधा नहीं जा सकता
शब्दों में बाँधने की कोशिश
उनके साथ अन्याय करना है
उनकी अनुभूति में जो सुख है
वह उन्हे सुनाने में कहाँ?

कुछ सपने इतने मादक और अद्भुद होते हैं
कि उन्हें जैसे का तैसा सुना ही नहीं सकता
सपने एक ऐसी अनुभूति हैं
कि उन्हें अनुभूति ही रहने देना चाहिए
और इसी लिए मैंने
इस प्यारे सपने को
अपने मन पटल और ह्दय में
इस तरह अंकित कर लिया है
कि वह मुझे
तुम्हारी निकटता और गंध की अनुभूति
आजीवन देता रहे।

फरवरी, 1991

"खोलेगा जो किताब वही जान जायेगा
तुमने वर्क को मोड़ के अच्छा नहीं किया" –इशरत किरतपुरी

"अब के बिछुड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिले
जिस तरह सूखे हुये फूल किताबों में मिले" –अहमद फराज़

संकलन कर्ता : डा० आर० सी० दुआ

(हजारों–हजार आँखों की रक्षा करने वाले वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक, शेरो–शायरी से बेहद लगाव, (हमारे अनुरोध पर) उनकी नजरों में अलग–अलग आँखों की अलग–अलग कहानी)

तेरी आँखों के सिवा दुनियाँ में रखा क्या है?

न जाने क्यों मेरी आँखों में आ गए आँसू,
किसी ने हाथ बढ़ाया जो दोस्ती के लिये।

दिल में जो आग भड़कती है बुझाऊँ कैसे,
आँख कहती है बरसात में अब पाबन्दी है।

मिला कर आप से आंखे मुसीबत देख ली मैंने,
कयामत से बहुत पहले कयामत देख ली मैंने।

मिला कर आप से आंखे मुसीबत देख ली मैंने,
कयामत से बहुत पहले कयामत देख ली मैंने।

बेसबब आंख में आँसू नहीं आया करते,
आप से होगा यकीनन मेरी रिश्ता कोई।

मज़ा बरसात का चाहो, तो इन आँखों में आ बैठो,
स्याही है, सफेदी है, शफ़क (लाली) है अबरोबारा (जल प्रपात) है।

आँख से बरसी दिल की चोटें, बेदर्दी ने इन्हें आँसू समझा।
जान गुलों की निकली लेकिन, एहले हवस ने खुशबू समझा।।

जिसकी आँखों में शरारत थी वो महबूबा थी,
यह जो मजबूर सी औरत है वो घर वाली है।

रगों में दौड़ने फिरने के हम नहीं कायल,
जो आंख ही से ना टपका वो लहू क्या है।

तुम्हारी आंख की बरछी से वो घायल नहीं होगा,
जिस इन्सान के सीने में कोई दिल नहीं होगा।

हम ही हैं जो मय को आँखों से पिलाते हैं,
वरना कहने को जमाने में मयखाने बहुत हैं।

न जाने क्या कीमत है मेरी उनकी आखो में,
सुना है सब को एक नज़र में तौल लेते हैं।

मज़ा लेना हो गर बरसात का तो इन आखो में आ के बैठो तुम,
यह बरसो से बरसती हैं, वो बरसो मे बरसती हैं।

जिस पर हमारी आंख ने मोती बिछाए रात भर,
भेजा वही कागज उसे, हमने लिखा कुछ भी नहीं।

जब भी किसी आंख से गिरा आंसू,
अपनी आंख में ले लिया हमने।

नाजुकी उनके लबों की क्या कहिए, पंखुरी गुलाब की सी है,
'मीर' उन नीम बाज़ आंखों में सारी मस्ती शराब की सी है।

❑

"अमिय हलाहल मद भरे, सेत श्याम रतनार,
जिअत मरत झुकि–झुकि परत, जेहि चितवत इक बार"

आंखों की एक अद्भुत परिभाषा

(अमृत, विष और मद से भरी आँख श्वेत है, श्याम वर्ण की है और ललाई लिये हुये है। यदि वह किसी को एक बार देख ले तो वह व्यक्ति (अमृतपान से) जी उठेगा (विषपान से) भर जाएगा और (मद्यपान से) लड़खड़ा जाएगा।
(ऐसी ही आँख है रीति कालीन कवि रसलीन की नायिका की)

किशन बुधिया
(वर्षों पूर्व कजली रंग में रचे छोटे-छोटे गीत
भाव वहीं, भाषा कुछ नई)

सावन - भादों - झूले - कजली

नैनों से बहा काजल
काजल से बहीं कजली
तुम बदल गए सजना
रो रो के कहे बदली

भादों की रात घनेरी
गाते थे गीत कुँआरे
सब भूल गए हम मितवा
हम कौन थे कौन हमारे?
मन झूल रहा है पिया
फिर न आएगी ऐसी घड़ी
बल खाता है मेरा हिया
टूट जाए न तन की कड़ी

दो चार दिनों का खेल
जाने फिर कहाँ होंगे?
रह जायेंगी मीठी यादें
सपनों सी जहां होंगे

दिल पर खिंची लकीर को
मन करता मिटा दे मितवा
सावन-झूले-कजली को
मन करता भुला दें मितवा

दर्द का कैसा ये रिश्ता है
तुम भूले, न भुला पाये हम
मेरी निंदिया बसी परदेस
सोई खुशियां, न सो पाये हम

तुम सावन का मेला लगाना
अपनी यादों को मैं भेजूंगी
बिक जाएगी चीज पुरानी
मन की आँखों से मैं देखूंगी

जब भी आए ये मौसम सुहाना
खुश रहना, न कहना किसी को
मन चाहे हमें गुनगुनाना
रो लेना न सहना किसी को

बैरी हैं फुहारें ये
तन भींगे न कुम्हलाये
तेरी आँखों का सागर कहाँ
मन डूबे न उतराये

सावन में पड़ा झूला
सब झूल रहीं सखियां
बरस रहे बादल
तरस रहीं अंखियां

क्या दिन थे जब झूले में
मेरी लट उलझी रहती थी
तुम आके लट सुलझाते
सखियाँ हँस के कहती थी

कजली की रात न भूली
हम भूल गए बचपन को
क्या अब भी देस तुम्हारे
तरसे है कोई सावन को

कैसे खेलेंगे हम कजली
मेरा मन ही नहीं मेरे पास
मेरी आँखों को पढ़-पढ़ कर
हो जायेंगी सखियां उदास

गायें वो गीत सखी
साजन को, जो प्यारे थे
याद करते बहुत होंगे
जिन गीतों के मारे थे

सखियों से मिलेगे हम
झूलेंगे, चले जाएंगे
खिड़की में बैठे-बैठे
थक-हार के सोजाएंगे